जैन पुराणों
का
सांस्कृतिक अवदान

सम्पादक

प्रो० प्रवीणचन्द्र जैन डॉ० दरबारीलाल कोठिया

सह सम्पादक

डॉ० कस्तूरचन्द सुमन

प्रकाशक

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन पुराणों
का
सांस्कृतिक अवदान

सम्पादक

प्रो० प्रवीणचन्द्र जैन डॉ० दरबारीलाल कोठिया

सह सम्पादक

डॉ० कस्तूरचन्द सुमन

प्रकाशक

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

▫ प्रकाशक

जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
श्रीमहावीरजी (राज.) ३२२२२०

▫ प्राप्ति स्थान

१. **जैनविद्या संस्थान, श्रीमहावीरजी**
२. **अपभ्रंश साहित्य अकादमी**
दिगम्बर जैन नसिया भट्टारकजी
सवाई रामसिंह रोड, जयपुर–३०२००४

▫ प्रथम बार, १९९३

▫ मूल्य : ~~[illegible]~~ 120

▫ मुद्रक

वर्द्धमान मुद्रणालय,
१९, जवाहरनगर कॉलोनी, वाराणसी–१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रास्ताविक

'जैन पुराणों का सांस्कृतिक अवदान' पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

जैन पुराणों में त्रेसठ शलाका पुरुषों का जीवन-चरित चर्चित है। महापुराण में इन सभी त्रेसठ पुरुषों का वर्णन है। पद्मपुराण में बलभद्र पद्म (राम) और नारायण लक्ष्मण तथा प्रतिनारायण रावण का जीवन-चरित दर्शाया गया है। हरिवंशपुराण में नारायण कृष्ण तथा प्रतिनारायण जरासन्ध का जीवनवृत्त निबद्ध है। पाण्डवपुराण में प्राचीन दो प्रमुख राजवंशों के मध्य नारायण कृष्ण की भूमिका और वीरवर्द्धमानचरित में तीर्थंकर महावीर की जीवनी है। इन शलाका पुरुषों के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों की जैन पुराणों में अभिव्यक्ति की गई है।

प्रस्तुत पुस्तक में १. दार्शनिक एवं धार्मिक सामग्री, २. भौगोलिक सामग्री एवं ३. ऐतिहासिक सामग्री का संकलन किया गया है। इस प्रकार से यह पुस्तक जैन पुराणों की सांस्कृतिक सामग्री को समझने में सहायक सिद्ध होगी। इससे शोधकर्ताओं को समस्त सामग्री एक स्थान पर उपलब्ध हो सकेगी।

प्रो० प्रवीणचन्द्रजी जैन एवं डॉ० दरबारीलालजी कोठिया ने अथक परिश्रम कर इसका सम्पादन किया है, उनके हम आभारी हैं। जैनविद्या संस्थान में कार्यरत विद्वान् डॉ० कस्तूरचन्द 'सुमन' का सहयोग अत्यन्त प्रशंसनीय रहा। जैनविद्या संस्थान के पूर्व संयोजक डॉ० गोपीचन्दजी पाटनी एवं श्री ज्ञानचन्द्रजी खिन्दूका तथा वर्तमान संयोजक डॉ० कमलचन्दजी सोगाणी ने इस योजना को साकार करने में सदैव उत्साह दिखाया है अतः हम उनके आभारी हैं।

कपूरचन्द पाटनी
मंत्री
प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी

नरेशकुमार सेठी
अध्यक्ष
प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

जैन संस्कृति के सम्यक्ज्ञान के लिए जैन-पुराण साहित्य एक महत्त्वपूर्ण साधन है । जैन पुराणों में तिरेसठ शलाका पुरुषों के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्त किया गया है । संस्कृति के भौतिक और आध्यात्मिक पक्षों को उजागर करना जैन-पुराणों को अभीष्ट रहा है । भौतिक समृद्धि की सीमाओं को दर्शाते हुए आध्यात्मिक समृद्धि की उच्चता दर्शायी गई है । अतः मोक्ष परम पुरुषार्थ है । मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए जैन पुराणों की देन अनुपम है । प्रस्तुत पुस्तक 'जैन पुराणों का सांस्कृतिक अवदान' में दार्शनिक एवं धार्मिक सामग्री संकलित की गई है । संस्कृति का उत्कर्ष या अपकर्ष भौगोलिक स्थिति पर भी आश्रित होता है । अतः ऐसी सामग्री का संकलन भौगोलिक सामग्री के अन्तर्गत किया गया है । अपने अतीत के जाने बिना वर्तमान को दिशा प्राप्त नहीं होती है । अतः इस पुस्तक में ऐतिहासिक सामग्री भी प्रस्तुत की गई है ।

यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि उच्चतम जीवन मूल्यों की प्राप्ति में सहायक जैन-पुराणों के सांस्कृतिक अवदान के महत्त्व से जब तक समाज अपरिचित रहेगा नर से नारायण बनने के भाव उसमें कभी उत्पन्न नहीं हो सकेंगे । आशा है प्रस्तुत रचना के अध्ययन मनन और अनुशीलन से समाज लाभान्वित होगा ।

प्रसन्नता का विषय है कि जैन संस्कृति को जानने/समझने के लिए एक ऐसी पुस्तक के सृजन की आवश्यकता अनुभव की गई जिसमें जैन संस्कृति के दार्शनिक, धार्मिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक सभी पक्षों की आवश्यक जानकारी संकलित हो । संस्थान के इसी प्रयत्न का फल है प्रस्तुत पुस्तक–जैन पुराणों का सांस्कृतिक अवदान ।

यह पुस्तक 'जैन पुराण कोश' का एक अंश है । इसके सम्पादन में प्रो० प्रवीणचन्द्रजी जैन एवं डॉ० दरबारीलालजी कोठिया ने अथक परिश्रम किया है, उनके हम आभारी हैं । जैनविद्या संस्थान में कार्यरत विद्वान् डॉ० कस्तूरचन्द सुमन का सहयोग अत्यन्त प्रशंसनीय रहा है ।

डॉ० गोपीचन्द पाटनी	ज्ञानचन्द्र खिन्दूका	डॉ० कमलचन्द सोगाणी
पूर्व संयोजक	पूर्व संयोजक	संयोजक
जैनविद्या संस्थान समिति	जैनविद्या संस्थान समिति	जैनविद्या संस्थान समिति
श्रीमहावीरजी	श्रीमहावीरजी	श्रीमहावीरजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

जैन पुराण साहित्य जैन संस्कृति का दर्पण है। जैन आचार्य जिनसेन ने "पुरातनं पुराणं स्यात्" कहकर प्राचीन आख्यानों को पुराण माना है।[1] "इति इह आसीत्" यहाँ ऐसा हुआ पुराण में ऐसी कथाओं का निरूपण होने से उसे 'इतिहास, इतिवृत्त' और 'ऐतिह्य' भी कहा है।[2] एक परिभाषा में क्षेत्र, काल, तीर्थ, सत्पुरुष और उनकी चेष्टाएँ ऐसे पंचलक्षण-युक्त साहित्य को 'पुराण' बताया गया है। इस परिभाषा में ऊर्ध्व, मध्य और पाताल-रूप तीन लोकों को क्षेत्र; भूत, भविष्यत् और वर्तमान तीनों समयों को काल; मोक्ष प्राप्ति के उपायभूत सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र को तीर्थ तथा तीर्थसेवियों को सत्पुरुष और उनका न्यायोपेत् आचरण उनकी चेष्टाएँ मानी गयी हैं।[3] पुराण की परिभाषा और वर्ण्य-विषय पर एक साथ विचार करते हुए निष्कर्षरूप में पुराण में—लोक, देश, नगर, राज्य, तीर्थ, दान, तप, गति और फल इन आठ विषयों को पुराण का वर्ण्य-विषय बताया गया है। इनमें लोक का नाम, व्युत्पत्ति, दिशा तथा उसके अन्तरालों को, लम्बाई-चौड़ाई आदि को वर्णन लोकाख्यान, लोक के किसी एक भाग में स्थित देश, पहाड़, द्वीप तथा—समुद्रादि का सविस्तार वर्णन देशाख्यान, राजधानी का वर्णन पुराख्यान, नगरपति का वैभव, विलास और राज्य-विस्तार वर्णन राजाख्यान, जो संसार से पार करे वह तीर्थ ऐसे तीर्थंकर के चरित का वर्णन तीर्थाख्यान, अनुपम फल प्राप्ति में सहायक तप-दान का कथन तपोदान कथा, चारों गतियों की विभिन्न अवस्थाओं का निरूपण गत्याख्यान और पुण्य-पाप-फल का मोक्ष-प्राप्ति-पर्यन्त वर्णन करना फलाख्यान कहा है।[4]

पुराण को सत्कथा संज्ञा भी दी गयी है तथा ऐसी कथा के सात अंग बताये हैं। वे हैं—द्रव्य, क्षेत्र, तीर्थ, काल, भाव, महाफल और प्रकृत। इनमें द्रव्य छः हैं—जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म आकाश और काल। त्रिलोक-क्षेत्र है। तीर्थंकर का चरित तीर्थ, भूत-भविष्यत् और वर्तमान ये तीन काल, क्षायोपशमिक और क्षायिक ये दो भाव, तत्त्वज्ञान का होना फल और कथावस्तु प्रकृत अंग कहा है।[5] पुराण की पंचलक्षण परिभाषा में प्रयुक्त 'सत्पुरुष' शब्द यहाँ ध्यातव्य है। सत्पुरुषों को रत्नत्रय तीर्थ का सेवी बताये जाने से ज्ञात होता है कि पुराण में सत्पुरुष का अभिप्राय उन पुरुषों से है जिन पुरुषों के आश्रय से पुराणों की रचना हुई है। वे पुरुष तिरेसठ हैं। उनकी गणना निम्न प्रकार है—चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ बलभद्र, नौ नारायण और नौ प्रतिनारायण।[6] इन तिरेसठ सत्पुरुषों को 'शलाका पुरुष' कहा गया है।[7]

पुराणों में इन्हीं शलाका पुरुषों का जीवनचरित चर्चित है। महापुराण में इन सभी का उल्लेख है। पद्मपुराण में बलभद्र पद्म (राम) और नारायण लक्ष्मण तथा प्रतिनारायण रावण का जीवन चरित दर्शाया गया है। हरिवंशपुराण में नारायण कृष्ण तथा प्रतिनारायण जरासन्ध का जीवनवृत्त है। इसी प्रकार पाण्डवपुराण में प्राचीन दो प्रमुख राजवंशों के मध्य नारायण कृष्ण की भूमिका और वीरवर्द्धमानचरित में तीर्थंकर महावीर की जीवनी का उल्लेख है।

इन महापुरुषों के जीवनवृत्त में उनके पूर्वभवों का उल्लेख भी है, जिसमें उनकी धार्मिक/अधार्मिक, नैतिक/अनैतिक भावनाओं का प्रदर्शन और उन शुभाशुभ भावनाओं से उत्पन्न पुण्य-पाप-फल भी दर्शाया गया है। यह भी स्पष्ट बता दिया गया है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों में मोक्ष साध्य और धर्म, अर्थ तथा काम उसके साधन हैं।

पुरुष का परम पुरुषार्थ है साधनों के माध्यम से साध्य की ओर बढ़ना/अपने लक्ष्य को प्राप्त करना। इसके लिए आवश्यक है शारीरिक या मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण, दृढ़ीकरण या विकास अथवा उससे उत्पन्न अवस्था। इसी का नाम है 'संस्कृति'।[8] यह दो प्रकार की होती है—भौतिक संस्कृति और आध्यात्मिक संस्कृति। जैन पुराणों में दोनों संस्कृतियाँ समाहित हैं। इनमें आध्यात्मिक संस्कृति का उद्देश्य आत्मा को परमात्मा बनाना है। इसके लिए पुराणों में आत्मा का अस्तित्व सिद्ध किया गया है। मुनियों के उपदेश दर्शाए गये हैं। उपदेशों में धर्म-दर्शन और तत्त्वज्ञान की महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया गया है। शलाका पुरुषों और शलाकेतर पुण्य-पुरुषों के जीवन में घटित-घटनाओं को देकर बताया गया है कि जीव कर्माबद्ध होकर दुःख भोगता है। वह चाहे तो रत्नत्रयपूर्वक तप करके कर्मों को भस्म कर सकता है और पा सकता है—शिव-सुख। आराधना से अर्हन्त और सिद्ध होकर आराध्य बन सकता है। पतित से पावन बनने के लिए निर्ग्रन्थ होकर सहर्ष परीषह सहते हुए धर्म धारण करना होता है। महाव्रत, समिति, गुप्ति धारणकर आत्मध्यान करना होता है। इसके पश्चात् ही परम शुक्लध्यान से केवलज्ञान प्रकट होता है और मिलता है शाश्वत सुख।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन पुराणों में कथा के माध्यम से इन समस्त बातों का समावेश हुआ है। मोक्ष पुरुषार्थ की सिद्धि के लिए जैन-पुराणों को यह अनुपम देन है। इस सामग्री का प्रस्तुत ग्रन्थ में 'दार्शनिक एवं धार्मिक सामग्री' शीर्षक में संकलन किया गया है।

संस्कृति का उत्कर्ष या अपकर्ष भौगोलिक स्थिति पर आश्रित होता है। भौगोलिक ज्ञान के अभाव में संस्कृति की यथार्थ स्थिति को जानना असंभव है। जैन पुराणों में द्वीप, सागर, देश, नगर, ग्राम, नदी, पर्वत, वन, सरोवर के न केवल नामोल्लेख हैं अपितु उनका संक्षिप्त परिचयात्मक वर्णन भी उपलब्ध है।

भूकम्प, ज्वालामुखी, वर्षा या अन्य कारणों से भौगोलिक स्थिति परिवर्तित होती रही है। जहाँ अतीत में नगर थे वहाँ आज उनके खण्डहर भी नहीं हैं। अतः अतीत में कहाँ क्या था ? या वर्तमान में उनकी स्थिति कहाँ हो सकती है ? इस शोध-खोज के सन्दर्भ में जैन पुराणों का सांस्कृतिक अवदान सदैव स्मरणीय रहेगा। ऐसी सामग्री का संकलन भौगोलिक सामग्री शीर्षक में द्रष्टव्य है।

अपने अतीत को जानने, पहिचानने के लिए हमें इतिहास देखना होता है। हमारे पूर्वज कौन थे ? उन्होंने किस वंश को अलंकृत किया था। जीवन-मूल्यों की सुरक्षा के लिए वे क्या करते थे ? युद्ध के समय कौन अस्त्र-शस्त्र व्यवहृत होते थे ? कौन से वाद्य कब बजाये जाते थे ? पुरुष और स्त्रियाँ आभूषण किन अंगों में धारण करते तथा आभूषणों के क्या नाम थे ? विद्याओं का क्या स्थान था ? आदि प्रश्नों का समाधान आज पौराणिक संस्कृति से सरलतापूर्वक प्राप्त हो जाता है। वृषभदेव के १००८ नाम और धृतराष्ट्र के १०० पुत्रों के नाम भी पुराण ही अपने भीतर संजोए हुए हैं। इस प्रकार पुराणों के इस सांस्कृतिक अवदान के सन्दर्भ में ध्यातव्य है ऐतिहासिक सामग्री।

इस सम्पूर्ण विवेचना से ज्ञात होता है कि शरीर, मन और आत्मा इन तीनों को सुसंस्कृत-अलंकृत कर उच्चतम जीवन मूल्यों को प्राप्त करना सांस्कृतिक जीवन का लक्ष्य हैं और भोजन-पान, आहार-विहार, वस्त्राभूषण, क्रिया-कलाप आदि को सुसंस्कृत कर जीवनयापन करना सांस्कृतिक प्रेरणा का प्रतिफल है।[१] अतः कहा जा सकता है कि उच्चतम जीवन-मूल्यों की प्राप्ति में सहायक जैन पुराणों के सांस्कृतिक अवदान के महत्त्व से जब तक समाज अपरिचित रहेगा, नर से नारायण बनने के भाव उसमें कभी उत्पन्न नहीं होंगे। आशा है प्रस्तुत रचना के अध्ययन-मनन और अनुशीलन से समाज लाभान्वित होगा।

जैनविद्या संस्थान के पूर्व संयोजक डॉ० गोपीचन्दजी पाटनी, पूर्व संयोजक श्री ज्ञानचन्द्रजी खिन्दूका, संयोजक डॉ० कमलचन्दजी सोगाणी और साहित्यानुरागी डॉ० नवीनकुमारजी बज के सुझाव से इस सांस्कृतिक सामग्री को स्वतन्त्र पुस्तक का स्वरूप प्राप्त हो सका। अतः मैं इन सभी के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

प्रो० प्रवीणचन्द्र जैन
सम्पादक

---

१. आचार्य जिनसेन, महापुराण—भाग प्रथम, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, मार्च १९५१ ईसवी, पर्व १, श्लोक २१।
२. इतिहासं इतीष्टं तद् इतिहासीदिति श्रुतेः।
इतिवृत्तमथैतिह्यमाम्नायञ्चामनन्ति तत् ॥ वही, १–२५।
३. स च धर्मः पुराणार्थः पुराणं पञ्चधा विदुः।
क्षेत्रं कालश्च तीर्थञ्च सत्पुंसस्तद्विचेष्टितम् ॥
क्षेत्रं त्रैलोक्यविन्यासः कालस्त्रैकाल्यविस्तरः।
मुक्त्युपायो भवेत्तीर्थं पुरुषास्तन्निषेविणः ॥
न्याय्यमाचरितं तेषां चरितं दुरितच्छिदम्।
इति कृत्स्नः पुराणार्थः प्रश्ने संभावितस्त्वया ॥ वही, २/३८-४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. लोको देशः पुरं राज्यं तीर्थं दानतपोऽन्वयम् ।
पुराणेष्वष्टधाख्येयं गतयः फलमित्यपि ॥
लोकोद्देशनिरुक्त्यादिवर्णनं यत्विस्तरम् ।
लोकाख्यानं तदाम्नातं विशोधितदिगन्तरम् ॥
तदेकदेशदेशाद्रि द्वीपाब्ध्यादि प्रपञ्चनम् ।
देशाख्यानं तु तज्ज्ञेयं तज्ज्ञैः सज्ञानलोचनैः ॥
भरतादिषु वर्षेषु राजधानी प्ररूपणम् ।
पुराख्यानमितीष्टंतत् पुरातनविदांमते ॥
अमुष्मिन्नधिदेशोऽयं नगरञ्चेति तत्पतेः ।
आख्यान यत्तदाख्यातं राजाख्यानं जिनागमे ॥
संसाराब्धेरूपारस्य तरणे तीर्थमिष्यते ।
चेष्टितं जिननाथानां तस्योक्तिस्तीर्थसंकथा ॥
यादृशं स्यातपोदानमनीदृश गुणोदयम् ।
कथनं तादृशज्ञयास्य तपोदानकथोच्यते ॥
नरकादिप्रभेदेन चतस्त्रो गतयो मताः ।
तासां संकीर्त्तनंयद्धि गत्याख्यानं तदिष्यते ॥
पुण्यपापफलावाप्तिर्जन्तूनां यादृशी भवेत् ।
तदाख्यानं फलाख्यानं तच्च निःश्रेयसावधि ॥ वही, ४/३-११

५. द्रव्य क्षेत्र तथा तीर्थं कालो भावः फलं महत् ।
प्रकृतं चेत्यमून्याहुः सप्ताङ्गानि कथामुखे ॥
द्रव्यं जीवादि षोढा स्यात्क्षेत्रं त्रिभुवनास्थितिः ।
जिनेन्द्रचरितं तीर्थं कालस्त्रेधा प्रकीर्तितः ॥
प्रकृतं स्यात् कथावस्तु फलं तत्त्वावबोधनम् ।
भावः क्षयोपशमजस्तस्य स्यात्क्षायिकोऽथवा ॥
इत्यमुनि कथाङ्गानि यत्र सा सत्कथा मता ।
यथावसरमेवैषां प्रपञ्चो दर्शयिष्यते ॥ वही, १/१२२-१२५

६. पुराणं संगृहीष्यामि त्रिषष्टि पुरुषाश्रितम् ।
तीर्थेशामपि चक्रेशां हलिनामर्धचक्रिणाम् ।
त्रिषष्टि लक्षणं वक्ष्ये पुराणं तदद्विषामपि ॥ वही, १/१९-२०

७. चउवीसवारतिघणं तित्थयरा छत्तिखंडभरहवई ।
तुरिए काले होंतिहु तेवट्ठि सलागपुरिसा ते ॥ त्रिलोकसार, गाथा ८०३ ।
तित्थयर चक्कबलहरि पडिसत्तुणाम विस्सुदा कमसो ।
विउणियबारस बारस पयत्थणिधिरंध्रसंखाए ॥ ५११ ॥
तिलोयपण्णत्ति, जैनेन्द्र सिद्धान्तकोश, भाग ४, प्रकाशन ई० १९७३, पृ० ९ ।

८ संस्कृति के चार अध्याय, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, प्रथम संस्करण, प्रस्तावना, पं० जवाहरलाल नेहरु, पृष्ठ १ ।

९. आदिपुराण में प्रतिपादित भारत, पृ० १९२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट विषय-सूची

धार्मिक एवं दार्शनिक सामग्री

१. अनागत-पुण्यपुरुष, कुलकर, तीर्थङ्कर, अनागत तीर्थङ्कर-जीव, चक्रवर्ती, बलभद्र, नारायण, प्रतिनारायण, रुद्र १-२
२. अर्हन्त-मूलगुण ३
३. आस्रव-क्रियाएँ ४
४. इन्द्र ४
५. ऋद्धियाँ ४
६. कर्म-प्रकृतियाँ ५
७. गणधर ६
८. गर्भान्वय क्रियाएँ ९
९. गुणस्थान, मार्गणा, प्रमाद, भाषा, सत्य-भेद ९
१०. छप्पन देवियाँ ९
११. तप-भेद १०
१२. देव-भेद १०
१३. ध्यान-भेद ११
१४. परीषह और धर्मभेद ११
१५. पुद्गल, मंगल द्रव्य, नय और नरकभूमियाँ ११
१६. भरतेश द्वारा स्तुत वृषभदेव के १०८ नाम ११
१७. भावनाएँ १३
१८. मिथ्यादृष्टियाँ १३
१९. मुक्त जीव के गुण १४
२०. योग और प्रतिमा-भेद १४
२१. व्रत और अतिचार १४
२२. वर्तमान शलाका-पुरुष : तीर्थंकर, चक्रवर्ती, बलभद्र नारायण, प्रतिनारायण १५
२३. शलाकेतर पुण्यपुरुष : वर्तमान कुलकर, रुद्र, नारद १६
२४. श्रुत-भेद १७
२५. श्रोता-भेद एवं गुण १७
२६. संसारी जीव के गुण १८
२७. सम्यक्त्व-भेद एवं अंग १८
२८. सहस्रनाम १८
२९. साधु-मूलगुण २५
३०. सिद्ध-मूलगुण २५
३१. सूत्रपद २५

भौगोलिक सामग्री

१. कुलाचल २५
२. क्षेत्र २५
३. गजदन्त पर्वत २५
४. ग्राम २५
५. देश २६
६. द्वीप-सागर २८
७. नगर ३०
८. नदियाँ ३७
९. पर्वत ३९
१०. महा नदियाँ ४०
११. वक्षारगिरि ४०
१२. बत्तीस विदेह-देश और राजधानियाँ ४०
१३. वन ४१
१४. विभंग नदियाँ ४२
१५. सरोवर ४२

ऐतिहासिक सामग्री

१. अस्त्र-शस्त्र ४२
२. आभूषण ४३
३. इक्ष्वाकु-वंश ४३
४. कौरव-वंश ४४
५. गान्धर्व-भेद ४५
६. धृतराष्ट्र के सौ पुत्र ४६
७. राक्षस वंश ४७
८. वाद्य ४८
९. वानर-वंश ४८
१०. विद्या ४९
११. विद्याधर-जातियाँ ५१
१२. विद्याधर-वंश ५१
१३. समवसरण तृतीय कोट द्वार-नाम ५२
१४. सूर्यवंश ५२
१५. सोमवंश ५२
१६. हरिवंश ५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनागत पुण्य पुरुष

अनागत कुलकर

महापुराण के अनुसार

१.	कनक	मपु० ७६.४६३
२.	कनकप्रभ	,,
३.	कनकराज	मपु० ७६.४६४
४.	कनकध्वज	,,
५.	कनकपुंगव	,,
६.	नलिन	,,
७.	नलिनप्रभ	,,
८.	नलिनराज	मपु० ७६.४६५
९.	नलिनध्वज	,,
१०.	नलिनपुंगव	,,
११.	पद्म	,,
१२.	पद्मप्रभ	,,
१३.	पद्मराज	मपु० ७६.४६६
१४.	पद्मध्वज	,,
१५.	पद्मपुंगव	,,
१६.	महापद्म	,,

हरिवंशपुराण के अनुसार

१.	कनक	हपु० ६०.५५५
२.	कनकप्रभ	,,
३.	कनकराज	,,
४.	कनकध्वज	,,
५.	कनकपुंगव	,,
६.	नलिन	हपु० ६०.५५६
७.	नलिनप्रभ	,,
८.	नलिनराज	,,
९.	नलिनध्वज	,,
१०.	नलिनपुंगव	,,
११.	पद्मप्रभ	हपु० ६०.५५७
१२.	पद्मराज	,,
१३.	पद्मध्वज	,,
१४.	पद्मपुंगव	,,

अनागत तीर्थंकर

महापुराण के अनुसार

	नाम तीर्थंकर	सन्दर्भ
१.	महापद्म	मपु० ७६.४७७
२.	सुरदेव	,,
३.	सुपार्श्व	,,
४.	स्वयंप्रभ	मपु० ७६.४७८
५.	सर्वात्मभूत	,,
६.	देवपुत्र	,,
७.	कुलपुत्र	,,
८.	उदंक	,,
९.	प्रोष्ठिल	,,
१०.	जयकीर्त्ति	,,
११.	मुनिसुव्रत	मपु० ७६.४७९
१२.	अरनाथ	,,
१३.	अपाप	,,
१४.	निष्कषाय	,,
१५.	विपुल	,,

हरिवंशपुराण के अनुसार

	नाम तीर्थंकर	सन्दर्भ
१.	महापद्म	हपु० ६०.५५८
२.	सुरदेव	,,
३.	सुपार्श्व	,,
४.	स्वयंप्रभ	,,
५.	सर्वात्मभूत	हपु० ६०.५५९
६.	देवदेव	,,
७.	प्रभोदय	,,
८.	उदंक	,,
९.	प्रश्नकीर्ति	,,
१०.	जयकीर्त्ति	,,
११.	सुव्रत	,,
१२.	अर	हपु० ६०.५६०
१३.	पुण्यमूर्ति	,,
१४.	निष्कषाय	,,
१५.	विपुल	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६.	निर्मल	,,	१६.	निर्मल	,,
१७.	चित्रगुप्त	,,	१७.	चित्रगुप्त	,,
१८.	समाधिगुप्त	मपु० ७६.४८०	१८.	समाधिगुप्त	हपु० ६०.५६१
१९.	स्वयंभू	,,	१९.	स्वयंभू	,,
२०.	अनिवर्ती	,,	२०.	अनिवर्तक	,,
२१.	विजय	,,	२१.	जय	,,
२२.	विमल	,,	२२.	विमल	,,
२३.	देवपाल	,,	२३.	दिव्यपाद	,,
२४.	अनन्तवीर्य	मपु० ७६.४८१	२४.	अनन्तवीर्य	हपु० ६०.५६२

अनागत-तीर्थंकर-होनेवाले जीव

१.	श्रेणिक	मपु० ७६.४७१	१३.	प्रेमक	मपु० ७६.४७३
२.	सुपार्श्व	,,	१४.	अतोरण	,,
३.	उदंक	,,	१५.	रैवत	,,
४.	प्रोष्ठिल	मपु० ७६.४७२	१६.	वासुदेव	,,
५.	कटप्रू	,,	१७.	बलदेव	,,
६.	क्षत्रिय	,,	१८.	भगलि	मपु० ७६.४७४
७.	श्रेष्ठी	,,	१९.	वागलि	,,
८.	शंख	,,	२०.	द्वैपायन	,,
९.	नन्दन	,,	२१.	कनकपाद	,,
१०.	सुनन्द	,,	२२.	नारद	,,
११.	शशांक	मपु० ७६.४७३	२३.	चारुपाद	,,
१२.	सेवक	,,	२४.	सात्यकिपुत्र	,,

अनागत चक्रवर्ती

महापुराण के अनुसार

१.	भरत	मपु० ७६.४८२
२.	दीर्घदन्त	,,
३.	मुक्तदन्त	,,
४.	गूढ़दन्त	,,
५.	श्रीषेण	,,
६.	श्रीभूति	मपु० ७६.४८३
७.	श्रीकान्त	,,
८.	पद्म	,,
९.	महापद्म	,,
१०.	विचित्रवाहन	,,
११.	विमलवाहन	मपु० ७६.४८४
१२.	अरिष्टसेन	,,

हरिवंशपुराण के अनुसार

१.	भरत	हपु० ६०.५६३
२.	दीर्घदन्त	,,
३.	जन्मदत्त	,,
४.	गूढदन्त	,,
५.	श्रीषेण	,,
६.	श्रीभूति	हपु० ६०.५६४
७.	श्रीकान्त	,,
८.	पद्म	,,
९.	महापद्म	,,
१०.	चित्रवाहन	,,
११.	विमलवाहन	हपु० ६०.५६५
१२.	अरिष्टसेन	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनागत बलभद्र

महापुराण के अनुसार	हरिवंशपुराण के अनुसार
१. चन्द्र	१. चन्द्र
२. महाचन्द्र	२. महाचन्द्र
३. चक्रधर	३. चन्द्रधर
४. हरिचन्द	४. सिंहचन्द्र
५. सिंहचन्द्र	५. हरिचन्द्र
६. वरचन्द्र	६. श्रीचन्द्र
७. पूर्णचन्द्र	७. पूर्णचन्द्र
८. सुचन्द्र	८. सुचन्द्र
९. श्रीचन्द्र	९. बालचन्द्र
मपु० ७६.४८५-४८६	हपु० ६०.५६८-५६९

अनागत नारायण

महापुराण के अनुसार	हरिवंशपुराण के अनुसार
१. नन्दि मपु० ७६.४८७	१. नन्दी हपु० ६०.५६६
२. नन्दिमित्र ,,	२. नन्दिमित्र ,,
३. नन्दिषेण ,,	३. नन्दिन ,,
४. नन्दिभूति मपु० ७६.४८८	४. नन्दिभूतिक ,,
५. बल ,,	५. महाबल ,,
६. महाबल ,,	६. अतिबल ,,
७. अतिबल ,,	७. बलभद्र ,,
८. त्रिपृष्ठ मपु० ७६.४८९	८. द्विपृष्ठ हपु० ६०.५६७
९. द्विपृष्ठ ,,	९. त्रिपृष्ठ ,,

अनागत प्रतिनारायण

१. श्रीकण्ठ	४. अश्वकण्ठ	७. अश्वग्रीव
२. हरिकण्ठ	५. सुकण्ठ	८. हयग्रीव
३. नीलकण्ठ	६. शिखिकण्ठ	९. मयूरग्रीव

हपु ६०.५६९-५७०

अनागत रुद्र

१. प्रमद	४. प्रकाम	७. हर	१०. काम
२. सम्मद	५. कामद	८. मनोभव	११. अंगज
३. हर्ष	६. भव	९. मार	

हपु० ६०.५७१-५७२

अर्हन्त-गुण

अनन्त चतुष्टय—	४
प्रातिहार्य—	८
अतिशय—	३४
योग =	४६

मपु० ४२.४४-४६

अनन्त-चतुष्टय

१. अनन्त दर्शन २. अनन्त ज्ञान ३. अनन्त सुख ४. अनन्त वीर्य

मपु० ४२.४४

अष्ट प्रातिहार्य

१. अशोक वृक्ष का होना।	२. देवकृत पुष्प-वृष्टि।
३. देवों द्वारा चौंसठ चमर ढुराया जाना।	४. प्रभामण्डल का होना।
५. दुन्दुभि ध्वनि का होना।	६. सिर पर त्रिछत्र होना।
७. सिंहासन का रहना।	८. दिव्यध्वनि का होना।

हपु० ३.३१-३८

अतिशय

जन्मकालीन १० अतिशय

१. मल-मूत्र रहित शरीर का होना।
२. स्वेद रहित शरीर का होना।
३. श्वेत रुधिर का होना।
४. वज्रवृषभनाराचसंहनन का होना।
५. समचतुरस्रसंस्थान का होना।
६. अत्यन्त सुन्दर रूप।
७. शरीर का सुगन्धित होना।
८. शरीर का १००८ लक्षणों से युक्त होना।
९. अनन्तवीर्य का होना।
१०. हितमितप्रिय वचन बोलना।

हपु० ३.१०-११

केवलज्ञानकालीन १० अतिशय

१. नेत्रों की पलकें नहीं झपकना।
२. नख और केशों का नहीं बढ़ना।
३. कवलाहार का अभाव होना।
४. वृद्धावस्था का अभाव।
५. शरीर की छाया का अभाव।
६. चतुर्मुख दिखाई देना।
७. दो सौ योजन तक सुभिक्ष रहना।
८. उपसर्ग का अभाव।
९. प्राणि-पीड़ा का अभाव।
१०. आकाशगमन।
११. सर्व विद्याओं का स्वामीपना।

नोट—हरिवंशपुराणकार ने केवलज्ञान के समय प्रकट होनेवाले दस अतिशयों के स्थान में ग्यारह अतिशय बताये हैं। उन्होंने 'वृद्धावस्था का अभाव' नामक अतिशय अधिक बताया है। इसी प्रकार सुभिक्षिता में सौ योजन के स्थान में दो सौ योजन का उल्लेख किया है।

हपु० ३.१२-१५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवकृत चौदह अतिशय

१. अर्द्धमागधी भाषा का होना।
२. समस्त जीवों में पारस्परिक मित्रता का होना।
३. सभी ऋतुओं के फल-फूलों का एक साथ फलना-फूलना।
४. पृथिवी का दर्पण के समान निर्मल होना।
५. मन्द-सुगन्धित वायु का बहना।
६. सभी जीवों का आनन्दित होना।
७. पवनकुमार देवों द्वारा एक योजन भूमि का कीट रहित एवं निष्कंटक किया जाना।
८. स्तनितकुमार देवों का सुगन्धित जलवृष्टि-करना।
९. चलते समय चरणतले कमल का होना।
१०. आकाश का निर्मल होना।
११. दिशाओं का निर्मल होना।
१२. आकाश में जय-जय ध्वनि होना।
१३. धर्मचक्र का आगे रहना।
१४. पृथ्वी का धन-धान्यादि से सुशोभित होना।

हरिवंशपुराणकार ने अर्हन्त को ध्वजादि अष्ट मंगल द्रव्यों से युक्त तो बताया है किन्तु देवकृत चौदह अतिशियों में इसे सम्मिलित नहीं किया है।

हपु० ३.१६-३०

आस्रवकारी क्रियाएँ

साम्परायिक आस्रवकारी २५ क्रियाएँ

१. सम्यक्त्व क्रिया २. मिथ्यात्व क्रिया ३. प्रयोग किया
४. समादान क्रिया ५. ईर्यापथ क्रिया ६. प्रादोषिकी क्रिया
७. कायिकी क्रिया ८. क्रियाधिकरणी क्रिया ९. पारितापिकी क्रिया
१०. प्राणातिपातिकीक्रिया ११. दर्शन क्रिया १२. स्पर्शन क्रिया
१३. प्रत्यायिकी क्रिया १४. समन्तानुपातिनी क्रिया १५. अनाभोग क्रिया
१६. स्वहस्त क्रिया १७. निसर्ग क्रिया १८. विदारण क्रिया
१९. आज्ञाव्यापादिकी क्रिया २०. अनाकांक्षा क्रिया २१. प्रारम्भ क्रिया
२२. पारिग्रहिकी क्रिया २३. माया क्रिया २४. मिथ्यादर्शन क्रिया
२५. अप्रत्यख्यान क्रिया हपु० ५८.५८-८२

पापास्रावकारी १०८ क्रियाएँ

समरम्भ, समारम्भ और आरम्भ ये तीनों कृत, कारित और अनुमोदना पूर्वक होने से प्रत्येक के ३-३ भेद होते हैं। इस प्रकार तीनों के कुल ९ भेद हो जाते हैं। ये भेद क्रोध, मान, माया और लोभ इन चारों कषायों के योग से उत्पन्न होने के कारण प्रत्येक के चार-चार भेद हो जाते हैं। इस प्रकार समरम्भ, समारम्भ और आरम्भ तीनों के पृथक्-पृथक् बारह-बारह भेद करने के पश्चात् चूँकि ये क्रियाएँ मन, वचन और काय से सम्पन्न होती है। अतः प्रत्येक के बारह भेदों को इन तीन से गुणित करने पर प्रत्येक के छत्तीस भेद और तीनों के कुल एक सौ आठ भेद होते हैं।

जीव प्रतिदिन ऐसे एक सौ आठ प्रकार से आस्रव करता है।

हपु० ५८.८५

इन्द्र

भवनवासी देवों के इन्द्र

१. चमर २. वैरोचन ३. भूतेश ४. धरणानन्द
५. वेणुदेव ६. वेणुधारी ७. पूर्ण ८. अवशिष्ट
९. जलप्रभ १०. जलकान्ति ११. हरिषेण १२. हरिकान्त
१३. अग्निशिखि १४. अग्निवाहन १५. अमितगति १६. अमितवाहन
१७. घोष १८. महाघोष १९. वेलांजन २०. प्रभंजन

प्रतीन्द्र

भवनवासी देवों के इन्हीं नामों के बीस प्रतीन्द्र होते हैं।

वीवच० १४.५४-५८

व्यन्तर देवों के इन्द्र

१. किन्नर २. किम्पुरुष ३. सत्पुरुष ४. महापुरुष
५. अतिकाय ६. महाकाय ७. गीतरति ८. रतिकीर्त्ति
९. मणिभद्र १०. पूर्णभद्र ११. भीम १२. महाभीम
१३. सुरूप १४. प्रतिरूप १५. काल १६. महाकाल

प्रतीन्द्र

व्यन्तर देवों के सोलह इन्हीं नामों के प्रतीन्द्र होते हैं।

वीवच० १४.५९-६३

कल्पवासी देवों के इन्द्र

१. सौधर्मेन्द्र २. ऐशानेन्द्र ३. सनत्कुमारेन्द्र ४. माहेन्द्र
५. ब्रह्मेन्द्र ६. लान्तवेन्द्र ७. शुक्रेन्द्र ८. शतारेन्द्र
९. आनतेन्द्र १०. प्राणतेन्द्र ११. आरणेन्द्र १२. अच्युतेन्द्र

प्रतीन्द्र

कल्पवासी देवों के इन्हीं नामों के बारह प्रतीन्द्र भी होते हैं।

वीवच० १४.२५, ४०-४८

ज्योतिष देवों के इन्द्र

१. सूर्य २. चन्द्र

वीवच० १४.५२-५३

इतर दो इन्द्र

१. राजा २. सिंह

कुल इन्द्र १०० होते हैं।

ऋद्धियाँ

क्र० सं०	नाम ऋद्धि	सन्दर्भ
१.	अक्षीणर्द्धि	मपु० ११.८८
२.	अक्षीण-पुष्पर्द्धि	मपु० ६.१४९
३.	अक्षीण-महाशन	मपु० ३६.१५५
४.	अक्षीण संवास	मपु० ३६.१५५
५.	अमृतस्रावित्व	मपु० २.७२
६.	अम्बरचारण	मपु० २.७३
७.	आमर्ष	मपु० २.७१
८.	उग्र	मपु० ११.८२
९.	औषध-ऋद्धि	मपु० ३६.१५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०.	कायबल	मपु० २.७२
११.	कोष्ठबुद्धि	मपु० १४.१८२
१२.	क्षीरस्रावि‌णी	मपु० २.७२
१३.	क्ष्वेल	मपु० २.७१
१४.	घृतस्रावी	मपु० २.१२
१५.	घोरर्द्धि	मपु० ११.८२
१६.	जंघाचारण	मपु० २.७३
१७.	जलचारण	मपु० २.७३
१८.	जल्ल	मपु० २.७१
१९.	तन्तुचारण	मपु० २.७३
२०.	तप	मपु० ३६.१३९-१४१
२१.	तप्त	मपु० ११.८२
२२.	तप्ततप्त	मपु० ३६.१५०
२३.	दीप्त	मपु० ११.८२
२४.	पदानुसारिणी	मपु० २.६७
२५.	पुष्पचारण	मपु० २.७३
२६.	प्राकाम्य	मपु० ३८.१९३
२७,	प्राप्ति	मपु० ३८.१९३
२८.	फलचारण	मपु० २.७३
२९.	बलर्द्धि	मपु० ११.८७
३०.	बीजबुद्धि	मपु० ११.८०
३१.	मधुस्रावि‌णी	मपु० २.७२
३२.	रसर्द्धि	मपु० ३६.१५४
३३.	वाग्विषुट	मपु० २.७१
३४.	विक्रियर्द्धि	मपु० २.७१
३५.	श्रेणीचारण	मपु० २.७३
३६.	संभिन्नश्रोत्रबुद्धि	मपु० २.६७, ११.८०
३७.	सर्पिरास्रावि‌णी	मपु० २.७२
३८.	सर्वौषधि	मपु० २.७१

कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ

१. ज्ञानावरण—५

१. मतिज्ञानावरण २. श्रुतज्ञानावरण ३. अवधिज्ञानावरण
४. मनःपर्ययज्ञानावरण ५. केवलज्ञानावरण

हपु० ५८.२२३

२. दर्शनावरण—९

१. चक्षुर्दर्शनावरण २. अचक्षुर्दर्शनावरण ३. अवधिदर्शनावरण
४. केवलदर्शनावरण ५. निद्रा ६. निद्रानिद्रा
७. प्रचला ८. प्रचलाप्रचला ९. स्त्यानगृद्धि

हपु० ५८.२२६-२२९

३. वेदनीय—२

१. साता वेदनीय २. असातावेदनीय

हपु० ५८.२३०

४. मोहनीय—२८

दर्शन मोहनीप—३ १. सम्यक्त्व २. मिथ्यात्व
३. सम्यक्मिथ्यात्व

हपु० ५८.२३१

चारित्रमोहनीय—२५

१. नो कषाय—हास्य, रति, अरति, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेद। हपु० ५८.२३४-२३७

२. कषाय—अनन्तानुबन्धी—क्रोध, मान, माया, लोभ
अप्रत्याख्यानावरण संबंधी—क्रोध, मान, माया, लोभ
प्रत्याख्यानावरण संबंधी—क्रोध, मान, माया, लोभ
संज्वलन-संबंधी—क्रोध, मान, माया, लोभ। हपु० ५८.२३८-२४१

५. आयु—४ देव आयु, मनुष्य आयु, तिर्यंच आयु और नरकायु। हपु० ५८.२४२

६. नाम कर्म—९३ गति नाम कर्म ४—नरक, तिर्यंच, मनुष्य और देवगति।

जाति नाम कर्म : ५—एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक।
शरीर नाम कर्म : ५—औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कार्माण।
अंगोपांग नाम कर्म : ३—औदारिक, वैक्रियक, आहारक।
निर्माण नाम कर्म : २—स्थान निर्माण, प्रमाण निर्माण।
बन्धन नाम कर्म : ५—औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कार्माण।
संघात नाम कर्म : ५—औदारिक, वैक्रियक, आहारक, तैजस और कर्माण।
संस्थान नाम कर्म : ६—समचतुस्र, न्यग्रोधपरिमण्डल, स्वाति, कुब्जक, वामन, हुण्डक।
संहनन नाम कर्म : ६—वज्रर्षभनाराच, वज्रनाराच, नाराच, अर्धनाराच, कीलक, असंप्राप्तसृपाटिका।
स्पर्श नाम कर्म : ८—कड़ा, कोमल, गुरु, लघु, स्निग्ध, रुक्ष, शीत, उष्ण।
रस नाम कर्म : ५—कटुक, तिक्त, कषायला, आम्ल, मधुर।
गन्ध नाम कर्म : २—सुगन्ध, दुर्गन्ध।
वर्ण नाम कर्म : ५—कृष्ण, नील, रक्त, पीत और शुक्ल।
आनुपूर्व्य नाम कर्म : ४—देव, मनुष्य, तिर्यंच, नारक।
अगुरुलघु—१, उपघात—१, परघात—१, आताप—१,
उद्योत—१, उच्छ्वास—१, विहायोगति—१,
प्रत्येक शरीर१, साधारण—१, त्रस—१, स्थावर—१,
सुभग—१, दुर्भग—१, सुस्वर—१, दुःस्वर—१,
शुभ—१, अशुभ—१, सूक्ष्म—१, बादर—१,
पर्याप्ति—१, अपर्याप्ति—१, स्थिर—१, आदेय—१,
अनादेय—१, यशःकीर्ति—१, अपयशस्कीर्ति—१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थंकर—१,
—
९३
—

७. गोत्र—
२—उच्च और नीच। हपु० ५८.२७९

८. अन्तरायाय—
५—दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय, वीर्यान्तराय। हपु० ५८.२८०-२८२

हपु० ५८.२४३-१७८

वृषभदेव के क्रमानुसार चौरासी गणधर

महापुराण के अनुसार			हरिवंशपुराण के अनुसार		
क्र०	नाम गणधर	सन्दर्भ	क्र०	नाम गणधर	सन्दर्भ
१.	वृषभसेन	मपु० ४३.५४	१.	वृषभसेन	हपु० १२.५५
२.	कुम्भसेन	,,	२.	कुम्भ	,,
३.	दृढ़रथ	,,	३.	दृढ़रथ	,,
४.	शतधनु	,,	४.	शत्रुदमन	,,
५.	देवशर्मा	,,	५.	देवशर्मा	,,
६.	देवभाक्	,,	६.	धनदेव	हपु० १२.५६
७.	नन्दन	मपु० ४३.५५	७.	नन्दन	,,
८.	सोमदत्त	,,	८.	सोमदत्त	,,
९.	सूरदत्त	,,	९.	सुरदत्त	,,
१०.	वायुशर्मा	,,	१०.	वायुशर्मा	हपु० १२.५७
११.	यशोबाहु	,,	११.	सुबाहु	,,
१२.	देवाग्नि	,,	१२.	देवाग्नि	,,
१३.	अग्निदेव	,,	१३.	अग्निदेव	,,
१४.	अग्निगुप्त	मपु० ४३.५६	१४.	अग्निभूति	,,
१५.	मित्राग्नि	,,	१५.	तेजस्वी	हपु० १२.५८
१६.	हलभृत्	,,	१६.	अग्निमित्र	,,
१७.	महीधर	,,	१७.	हलधर	,,
१८.	महेन्द्र	,,	१८.	महीधर	,,
१९.	वसुदेव	,,	१९.	माहेन्द्र	,,
२०.	वसुन्धर	,,	२०.	वसुदेव	,,
२१.	अचल	मपु० ४३.५७	२१.	वसुन्धर	,,
२२.	मेरु	,,	२२.	अचल	हपु० १२.५९
२३.	मेरुधन	,,	२३.	मेरु	,,
२४.	मेरुभूति	,,	२४.	भूति	,,
२५.	सर्वयश	,,	२५.	सर्वसह	,,
२६.	सर्वयज्ञ	,,	२६.	यज्ञ	,,
२७.	सर्वगुप्त	मपु० ४३.५८	२७.	सर्वगुप्त	,,
२८.	सर्वप्रिय	,,	२८.	सर्वप्रिय	हपु० १२.६०
२९.	सर्वदेव	,,	२९.	सर्वदेव	,,
३०.	सर्वविजय	,,	३०.	विजय	,,
३१.	विजयगुप्त	,,	३१.	विजयगुप्त	,,
३२.	विजयमित्र	मपु० ४३.५९	३२.	विजयमित्र	,,
३३.	विजयिल	,,	३३.	विजयश्री	हपु० १२.६१
३४.	अपराजित	,,	३४.	पराख्य	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५.	वसुमित्र	,,	३५.	अपराजित	,,
३६.	विश्वसेन	,,	३६.	वसुमित्र	,,
३७.	साधुसेन	,,	३७.	वसुसेन	,,
३८.	सत्यदेव	मपु० ४३.६०	३८.	साधुसेन	,,
३९.	देवसत्य	,,	३९.	सत्यदेव	हपु० १२.६२
४०.	सत्यगुप्त	,,	४०.	सत्यवेद	,,
४१.	सत्यमित्र	,,	४१.	सर्वगुप्त	,,
४२.	निर्मल	,,	४२.	मित्र	,,
४३.	विनीत	मपु० ४३.६१	४३.	सत्यवान्	,,
४४.	सम्बर	,,	४४.	विनीत	हपु० १२.६३
४५.	मुनिगुप्त	,,	४५.	संवर	,,
४६.	मुनिदत्त	,,	४६.	ऋषिगुप्त	,,
४७.	मुनियज्ञ	,,	४७.	ऋषिदत्त	,,
४८.	मुनिदेव	,,	४८.	यज्ञदेव	,,
४९.	गुप्तयज्ञ	,,	४९.	यज्ञगुप्त	,,
५०.	मित्रयज्ञ	मपु० ४३.६२	५०.	यज्ञमित्र	हपु० १२.६४
५१.	स्वयम्भू	,,	५१.	यज्ञदत्त	,,
५२.	भगदेव	,,	५२.	स्वायंभुव	,,
५३.	भगदत्त	,,	५३.	भागदत्त	,,
५४.	भगफल्गु	,,	५४.	भागफल्गु	,,
५५.	गुप्तफल्गु	,,	५५.	गुप्त	,,
५६.	मित्रफल्गु	,,	५६.	गुप्तफल्गु	,,
५७.	प्रजापति	मपु० ४३.१३	५७.	मित्रफल्गु	हपु० १२.६५
५८.	सर्वसन्ध	,,	५८.	प्रजापति	,,
५९.	वरुण	,,	५९.	सत्ययश	,,
६०.	धनपालक	,,	६०.	वरुण	,,
६१.	मघवान्	,,	६१.	धनवाहिक	,,
६२.	तेजोराशि	,,	६२.	महेन्द्रदत्त	हपु० १२.६६
६३.	महावीर	,,	६३.	तेजोराशि	,,
६४.	महारथ	,,	६४.	महारथ	,,
६५.	विशालाक्ष	मपु० ४३.६४	६५.	विजयश्रुति	,,
६६.	महाबाल	,,	६६.	महाबल	,,
६७.	शुचिशाल	,,	६७.	सुविशाल	हपु० १२.६७
६८.	वज्र	,,	६८.	वज्र	,,
६९.	वज्रसार	,,	६९.	वैर	,,
७०.	चन्द्रचूल	,,	७०.	चन्द्रचूड	,,
७१.	जय	मपु० ४३.६५	७१.	मेघेश्वर	,,
७२.	महारस	,,	७२.	कच्छ	हपु० १२.६८
७३.	कच्छ	,,	७३.	महाकच्छ	,,
७४.	महाकच्छ	,,	७४.	सुकच्छ	,,
७५.	नमि	,,	७५.	अतिबल	,,
७६.	विनमि	,,	७६.	भद्रावलि	,,
७७.	बल	,,	७७.	नमि	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र०	नाम गणधर	सन्दर्भ	क्र०	नाम गणधर	सन्दर्भ
७८.	अतिबल	,,	७८.	विनमि	,,
७९.	भद्रबल	मपु० ४३.६६	७९.	भद्रबल	हपु० १२.६९
८०.	नन्दी	,,	८०.	नन्दी	,,
८१.	महाभागी	,,	८१.	महानुभाव	,,
८२.	नन्दिमित्र	,,	८२.	नन्दिमित्र	,,
८३.	कामदेव	,,	८३.	कामदेव	हपु० १२.७०
८४.	अनुपम	,,	८४.	अनुपम	,,

शेष तीर्थंकरों के प्रमुख गणधर

महापुराण के अनुसार

हरिवंशपुराण के अनुसार

क्र०	नाम तीर्थङ्कर	गणधर नाम व संख्या	सन्दर्भ	गणधर नाम एवं संख्या	सन्दर्भ
१.	अजितनाथ	सिंहसेन आदि नब्बे गणधर,	मपु० ४८.४३	सिंहसेन आदि नब्बे गणधर,	हपु० ६०.३४६
२.	संभवनाथ	चारुषेण आदि १०५ गणधर	मपु० ४९.४३	चारुदत्त आदि १०५ गणधर	हपु० ६०.३४६
३.	अभिनन्दननाथ	वज्रनाभि आदि १०३	मपु० ५०.५७	वज्र आदि १०३	मपु० ६०.३४७
४.	सुमतिनाथ	चामर आदि ११६	मपु० ५१.७६	चमर आदि ११६	हपु० ६०.३४७
५.	पद्मप्रभ	वज्रचामर आदि ११०	मपु० ५२.५८	वज्रचमर आदि १११	हपु० ६०.३४७
६.	सुपार्श्वनाथ	बल आदि ९५	मपु० ५३.४६	बलि आदि ९५	हपु० ६०.३४७
७.	चन्द्रप्रभ	दत्त आदि ९३	मपु० ५४.२४४	दत्तक आदि ९३	हपु० ६०.३४७
८.	पुष्पदन्त	विदर्भ आदि ८८	मपु० ५५.५२	वैदर्भ आदि ८८	हपु० ६०.३४७
९.	शीतलनाथ	अनगार आदि ८१	मपु० ५६.५६	अनगार आदि ८१	हपु० ६०.३४७
१०.	श्रेयांसनाथ	कुन्थु आदि ७७	मपु० ५७.५४	कुन्थु आदि ७७	हपु० ६०.३४७
११.	वासुपूज्य	धर्म आदि ६६	मपु० ५८.४४	सुधर्मादि ६६	हमु० ६०.३४७
१२.	विमलनाथ	मन्दर आदि ५५	मपु० ५९.४८	मन्दरार्य आदि ५५	हपु० ६०.३४८
१३.	अनन्तनाथ	जय आदि ५०	मपु० ६०.३७	जय आदि ५०	हपु० ६०.३४८
१४.	धर्मनाथ	अरिष्टसेन आदि ४३	मपु० ६१.४४	अरिष्टसेन आदि ४३	हपु० ६०.३४८
१५.	शान्तिनाथ	चक्रायुध आदि ३६	मपु० ६३.४८९	चक्रायुध आदि ३६	हपु० ६०.३४८
१६.	कुन्थुनाथ	स्वयंभू आदि ३५	मपु० ६४.४४	स्वयंभू आदि ३५	हपु० ६०.३४८
१७.	अरनाथ	कुम्भार्य आदि ३०	मपु० ६५.३९	कुन्थु आदि ३०	हपु० ६०.३४८
१८.	मल्लिनाथ	विशाख आदि २८	यपु० ६६.५४	विशाख आदि २८	हपु० ६०.३४८
१९.	मुनिसुव्रत	मल्लि आदि १८	मपु० ६७.४९	मल्लि आदि १८	हपु० ६०.३४८
२०.	नमिनाथ	सुप्रभार्यादि १७	मपु० ६९.६०	सोमक आदि १७	हपु० ६०.३४८
२१.	नेमिनाथ	वरदत्तादि ११	मपु० ७१.१८२	वरदत्तादि ११	हपु० ६०.३४९
२२.	पार्श्वनाथ	स्वयंभू आदि १०	मपु० ७३.१४९	स्वयंभू आदि १०	हपु० ६०.३४९

महावीर के गणधर

महापुराण के अनुसार

१. इन्द्रभूति २. वायुभूति ३. अग्निभूति ४. सुधर्म
५. मौर्य ६. मौन्द्रय ७. पुत्र ८. मैत्रेय
९. अकम्पन १०. अन्धवेल ११. प्रभास

मपु० ७४.३५६,३७४

हरिवंशपुराण के अनुसार

१. इन्द्रभूति २. अग्निभूति ३. वायुभूति ४. शुचिदत्त
५. सुधर्म ६. माण्डव्य ७. मौर्यपुत्र ८. अकम्पन
९. अचल १०. मेदार्य ११. प्रभास

हपु० ३.४१-४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गर्भान्वय क्रियाएँ

१. आधान	२. प्रीति	३. सुप्रीति	४. धृति
५. मोद	६. प्रियोद्भव	७. नामकर्म	८. बहिर्यान
९. निषद्या	१०. प्राशन	११. केशवाप	१२. लिपि
१३. संख्यानसंग्रह	१४. उपनीति	१५. व्रतचर्या	१६. व्रतावतरण
१७. विवाह	१८. वर्णलाभ	१९. कुलचर्या	२०. गृहीशिता
२१. प्रशान्ति	२२. गृहत्याग	२३. दीक्षाद्य	२४. जिनरूपता
२५. मौनाध्ययनवृत्तत्व	२६. तीर्थकृत्भावना	२७. गुरुस्थानाभ्युपगम	
२८. गणोपग्रह	२९. स्वगुरुस्थानसंक्रान्ति	३०. निःसंगत्वात्मभावना	
३१. योगनिर्वाण संप्राप्ति	३२. योगनिर्वाणसाधन	३३. इन्द्रोपपाद	
३४. इन्द्राभिषेक	३५. विधिदान	३६. सुखोदय	
३७. इन्द्रत्याग	३८. इन्द्रावतार	३९. हिरण्योत्कृष्टजन्मता	
४०. मन्दरेन्द्राभिषेक	४१. गुरुपूजोपलम्भन	४२. यौवराज्य	
४३. स्वराज्यप्राप्ति	४४. चक्रलाभ	४५. दिग्विजय	
४६. चक्राभिषेक	४७. साम्राज्य	४८. निष्क्रान्ति	
४९. योगसन्महं	५०. आर्हन्त्य	५१. तद्विहार	
५२. योगत्याग	५३. अग्रनिर्वृत्ति		

मपु० ३८.५५-६३

गुणस्थान, मार्गणा, प्रमाद, भाषा और सत्य भेद

गुणस्थान-सूची

१. मिथ्यादृष्टि	२. सासादन	३. सम्यग्मिथ्यात्व	४. असंयत सम्यग्दृष्टि	
५. संयतासंयत	६. प्रमत्तसंयत	७. अप्रमत्तसंयत	८. अपूर्वकरण	
९. अनिवृत्तिकरण	१०. सूक्ष्मसाम्पराय	११. उपशान्तकषाय		
१२. क्षीणमोह	१३ सयोगकेवली	१४. अयोगकेवली		

हपु०, ३.८०-८३

मार्गणा-सूची

१. गति	२. इन्द्रिय	३. काय	४. योग	५. वेद
६. कषाय	७. ज्ञान	८. संयम	९. सम्यक्त्व	१०. लेश्या
११. दर्शन	१२. संज्ञित्व	१३. भव्यत्व	१४. आहार	

हपु० ५८.३६-३७

प्रमाद-भेद

निन्द्रा	१
इंद्रिय	५
कषाय	४
विकथा	४
प्रणय (स्नेह)	१
	१५

हपु० ३. ८८

भाषा-भेद

१. अभ्याख्यान भाषा	२. कलह भाषा	३. पैशुन्य भाषा
४. बद्धप्रलाप भाषा	५. रति भाषा	६. अरति भाषा
७. उपाधिवाक् भाषा	८. निकृति भाषा	९. अप्रणति भाषा
१०. मोष (मोष) भाषा	११. सम्यग्दर्शन भाषा	१२. मिथ्यादर्शन-भाषा

हपु० १०.९१-९७

सत्य-भेद

१. नाम सत्य	२. रूप सत्य	३. स्थापना सत्य
४. प्रतीत्यसत्य	५. संवृत्तिसत्य	६. संयोजना सत्य
७. जनपद सत्य	८. देश सत्य	९. भाव सत्य
१०. समय सत्य		

हपु० १०.९८-१०७

छप्पन-दिक्कुमारी-देवियाँ

मेरु पर्वत के चारों पर्वतों के मध्य विद्यमान आठकूटों में क्रीडा करने वाली देवियाँ

१. भोगंकरा	२. भोगवती	३. सुभोगा	४. भोगमालिनी
५. वत्समित्रा	६. सुमित्रा	७. वारिषेणा	८. अचलावती

हपु० ५.२२६-२२७

मेरु की पूर्वोत्तर दिशा में विद्यमान कूटों की देवियाँ

१. मेघंकरा	२. मेघवती	३. सुमेघा	४. मेघमालिनी
५. तोयधारा	६. विचित्रा	७. पुष्पमाला	८. अनिन्दिता

हपु० ५.३३२-३३३

रूचकवर पर्वत के पूर्व में विद्यमान कूटों की देवियां

१. विजया	२. वैजयन्ती	३. जयन्ती	४. अपराजिता
५. नन्दा	६. नन्दोत्तमा	७. आनन्दा	८. नान्दीवर्धना

हपु० ५.७०५-७०६

रूचकवर पर्वत के दक्षिण विशावर्ती कूटों की वासिनी देवियाँ

१. स्वस्थिता	२. सुप्रणिधि	३. सुप्रबुद्धा	४. यशोधरा
५. लक्ष्मीमती	६. कीर्तिमती	७. वसुन्धरा	८ चित्रादेवी

हपु० ५.७०८-७१०

रूचकवर पर्वत के पश्चिम में विद्यमान कूटों की देवियाँ

१. इलादेवी	२. सुरादेवी	३. पृथिवीदेवी
४. पद्मावती देवी	५. कांचनादेवी	६. नवमिका देवी
७. सीता देवी		८. भद्रिका देवी

हपु० ५.७१२-७१४

रूचकवर पर्वत के उत्तर में विद्यमान कूटों की वासिनी देवियाँ

१. लम्बुसा	२. मिश्रकेशी	३. पुण्डरीकिणी	४. वारुणी
५. आशा	६. ह्री	७. श्री	८. श्रुति

हपु० ५.७१५-७१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुचकवर पर्वत की विद्युत्कुमारी देवियाँ

१. पूर्व में	चित्रादेवी
२. दक्षिण में	कनकचित्रा
३. पश्चिम में	त्रिशिरस् देवी
४. उत्तर में	सूत्रामणि देवी

हपु० ५.७१८-७२१

रुचकवर पर्वत वासिनी दिक्कुमारी देवियों की प्रधान देवियाँ

१. ऐशान	रुचका देवी
२. आग्नेय	रुचकोज्ज्वला देवी
३. नैऋत्य	रुचकाभा
४. वायव्य	रुचकप्रभा

हपु० ५.७२२-७२४

तप-भेद

बाह्यतप

१. अनशन	२. अवमौदर्य	३. वृत्तिपरिसंख्यान
४. रसपरित्याग	५. तन-सन्ताप	६. विविक्तशयनासन

मपु० १८.६७-६८

आभ्यन्तर तप

१. प्रायश्चित्त	२. विनय	३. वैयावृत्य	४. स्वाध्याय
५. व्युत्सर्ग	६. ध्यान		

मपु० १८.६९, २०.१९०-२०४

प्रायश्चित्त के भेद

१. आलोचना	२. प्रतिक्रमण	३. तदुभय	४. विवेक
५. व्युत्सर्ग	६. तप	७. छेद	८. परिहार
९. उपस्थान			

हपु० ६४.३२-३७

विनय तप के भेद

१. ज्ञानविनय	२. दर्शनविनय	३. चारित्रविनय	४. उपचारविनय

हपु० ६४.३८-४१

स्वाध्याय तप के भेद

१. वाचना	२. पृच्छना	३. अनुप्रेक्षा
४. आम्नाय	५. उपदेश	

हपु० ६०.४६-४८

व्युत्सर्ग तप के भेद

१. आभ्यान्तरोपाधि त्याग २. बाह्योपाधि त्याग

हपु० ६०.४९-५०

वैयावृत्य तप के भेद

१. प्राचार्य	६. गण
२. उपाध्याय	७. कुल
३. तपस्वी	८. संघ
४. शैक्ष्य	९. साधु
५. ग्लान	१०. मनोज्ञ

इन दस प्रकार के मुनियों की सेवा।

हपु ६०.४२-४५

देव-भेद

१. भवनवासी देव २. व्यन्तर देव ३. ज्योतिष्क देव ४. वैमानिक देव

वीवच १४.६४

भवनवासी देव-भेद

१. असुरकुमार	२. नागकुमार	३. सुपर्णकुमार
४. द्वीपकुमार	५. उदधिकुमार	६. स्तनितकुमार
७. विद्युत्कुमार	८. दिक्कुमार	९. अग्निकुमार
१०. वायुकुमार		

हपु० ४.६३-६५

ज्योतिष्क देव-भेद

१. चन्द्र २. सूर्य ३. ग्रह ४. नक्षत्र ५. तारागण

हपु० ६.७, वीवच० १४.५२

व्यन्तर देव-भेद

१. किन्नर	२. किंपुरुष	३. महोरग	४. गन्धर्व
५. यक्ष	६. राक्षस	७. भूत	८. पिशाच

मपु०, ६३.१८५-१८६

(इनका एक साथ पुराणों में नामोल्लेख नहीं है)

वैमानिक कल्पोपपन्न देव-भेद

१. सौधर्म	२. ईशान	३. सनत्कुमार	४. माहेन्द्र
५. ब्रह्म	६. ब्रह्मोत्तर	७. लान्तव	८. कापिष्ठ
९. शुक्र	१०. महाशुक्र	११. सतार	१२. सहस्रार
१३. आनत	१४. प्राणत	१५. आरण	१६. अच्युत

हपु० ६.३६-३८

वैमानिक कल्पातीत देव-भेद

१. नौ ग्रैवेयक— अधोग्रैवेयक— सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध
मध्य ग्रैवेयक— यशोधर, सुभद्र, सुविशाल
ऊर्ध्व ग्रैवेयक सुमन, सौमनस्य, प्रीतिकर

२. नौ अनुदिश— आदित्य, अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूपक, अंक, स्फुटिक।

३. पाँच अनुत्तर— विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित, सर्वार्थसिद्धि।

हपु० ६.३९-४०, ५२-५३, ६३-६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्येक निकाय में होनेवाले विशिष्ट देव-भेद

१. इन्द्र २. सामानिक ३. त्रायस्त्रिंश ४. पारिषद्
५. आत्मरक्ष ६. लोकपाल ७. अनीक ८. प्रकीर्णक
९. आभियोग्य १०. किल्विषिक

मपु० २२.१४-२९, वीवच० १४.२५-४१

ध्यान-भेद

आर्तध्यान के भेद

१. इष्ट वियोगज २. अनिष्ट संयोगज ३. निदानप्रत्यय
४. वेदनोद्‌गमोद्‌भव

मपु० २१.३४-३५

रौद्रध्यान के भेद

१. हिंसानन्द २. मृषानन्द ३. स्तेयानन्द ४. संरक्षणानन्द

मपु० २१.४३

धर्मध्यान के भेद

१. अपायविचय २. उपायविचय ३. जीवविचय
४. अजीवविचय ५. विपाकविचय ६. विरागविचय
७. भवविचय ८. संस्थानविचय ९. आज्ञाविचय
१०. हेतुविचय

मपु० २१.१४०-१६०, हपु० ५६.४०-५०

शुक्लध्यान

१. पृथक्त्ववितर्कवीचार २. एकत्ववितर्कवीचार

मपु० २१.१६८

परमशुक्लध्यान

१. सूक्ष्मक्रियापाति २. समुच्छिन्नक्रियानिवर्ति

मपु० २१.१९५-१९६

परीषह तथा धर्म-भेद

परीषह

१. क्षुधा २. तृषा ३. शीत ४. उष्ण
५. दंश मशक ६. नाग्न्य ७. अरति-रति ८. स्त्री
९. चर्या १०. भू-शय्या ११. निषद्या १२. आक्रोश
१३. वध १४. याचना १५. अलाभ १६. अदर्शन
१७. रोग १८. तृणस्पर्श १९. प्रज्ञा २०. अज्ञान
२१. मल २२. सत्कार-पुरस्कार

मपु० ११.१००-१०२

धर्म

१. उत्तम क्षमा २. उत्तम मार्दव ३. उत्तम आर्जव
४. उत्तम शौच ५. उत्तम सत्य ६. उत्तम संयम
७. उत्तम तप ८. उत्तम त्याग ९. उत्तम आकिंचन्य
१०. उत्तम ब्रह्मचर्य

मपु० ११.१०३-१०४

शौच धर्म को पाँचवाँ धर्म भी कहा है—

मपु० ३६.१५७-१५८

पुद्‌गल, मंगल द्रव्य, नय और नरक भूमियाँ

पुद्‌गल के छः भेद

१. सूक्ष्मसूक्ष्म २. सूक्ष्म ३. सूक्ष्मस्थूल
४. स्थूल-सूक्ष्म ५. स्थूल ६. स्थूल-स्थूल

मपु० २४.१४९

अष्ट मंगल-द्रव्य

१. छत्र २. ध्वजा ३. कलश ४. चमर
५. सुप्रतिष्ठक/ठोंना। ६. झारी ७. दर्पण ८. ताड़-पंखा

मपु० १३.३७,९१

नय

१. नैगम २. संग्रह ३. व्यवहार ४. ऋजुसूत्र
५. शब्द ६. समभिरूढ ७. एवंभूत

हपु० ५८.४१

नरक-भूमियाँ	नरक-भूमियों के रूढ़नाम
१. रत्नप्रभा	धर्मा
२. शर्कराप्रभा	वंशी
३. बालुकाप्रभा	शिला (मेघा)
४. पंकप्रभा	अंजना
५. धूमप्रभा	अरिष्टा
६. तमःप्रभा	माघवी
७. महातमःप्रभा	माघवी

मपु० १०.३१-३२

भरतेश द्वारा स्तुत वृषभदेव के १०८ नाम

(महापुराण पर्व २४.३०-४५)

क्रमांक	नाम	श्लोक	क्रमांक	नाम	श्लोक
१.	अक्षय्य	३५	१५.	अनश्वर	४४
२.	अक्षर	३५	१६.	अनादि	३४
३.	अग्रय	३७	१७.	अनित्वर	४४
४.	अच्युत	३४	१८.	अपार	४२
५.	अज	३०	१९.	अपारि	४२
६.	अजर	३४	२०.	अमध्योपिमध्यम	४२
७.	अणीयान्	४३	२१.	अयोनिज	३४
८.	अर्धमारि	३९	२२.	अरज	३०
९.	अधिज्योति	३४	२३.	अरहा	४०
१०.	अधिदेव	३०	२४.	अरिहा	४०
११.	अध्वर	४१	२५.	अर्हत्	४०
१२.	अनक्ष	३५	२६.	आज्य	४२
१३.	अनक्षर	३५	२७.	आत्मभू	३३
१४.	अनन्त	३४	२८.	आदिदेव	३०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	नाम	श्लोक
२९.	आदिपुरुष	३१
३०.	आद्यकवि	३७
३१.	इज्य	४२
३२.	इन	३४
३३.	ईश	३४
३४.	ईशान	३१
३५.	उत्तमोऽनुत्तर	४३
३६.	कंजसंजात	३८
३७.	कर्मारातिनिशुम्भन	४०
३८.	कामजिज्जेत्ता	४०
३९.	गरिमास्पद	४३
४०.	गरिष्ठ	४३
४१.	गुणाकर	४२
४२.	छन्दोविद्	३९
४३.	छन्दकर्त्ता	३९
४४.	जगद्भर्ता	३२
४५.	जित्वर	४४
४६.	जिन	४०
४७.	जिनकुंजर	३८
४८.	जिष्णु	३५
४९.	ज्येष्ठ	४३
५०.	तमोरि	३६
५१.	धर्मध्वज	४०
५२.	धर्मनायक	३९
५३.	धर्मपति	४०
५४.	धर्मादि	३९
५५.	ध्येय	४५
५६.	नित्य	४४
५७.	निरंजन	३८
५८.	निरुद्ध	३८
५९.	परंज्योति	३०
६०.	परमतत्त्व	३३
६१.	परमात्मा	३३
६२.	परमेष्ठी	३३
६३.	पुण्यनायक	३७
६४.	पुण्यगण्य	४२
६५.	पुमान	३१
६६.	पुराण	३७
६७.	पुरु	३१
६८.	पूत	३७
६९.	प्रभूष्णु	३०
७०.	बुद्ध	३८
७१.	ब्रह्मपदेश्वर	४५
७२.	ब्रह्मविद्ध्येय	४५
७३.	ब्रह्मा	३०
७४.	भगवान्	३३
७५.	भवान्तक	४४
७६.	भव्यभास्कर	३६
७७.	भव्याब्जिनीबन्धु	४१
७८.	भूष्णु	४४
७९.	मखज्येष्ठ	४१
८०.	मखांग	४१
८१.	महान्	४४
८२.	महीयान्	४३
८३.	महीयित	४४
८४.	महेश्वर	३०
८५.	मह्य	४४
८६.	मोहसुरारि	३६
८७.	यज्वा	४२
८८.	योगविदांवर	३७
८९.	योगात्मा	३८
९०.	योगी	३७
९१.	वदतांवर	३९
९२.	वरेण्य	३७
९३.	वाचस्पति	३९
९४.	विजिष्णु	३५
९५.	विधाता	३१
९६.	विभु	३२
९७.	वियोनिक	३२
९८.	विश्वतोमुख	३१
९९.	विश्वतोऽक्षिमयज्योति	३२
१००.	विश्वदृक्	३२
१०१.	विश्वभुक्	३२
१०२.	विश्वयोनि	३२
१०३.	विश्वराड्	३१
१०४.	विश्वव्यापी	३२
१०५.	विश्वेट्	३१
१०६.	विष्णु	३५
१०७.	वृषभ	३३
१०८.	वृषभध्वज	३३
१०९.	वेदविद्	३९
११०.	शंकर	३६
१११.	शंभव	३६
११२.	शम्भु	३६
११३.	शंयु	३६
११४.	शंवद	३६
११५.	शरण्य	३७
११६.	शान्त	४४
११७.	शिव	४४
११८.	सयोगी	३८
११९.	सिद्ध	३८
१२०.	सूक्ष्म	३८
१२१.	स्थवीयान्	४३
१२२.	स्थास्नु	४४
१२३.	स्थेष्ठ	४३
१२४.	स्रष्टा	३१
१२५.	स्वयंप्रभ	३५
१२६.	स्वयंभू	३५
१२७.	हर	३६
१२८.	हरि	३६
१२९.	हवि	४१
१३०.	हविर्भुक्	४१
१३१.	हव्य	४१
१३२.	हिरण्यगर्भ	३३
१३३.	होता	४१

महापुराण के पर्व २४ श्लोक ३० से ४५ का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि चक्रवर्ती भरतेश ने १३३ नामों से वृषभदेव की स्तुति की है जबकि श्लोक ४६ में उनके द्वारा वृषभदेव के १०८ नामों का हृदय से स्मरण कर स्तुति किया जाना बताया गया है।

नामों का अर्थ-साम्य की दृष्टि से अध्ययन किए जाने पर ऐसा प्रतीत होता है कि १०८ नामों से अधिक आये २५ नामों की पुनरावृत्ति हुई है।

भिन्न-भिन्न नाम होते हुए भी जो नाम समान अर्थ में आये हैं, वे निम्न प्रकार हैं—

क्रमांक	सामान्य नाम	श्लोक	समान अर्थ में व्यवहृत नाम	श्लोक
१.	अक्षय्य	३५	नित्य	४४
२.	अक्षर	३५	अनश्वर	४४
३.	अच्युत	३४	स्थेष्ठ	४३
४.	अनित्वर	४४	स्थवीयान्	४३
५.	अपारि	४२	अरिहा	४०
६.	अयोनिज	३४	वियोनिक	३३
७.	अरिहा	४०	मोहसुरारि	३६
८.	आज्य	४२	हव्य	४१
९.	इज्य	४२	मह्य	४४
१०.	इन	३४	विभु	३२
११.	ईश	३४	ईशान	३१
१२.	परमज्योति	३०	अधिज्योति	३४
१३.	परमात्मा	३३	भगवान्	३३
१४.	पुण्यनायक	३७	पुण्यगण्य	४२
१५.	प्रभूष्णु	३०	भूष्णु	४४
१६.	ब्रह्मा	३०	ब्रह्मपदेश्वर	४५
१७.	ब्रह्मा	३०	हरिण्यगर्भ	३३
१८.	महान्	४४	महीयान्	४३
१९.	यज्वा	४२	होता	३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०.	विधाता	३१	स्रष्टा	३१
२१.	विश्वतोमुख	३१	विश्वदृक्	३२
२२.	विष्णु	३५	हरि	३६
२३.	वृषभ	३०	ज्येष्ठ	४३
२४.	शिव	४४	हर	३६
२५.	सूक्ष्म	३८	अणीयान्	४३

इस प्रकार दाईं ओर दर्शाए गये नाम उनके सामने दर्शाए गये नामों के समानार्थी हैं। ये नाम २५ हैं। ऊपर दर्शाए १३३ नामों में ये २५ नाम कम कर देने से शेष १०८ वे नाम ज्ञात होते हैं जिनके द्वारा चक्री भरतेश ने वृषभदेव की स्तुति की थी।

भावनाएँ

महाव्रत-भावनाएँ

महापुराण के अनुसार अहिंसाव्रत-भावनाएँ	हरिवंशपुराण के अनुसार अहिंसाव्रत-भावनाएँ
१. मनोगुप्ति	१. सुवाग्गुप्ति
२. वचनगुप्ति	२. सुमनोगुप्ति
३. ईर्यासमिति	३. स्वकालेवीक्ष्य भोजन
४. कायनियन्त्रण	४. ईर्यासमिति
५. विष्वाणसमिति	५. आदाननिक्षेपणसमिति
मपु० २०.१६१	हपु० ५८.११८

सत्यव्रत-भावनाएं

१. क्रोध त्याग	१. स्वक्रोध त्याग
२. लोभ त्याग	२. स्व लोभ त्याग
३. भय त्याग	३. स्व भीरुत्व त्याग
४. हास्य त्याग	४. स्व हास्य त्याग
५. सूत्रानुग वाणी बोलना	५. उद्भाषण (प्रशस्त्र वचन बोलना)
मपु० २०.१६२	हपु० ५८.११९

अचौर्यव्रत-भावनाएँ

१. मिताहार	१. शून्यागारवास
२. उचिताहार	२. विमोचितागारवास
३. अभ्यनुज्ञातग्रहण	३. अन्यानुपरोधित (परोपरोधाकरण)
४. अग्रहोऽन्यथा	४. भैक्ष्यशुद्धि
५. संतोषभक्तपान	५. (सधर्मा) विसंवाद
मपु० २०.१६३	हपु० ५८.१२०

ब्रह्मचर्यव्रत-भावनाएँ

१. स्त्रीकथा त्याग	१. स्त्रीराग कथा श्रवण त्याग
२. स्त्री आलोकन त्याग	२. स्त्री-रम्यांग-निरीक्षण त्याग
३. स्त्री संसर्ग त्याग	३. अंग संस्कार का त्याग
४. प्राग्रतस्मृतयोजनवर्जन	४. वृष्य रस त्याग
५. वृष्यरस वर्जन	५. पूर्वरतस्मृति त्याग
मपु० २०.१६४	हपु० ५८.१२१

परिग्रहपरिमाणव्रत

इन्द्रिय-विषयभूत, सचित्त, अचित्त, पदार्थों में आसक्ति का त्याग।	इन्द्रियों के इष्ट-अनिष्ट विषयों में राग-द्वेष का त्याग करना।
मपु० २०.१६५	हपु० ५८.१२२

सोलह कारण-भावनाएँ

१. दर्शनविशुद्धि	९. वैयावृत्य
२. विनयसम्पन्नता	१०. अर्हद् भक्ति
३. शीलव्रतेष्वनतीचार	११. आचार्य भक्ति
४. अभीक्ष्णज्ञानोपयोग	१२. बहुश्रुतभक्ति
५. संवेग	१३. प्रवचनभक्ति
६. शक्तितस् त्याग	१४. आवश्यकापरिहाणि
७. शक्तितस् तप	१५. मार्ग प्रभावना
८. साधु-समाधि	१६. प्रवचनवात्सल्य

मपु० ७.८८,११.६८-७८, पपु० २.१९२, हपु० ३४.१३१-१४९

धर्मध्यान की दस भावनाएँ

१. उत्तम क्षमा	६. उत्तम संयम
२. उत्तम मार्दव	७. उत्तम तप
३. उत्तम आर्जव	८. उत्तम त्याग
४. उत्तम सत्य	९. उत्तम आकिंचन्य
५. उत्तम शौच	१०. उत्तम ब्रह्मचर्य

मपु० ३८.१५७-१५८

सम्यक्त्व भावनाएँ

१. संवेग	५. अस्मय
२. प्रशम	६. आस्तिक्य
३. स्थैर्य	७. अनुकम्पा
४. असंमूढता	

मपु० २१.९७

सामान्य चार भावनाएँ

१. मैत्री	३. कारुण्य
२. प्रमोद	४. माध्यस्थ

हपु० ५८.१२५

मिथ्या-दृष्टियाँ

मूलतः दृष्टियाँ चार प्रकार की होती हैं। वे हैं—क्रियादृष्टि, अक्रियादृष्टि, अज्ञानदृष्टि और विनयदृष्टि। इनमें क्रियादृष्टि के एक सौ अस्सी, अक्रियादृष्टि के चौरासी, अज्ञानदृष्टि के सड़सठ और विनयदृष्टि के बत्तीस भेद होते हैं। चारों की कुल दृष्टियाँ तीन सौ तिरेसठ होती हैं। इन दृष्टियों का विवरण निम्न प्रकार है—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रियावादी

नियति, स्वभाव, काल, देव और पौरुष इन पाँच को स्वतः, परतः, नित्य और अनित्य इन चार से गुणित करने पर बीस भेद होते हैं तथा इन बीस भेदों को जीवादि नौ पदार्थों से गुणित करने पर इसके एक सौ अस्सी भेद होते हैं।

हपु० १०.४९-५१

अक्रियावादी

जीवादि सात तत्त्व-नियति, स्वभाव, काल, देव और पौरुष की अपेक्षा न स्वतः हैं और न परतः। अतः सात तत्त्वों में नियति आदि पाँच का गुणा करने पर पैंतीस और पैंतीस में स्वतः परतः इन दो का गुणा करने पर सत्तर भेद हुए। जीवादि सात तत्त्व नियति और काल की अपेक्षा नहीं है अतः सात में दो का गुणा करने पर चौदह भेद हुए। इन चौदह भेदों को पूर्वोक्त सत्तर भेदों में मिला दिये जाने पर अक्रियावादियों के चौरासी भेद होते हैं। हपु० १०.५२-५३

अज्ञानवादी

जीवादि नौ पदार्थों को सत्, असत्, उभय, अवक्तव्य, सद् अवक्तव्य, असद् अवक्तव्य और उभय अवक्तव्य इन सात भंगों से कौन जानता है इस अज्ञानता के कारण नौ पदार्थों में सात भंगों का गुणा करने से त्रेसठ भेद होते हैं। इनमें जीव की सत् उत्पत्ति को जाननेवाला कौन है? जीव असत् उत्पत्ति को जाननेवाला कौन है? जीव की सत्-असत् उत्पत्ति को जाननेवाला कौन है? और जीव की अवक्तव्य उत्पत्ति को जाननेवाला कौन है? भाव की अपेक्षा स्वीकृत इन चार भेदों के अज्ञानवादियों के कुल सड़सठ भेद होते हैं। हपु० १०.५४-५८

विनयवादी

माता, पिता, देव, राजा, ज्ञानी, बालक, वृद्ध और तपस्वी इन आठों में प्रत्येक की मन, वचन, काय और दान से विनय किये जाने से इसके बत्तीस भेद होते हैं। हपु० १०.५९-६०

मुक्त जीव की विशेषताएँ

क्र०	नाम		
१.	अनश्वरता	६. अनन्तदर्शनपना	११. अच्छेद्यपना
२.	अचलता	७. अनन्तवीर्यपना	१२. अभेद्यपना
३.	अक्षयपना	८. अनन्तसुखपना	१३. अक्षरपना
४.	अव्याबाधपना	९. नीरजसपना	१४. अप्रमेयपना
५.	अनन्तज्ञानीपना	१०. निर्मलपना	मपु० ४२.९५-१०३

योग और प्रतिमाएँ

प्रतिमाएँ

१. दर्शन-प्रतिमा
२. व्रत-प्रतिमा
३. सामायिक-प्रतिमा
४. प्रोषधोपवास-प्रतिमा
५. सचित्तत्याग-प्रतिमा
६. रात्रिभुक्तित्याग-प्रतिमा
७. ब्रह्मचर्य-प्रतिमा
८. आरम्भत्याग-प्रतिमा
९. परिग्रहत्याग-प्रतिमा
१०. अनुमतित्याग-प्रतिमा
११. उद्दिष्टत्याग-प्रतिमा

वीवच० १८.३६-३७, ६०-७०

योग-भेद

हरिवंशपुराणकार ने चार मनोयोग, चार वचनयोग और पाँच काययोग मिलकर तेरह प्रकार का बताया है। टीकाकार ने इनके निम्न नामों का उल्लेख किया है—

१. सत्यमनोयोग
२. असत्यमनोयोग
३. उभयमनोयोग
४. अनुभयमनोयोग
५. सत्यवचनयोग
६. असत्यवचनयोग
७. उभयवचनयोग
८. अनुभयवचनयोग
९. औदारिक काययोग
१०. औदारिकमिश्रकाययोग
११. वैक्रियक काययोग
१२. वैक्रियकमिश्रकाययोग
१३. कार्मणकाययोग

प्रमत्तसंयतगुणस्थान में आहारक काययोग और आहारकमिश्र काययोग की संभावना रहने से योग के पन्द्रह भेद भी माने गये हैं।

हपु० ५८.१९७

व्रत और उनके अतिचार

व्रत

पंचाणुव्रत

१. अहिंसाणुव्रत
२. सत्याणुव्रत
३. अचौर्याणुव्रत
४. स्वदारसंतोषव्रत
५. इच्छापरिमाणव्रत

हपु० ५८.१३८-१४२

गुणव्रत

१. दिग्व्रत
२. देशव्रत
३. अनर्थदण्डव्रत-पापोपदेश, अपध्यान, प्रमादाचरित, हिंसादान और दुःश्रुति।

हपु० ५८.१४४-१४७

शिक्षाव्रत

१. सामायिक
२. प्रोषधोपवास
३. उपभोग-परिभोगपरिमाण
४. अतिथिसंविभाग

हपु० ५८.१५३-१५८

अतिचार

अहिंसाणुव्रत के अतिचार

१. बन्ध-गतिरोध करना।
२. वध-दण्ड आदि से पीटना।
३. छेदन-कर्ण आदि अंगों का छेदना।
४. अतिभारारोपण-अधिक भार लादना।
५. अन्नपान निरोध-समय पर भोजन-पानी नहीं देना।

हपु० ५८.१६४-१६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्याणुव्रत के अतिचार

१. मिथ्योपदेश २. रहोभ्याख्यान ३. कूटलेखक्रिया
४. न्यासापहार ५. साकारमन्त्रभेद

हपु० ५८.१६६-१७०

अचौर्याणुव्रत के अतिचार

१. स्तेनप्रयोग २. तदाहृतादान ३. विरुद्धराज्यातिक्रम
४. हीनाधिकमानोन्मान ५. प्रतिरूपक व्यवहार

हपु० ५८.१७१-१७३

ब्रह्मचर्याणुव्रत के अतिचार

१. परविवाहकरण २. अनंगक्रीडा ३. गृहीतेत्वरिकागमन
४. अगृहीतेत्वरिकागमन ५. कामतीव्राभिनिवेश

हपु० ५८.१७४-१७५

परिग्रहपरिमाणव्रत के अतिचार

१. हिरण्य-सवर्ण-प्रामाणातिक्रम
२. वास्तु-क्षेत्र-प्रामाणातिक्रम
३. धन-धान्य-प्रामाणातिक्रम
४. दासी-दास-प्रामाणातिक्रम
५. कुप्य-प्रामाणातिक्रम

मपु० २०.१६५, हपु० ५८.१७६

दिग्व्रत के अतिचार

१. अधोव्यतिक्रम २. तिर्यग्व्यतिक्रम ३. ऊर्ध्वव्यतिक्रम
४. स्मृत्यन्तराधान ५. क्षेत्रवृद्धि

हपु० ५८.१७७

देशव्रत के अतिचार

१. प्रेष्य-प्रयोग २. आनयन ३. पुद्गल क्षेप
४. शब्दानुपात ५. रूपानुपात

हपु० ५८.१७८

अनर्थदण्डव्रत के अतिचार

१. कन्दर्प
२. कौत्कुच्य
३. मौखर्य
४. असमीक्ष्याधिकरण
५. उपभोगापरिभोगानर्थक्य

हपु० ५८.१७९

अनर्थदण्डव्रत के भेद

१. पापोपदेश
२. अपध्यान
३. प्रमादाचरित
४. हिंसादान
५. दुःश्रुति

हपु० ५८.१४६

सामायिक शिक्षाव्रत के अतिचार

१. मनोयोग दुष्प्रणिधान
२. वचनयोग दुष्प्रणिधान
३. काययोग दुष्प्रणिधान
४. अनादार
५. स्मृत्यनुपस्थान

हपु० ६८.१८०

अतिथिसंविभागव्रत के अतिचार

१. सचित्त-निक्षेप
२. सचित्तावरण
३. पर-व्यपदेश
४. मात्सर्य
५. कालातिक्रम

हपु० ५८.१८३

प्रोषधोपवास व्रत के अतिचार

१. अनवेक्ष्य मलोत्सर्ग
२. अनवेक्ष्यादान
३. अनवेक्ष्यसंस्तरसंक्रम
४. अनैकाग्रता
५. अनादर

हपु० ५८.१८१

सल्लेखना के अतिचार

१. जीविताशंसा
२. मरणाशंसा
३. निदान
४. सुखानुबन्ध
५. मित्रानुराग

हपु० ५८.१८४

उपभोगपरिभोग परिमाणव्रत के अतिचार

१. सचित्ताहार
२. सचित्त संबंधाहार
३. सचित्त सन्मिश्राहार
४. अभिषवाहार
५. दुष्पक्वाहार

हपु० ५८.१८२

शलाका-पुरुष

वर्तमान चौबीस तीर्थङ्कर

१. ऋषभदेव	१३. विमलनाथ
२. अजितनाथ	१४. अनन्तनाथ
३. सम्भवनाथ	१५. धर्मनाथ
४. अभिनन्दननाथ	१६. शान्तिनाथ
५. सुमतिनाथ	१७. कुन्थुनाथ
६. पद्मप्रभ	१८. अरनाथ
७. सुपार्श्वनाथ	१९. मल्लिनाथ
८. चन्द्रप्रभ	२०. मुनिसुव्रतनाथ
९. पुष्पदन्त	२१. नमिनाथ
१०. शीतलनाथ	२२. नेमिनाथ
११. श्रेयांसनाथ	२३. पार्श्वनाथ
१२. वासुपूज्य	२४. महावीर

पपु० ५.२१२-२१६, हपु० ६०.१३८-१४१

वर्तमान बारह चक्रवर्ती

१. भरत	२. सगर	३. मघवा
४. सनत्कुमार	५. शान्तिनाथ	६. कुन्थुनाथ
७. अरनाथ	८. सुभूम	९. महापद्म
१०. हरिषेण	११. जयसेन	१२. ब्रह्मदत्त

हपु० ६०.२८६-२८७, वीवच० १८.१०९-११०

वर्तमान ९ नारायण

१. त्रिपृष्ठ	२. द्विपृष्ठ	३. स्वयम्भू
४. पुरुषोत्तम	५. पुरुषसिंह	६. पुण्डरीक
७. दत्त	८. लक्ष्मण	९. कृष्ण

हपु० ६०.२८८-२८९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान ९ प्रतिनारायण

१. अश्वग्रीव	२. तारक	३. मेरुक
४. निशुम्भ	५. मधुकैटभ	६. बलि
७. प्रहरण	८. रावण	९. जरासन्ध

हपु० ६०.२९१-२९२

वर्तमान ९ बलभद्र

१. विजय	२. अचल	३. सुधर्म
४. सुप्रभ	५. सुदर्शन	६. नान्दी
७. नन्दिमित्र	८. राम	९. पद्म

हपु० ६०.२९०

वर्तमान तीर्थङ्कर—सामान्य परिचय

क्र०	नाम तीर्थङ्कर	जन्म नगरी	माता	पिता	चैत्यवृक्ष	निर्वाण भूमि	जन्मतिथि
१.	वृषभनाथ	अयोध्या	मरुदेवी	नाभिराय	वट	कैलास	चैत्र कृ० नवमी
२.	अजितनाथ	,,	विजया	जितशत्रु	सप्तपर्ण	सम्मेदगिरि	माघ शु० नवमी
३.	संभवनाथ	श्रावस्ती	सेना	जितारि	शाल	,,	मार्ग, शु० पूर्णिमा
४.	अभिनन्दननाथ	अयोध्या	सिद्धार्था	संवर	सरल	,,	माघ, शु० द्वादशी
५.	सुमतिनाथ	अयोध्या	सुमंगला	मेघप्रभ	प्रियंग	,,	श्रावण, शु० एकादशी
६.	पद्मप्रभ	कौशाम्बी	सुसीमा	धरण	,,	,,	कार्तिक कृ० त्रयोदशी
७.	सुपार्श्वनाथ	काशी	पृथिवी	सुप्रतिष्ठ	शिरीष	,,	ज्येष्ठ, शु० द्वादशी
८.	चन्द्रप्रभ	चन्द्रपुरी	लक्ष्मणा	महासेन	नागवृक्ष	,,	पौष, कृष्ण एकादशी
९.	सुविधिनाथ	काकन्दी	रामा	सुग्रीव	शालि	,,	मार्ग शु० प्रतिपदा
१०.	शीतलनाथ	भद्रिलपुरी	सुनन्दा	दृढ़रथ	प्लक्ष	,,	मार्ग कृ० द्वादशी
११.	श्रेयांसनाथ	सिंहनादपुर	विष्णुश्री	विष्णुराज	तेंदू	,,	फाल्गुन, कृ० एकादशी
१२.	वासुपूज्य	चम्पापुरी	जया	वसुपूज्य	पाटला	चम्पापुरी,	फाल्गुन कृ० चतु०
१३.	विमलनाथ	काम्पिल्य	शर्मा	कृतवर्मा	जामुन	सम्मेदगिरि,	माघ, शु० चतुर्दशी
१४.	अनन्तजित्	अयोध्या	सर्वयशी	सिंहसेन	पीपल	,,	ज्येष्ठ कृ० द्वादशी
१५.	धर्मनाथ	रत्नपुर	सुव्रता	भानुराज	दधिपर्ण	,,	माघ शु० त्रयोदशी
१६.	शान्तिनाथ	हस्तिनापुर	ऐरा	विश्वसेन	नन्दी	,,	ज्येष्ठ कृ० चतुर्दशी
१७.	कुन्थुनाथ	,,	श्रीमती	सूर्य	तिलक	,,	वैशाख, शु० प्रतिपदा
१८.	अरनाथ	,,	मित्रा	सुदर्शन	आम्र	,,	मार्ग शु० चतुर्दशी
१९.	मल्लिनाथ	मिथिला	रक्षिता	कुम्भ	अशोक	,,	मार्ग० शु० एकादशी
२०.	मुनिसुव्रत	कुशाग्रनगर	पद्मावती	सुमित्र	चम्पक	,,	आसौज, शु० द्वादशी
२१.	नमिनाथ	मिथिला	वप्रा	विजय	वकुल	,,	आषाढ़ कृ० दशमी
२२.	नेमिनाथ	सूर्यपुर	शिवा	समुद्रविजय,	मेषशृंग	ऊर्जयन्त	वैशाख, शु० त्रयोदशी
२३.	पार्श्वनाथ	वाराणसी	वर्मा	अश्वसेन	धव	सम्मेदगिरि,	पौष, कृ० एकादशी
२४.	महावीर	कुण्डपुर	प्रियकारिणी	सिद्धार्थ,	शाल	पावापुरी,	चैत्र शु० त्रयोदशी

हपु० ६०.१६९-२०५

शलाकेतर-पुण्य-पुरुष

वर्तमान कुलकर

१. प्रतिश्रुति	मपु० ३.६३	हपु० ७.१२५	८. चक्षुष्मान्	मपु० ३.१२०	हपु० ७.१५७
२. सन्मति	मपु० ३.७७	हपु० ७.१४९	९. यशस्वान्	मपु० ३.१२५	हपु० ७.१६०
३ क्षेमंकर	मपु० ३.९०	हपु० ७.१५०	१०. अभिचन्द्र	मपु० ३.१२९	हपु० ७.१६१
४. क्षेमंधर	मपु० ३.१०३	हपु० ७.१५२	११. चन्द्राभ	मपु० ३.१३४	हपु० ७.१६३
५. सीमंकर	मपु० ३.१०७	हपु० ७.१५४	१२. मरुदेव	मपु० ३.१३९	हपु० ७.१६४
६. सीमंधर	मपु० ३.११२	हपु० ७.१५५	१३. प्रसेनजित्	मपु० ३.१४६	हपु० ७.१६६
७. विमलवाहन	मपु० ३.११७	हपु० ७.१५६	१४. नाभिराय	मपु० ३.१५२	हपु० ७.१६९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान रुद्र

१. भीमावलि २. जितशत्रु ३. रुद्र ४. विश्वानल
५. सुप्रतिष्ठक ६. अचल ७. पुण्डरीक ८. अजितन्धर
९. अजितनाभि १०. पीठ ११. सात्यकिपुत्र
हपु० ६०.५३४-५३६

वर्तमान नारद

१. भीम २. महाभीम ३. रुद्र ४. महारुद्र
५. काल ६. महाकाल ७. चतुर्मुख ८. नरवक्त्र
९. उन्मुख हपु० ६०.५४८-५४९

श्रुत-भेद

अंग-प्रविष्ट

अंग

१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग
४. समवायांग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति अंग ६. ज्ञातृधर्मकथांग
७. श्रावकाध्ययनांग ८. अन्तकृद्दशांग ९. अनुत्तरोपपादिकदशांग
१०. प्रश्नव्याकरणांग ११. विपाकसूत्रांग १२. दृष्टिवादांग
हपु० २.९२-९५

पूर्व

१. उत्पादपूर्व २. अग्रायणीयपूर्व ३. वीर्यप्रवादपूर्व
४. अस्तिनास्तिप्रवादपूर्व ५. ज्ञानप्रवादपूर्व ६. सत्यप्रवादपूर्व
७. आत्मप्रवादपूर्व ८. कर्मप्रवादपूर्व ९. प्रत्याख्यानपूर्व
१०. विद्यानुवादपूर्व ११. कल्याणपूर्व १२. प्राणावायपूर्व
१३. क्रियाविशालपूर्व १४. लोकबिन्दुपूर्व हपु० २.९७-१००

अंश बाह्यश्रुत

१. सामायिक २. स्तवन ३. वन्दना ४. प्रतिक्रमण
५. वैनयिक ६. कृतिकर्म ७. दशवैकालिक ८. उत्तराध्ययन
९. कल्पव्यवहार १०. कल्पाकल्प ११. महाकल्प १२. पुण्डरीक
१३. महापुण्डरीक १४. निषद्यका
हपु० २.१०२-१०५, १०.१२५-१२६

दृष्टिवादांग के भेद

१. परिकर्म २. सूत्र ३. अनुयोग ४. पूर्वगत
५. चूलिका हपु० १०.६१

परिकर्म के भेद

१. चन्द्रप्रज्ञप्ति २. सूर्यप्रज्ञप्ति ३. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति
४. द्वीपसमुद्रप्रज्ञप्ति ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति हपु० १०.६२

अग्रायणीयपूर्व की चौदह वस्तुएँ

१. पूर्वान्त २. अपरान्त ३. ध्रुव
४. अध्रुव ५. अच्यवनलब्धि ६. अध्रुव सम्प्रणधि
७. कल्प/महाकल्प ८. अर्थ ९. भौमावय
१०. सर्वार्थकल्पक ११. निर्वाण १२. अतीतानागत
१३. सिद्धि १४. उपाध्याय हपु० १०.७७-८०

अग्रायणीयपूर्व के कर्मप्रकृति प्राभृत के योगद्वार

१. कृति २. वेदना ३. स्पर्श ४. कर्म
५. प्रकृति ६. बन्धन ७. निबन्धन ८. प्रक्रम
९. उपक्रम १०. उदय ११. मोक्ष १२. संक्रम
१३. लेश्या १४. लेश्याकर्म १५. लेश्यापरिणाम १६. सातासात
१७. दीर्घह्रस्व १८. भवधारणा १९. पुद्गलात्मा २०. निधत्ता-निधत्तक
२१. सनिकाचित २२. अनिकाचित २३. कर्मस्थिति २४. स्कन्ध
हपु० १०.८२-८६

श्रुतज्ञान के भेद

१. पर्याय २. पर्याय-समास ३. अक्षर
४. अक्षर-समास ५. पद ६. पद-समास
७. संघात ८. संघात-समास ९. प्रतिपत्ति
१०. प्रतिपत्ति-समास ११. अनुयोग १२. अनुयोग-समास
१३. प्राभृत-प्राभृत १४. प्राभृत-प्राभृत-समास १५. प्राभृत
१६. प्राभृत समास १७. वस्तु १८. वस्तु समास
१९. पूर्व २०. पूर्व समास हपु० १०.१२-१३

चूलिका के भेद

१. आकाशगता हपु० १०.१२३-१२४ २. जलगता हपु० ६१.१२३
३. मायागता हपु० १०.१२३ ४. रूपगता हपु० १०.६१,१२३
५. स्थलगता हपु० १०.१२३-१२४

श्रोता—भेद एवं गुण

श्रोताओं की विविधता

उपमानों का नाम निर्देश करके उनके समान स्वभाव-भेद दर्शाकर श्रोता के चौदह भेद बताये गये हैं। उपमानों के नाम निम्न प्रकार हैं—

१. **मिट्टी**—शास्त्र श्रवण काल में कोमल परिणामी पश्चात् कठोर परिणामी।

२. **चलनी**—सारतत्त्व के परित्यागी, निःसार ग्राही।

३. **बकरा**—शृंगार का वर्णन सुनकर शृंगानरूप परिणामी।

४. **बिलाव**—धर्मोपदेश सुनकर भी क्रूर-प्रवृत्ति-धारी।

५. **तोता**—धर्मोपदेश के शब्द-मात्र ग्राही।

६. **बगुला**—ग्राह्य से भद्र परिणामी अन्तरंग से कुटिल परिणामी।

७. **पाषाण**—उपदेश से अप्रभावित श्रोता।

८. **सर्प**—सदुपदेश का भी जिन पर कुप्रभाव पड़ता है।

९. **गाय**—कम सुनकर अधिक लाभ लेनेवाली।

१०. **हंस**—सारग्राही।

११. **भैंसा**—उपदेश ग्राह्यता कम, कुतर्कों से सभा शोभित करने वाला।

१२. **फूटा घड़ा**—जिसके हृदय में उपदेश न ठहरे।

१३. **डांस**—उपदेश ग्रहण न करके सभी को व्याकुलित करनेवाला।

१४. **जोंक**—केवल अवगुण ग्राही। मपु० १.१३८-१३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रोता के आठ गुण

१. शुश्रूषा	२. श्रवण	३. ग्रहण	४. धारण
५. स्मृति	६. ऊह	७. अपोह	८. निर्णीति

मपु० १.१४६

संसारी जीव की विशेषतायें

१. **परतन्त्रता**—कर्मबन्धन युक्त होना। मपु० ४२.८३।

२. **चंचलता**—सुख दुःख जनित वेदना से उत्पन्न व्याकुलता। मपु० ४२.८३-८४

३. **क्षयपना**—देव आदि पर्यायों में प्राप्त ऋद्धियों का क्षय होना। मपु० ४२.८४

४. **बाध्यता**—ताड़ना एवं अनिष्ट वचनों की प्राप्ति। मपु० ४२.८५

५. **परिक्षयत्व**—इन्द्रियों से उत्पन्न ज्ञान, दर्शन, वीर्य सुख का क्षय होना। मपु० ४२.८५-८७

६. **रजस्वलत्व**—कर्म-कलंकित होना। मपु० ४२.८७

७. **छेद्यत्व**—शरीर के खण्ड-खण्ड हो सकना। मपु० ४२.८८

८. **भेद्यत्व**—प्रहार आदि से शरीर का भेदा जा सकना। मपु० ४२.८९

९. **मृत्यु**—प्राणी का परित्याग। मपु० ४२.८९

१०. **प्रमेयत्व**—चेतन का परिमित शरीर में रहना। मपु० ४२.९०

११. **गर्भवास**—माता के गर्भ में रहना। मपु० ४२.९०

१२. **विलीनता**—एक शरीर से दूसरे शरीर में संक्रमण करना। मपु० ४२.९१

१३. **क्षुभितत्व**—क्रोध आदि से आक्रान्त चित्त में क्षोभ उत्पन्न होना। मपु० ४२.९२

१४. **विविधयोग**—नाना योनियों में भ्रमना। मपु० ४२.९२

१५. **संसारावास**—चारों गतियों में परिवर्तन करते रहना। मपु० ४२.९३

१६. **असिद्धता**—प्रत्येक जन्म में ज्ञानादि गुणों का अन्य-अन्य रूप होते रहना। मपु० ४२.९३

सम्यक्त्व के भेद और अंग

सम्यक्त्व के भेद

१. आज्ञा-सम्यक्त्व	२. मार्ग-सम्यक्त्व	३. उपदेश-सम्यक्त्व
४. सूत्र-सम्यक्त्व	५. बीज-सम्यक्त्व	६. संक्षेप-सम्यक्त्व
७. विस्तार-सम्यक्त्व	८. अर्थोत्पन्न-सम्यक्त्व	९. अवगाढ-सम्यक्त्व
१०. परमावगाढ-सम्यक्त्व		वीवच० १९.१४१-१४२

सम्यक्त्व के आठ अंग

१, निःशंकित	२. निःकांक्षित	३. निर्विचिकित्सा
४. अमूढ़त्व	५. उपगूहन	६. स्थितिकरण
७. धर्म-वात्सल्य	८. प्रभावना	वीवच० ६.६३-७०

सौधर्मेन्द्र द्वारा स्तुत वृषभदेव के १००८ नामों की सूची

(महापुराण पर्व २५ श्लोक १०० से २१७ के अन्तर्गत)

क्र० सं०	नाम	श्लोक सं०	क्र० सं०	नाम	श्लोक सं०
१.	अक्षय	११४	३९.	अधिगुरु	१७१
२.	अक्षय्य	१७३	४०.	अधिदेवता	१९२
३.	अक्षर	१०१	४१.	अधिप	१५७, १८९
४.	अक्षोभ्य	११४	४२.	अधिष्ठान	२०३
५.	अखिलज्योति	२०९	४३.	अध्यात्मगम्य	१८८
६.	अगण्य	१३७	४४.	अध्वर	१६६
७.	अगति	१४२	४५.	अध्वर्यु	१६६
८.	अगम्यात्मा	१८८	४६.	अनर्घ	१७२, १८६
९.	अगाह्य	१४९	४७.	अनणु	१७६
१०.	अगोचर	१८७	४८.	अनत्यय	१७१
११.	अग्रज	१५०	४९.	अनन्त	१०९, १६०
१२.	अग्रणी	११५	५०.	अनन्तग	१२९
१३.	अग्रय्	१५०	५१.	अनन्तजित्	१०४
१४.	अग्राह्य	१७३	५२.	अनन्तदीप्ति	११३
१५.	अग्रिम	१५०	५३.	अनन्तधार्मिषि	१८६
१६.	अचल	१२८	५४.	अनन्तर्द्धि	१५०
१७.	अचलस्थिति	११४	५५.	अनन्तशक्ति	२१५
१८.	अचिन्त्य	१६४	५६.	अनन्तात्मा	१०७
१९.	अचिन्त्यर्द्धि	१५०	५७.	अनन्तौज	२०५
२०.	अचिन्त्यवैभव	१४०	५८.	अनलप्रभ	१९८
२१.	अचिन्त्यात्मा	१०४	५९.	अनश्वर	१०१
२२.	अच्छेद्य	२१५	६०.	अनादिनिधन	१४७
२३.	अच्युत	१०९	६१.	अनामय	११४, २१७
२४.	अज	१०६	६२.	अनाश्वान्	१७१
२५.	अजन्मा	१०६	६३.	अनिद्रालु	२०७
२६.	अजर	१०९	६४.	अनिन्द्रिय	१४८
२७.	अजर्य	१०९	६५.	अनिन्द्य	१६७
२८.	अजात	१७१	६६.	अनीदृक्	१८७
२९.	अजित	१६९	६७.	अनीश्वर	१०३
३०.	अणिष्ठ	१२२	६८.	अनुत्तर	१३३
३१.	अणोरणीयान्	१७६	६९.	अन्तकृत्	१६८
३२.	अतन्द्रालु	२०७	७०.	अपारधी	२१२
३३.	अतीन्द्र	१४८	७१.	अपुनर्भव	१००
३४.	अतीन्द्रिय	१४८	७२.	अप्रतर्क्यात्मा	१८०
३५.	अतीन्द्रियार्थदृक्	१४८	७३.	अप्रतिर्घ	२०१
३६.	अतुल	१४०	७४.	अप्रतिष्ठ	२०३
३७.	अघर्मघक्	१२६	७५.	अप्रमेयात्मा	१६३
३८.	अधिक	१७१	७६.	अबन्धन	१०४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०
७७. अभयंकर	२११	११८. आत्मा	१६५	१५९. कान्तिमान्	२०२	२००. गम्यात्मा	१८८
७८. अभव	११८	११९. आदित्यवर्ण	१९७	१६०. कामद्	१६७	२०१. गरिष्ठ	१२२
७९. अभिनन्दन	१६७	१२०. आदिदेव	१९२	१६१. कामधेनु	१६७	२०२. गरिष्ठगी	१२२
८०. अभीष्टद्	१६८	१२१. आनन्द	१६७	१६२. कामन	१७२	२०३. गरीयसामाद्यगुरु	१७६
८१. अमेद्य	१७१	१२२. आप्त	२०९	१६३. कामहा	१६७	२०४. गहन	१४९
८२. अम्यग्र	१५०	१२३. इज्यार्ह	१७४	१६४. कामारि	१६५	२०५. गिरांपति	१७९
८३. अभ्यर्च्य	१९०	१२४. इत्य	१३४	१६५. कामितप्रद	२०२	२०६. गुण	१३६
८४. अमल	११२	१२५. इन	१८२	१६६. काम्य	१६७	२०७. गुणग्राम	१३७
८५ अमित	१६९	१२६. ईशान	११२	१६७. कारण	१४९	२०८. गुणज्ञ	१३५
८६. अमितज्योति	२०५	१२७. ईशिता	१८२	१६८. कूटस्थ	११४	२०९. गुणनायक	१३५
८७. अमितशासन	१६९	१२८. उत्तम	१७१	१६९. कृत्कृत्य	१३०	२१०. गुणाकर	१३५
८८. अमूर्त	१८७	१२९. उत्सन्नदोष	२११	१७०. कृतक्रतु	१३०	२११. गुणादरी	१३६
८९. अमूर्तात्मा	१२८	१३०. उदारधी	१७९	१७१. कृतक्रिय	१३४	२१२. गुणाम्भोधि	१३५
९०. अमृत	१२७	१३१. उद्भव	१४९	१७२. कृतज्ञ	१८०	२१३. गुणोच्छेदी	१३६
९१. अमृतात्मा	१३०	१३२. उपमाभूत	१८७	१७३. कृतपूर्वांगविस्तर	१९२	२१४. गुण्य	१३७
९२. अमृतोद्भव	१३०	१३३. ऋत्विक्	१२७	१७४. कृतलक्षण	१८०	२१५. गृप्तिभृत्	१७८
९३. अमृत्यु	१३०	१३४. ऋषभ	१४३	१७५. कृतान्तकृत्	१२९	२१६. गुरु	१६०
९४. अमेय	१५७	१३५. एक	१८७	१७६. कृतान्तान्त	१२९	२१७. गुह्य	१४९
९५. अमेयर्द्धि	१५०	१३६. एकविद्य	१४१	१७७. कृतार्थ	१३०	२१८. गूढगोचर	१९६
९६. अमेयात्मा	१०४	१३७. क	१३३	१७८. कृती	१३०	२१९. गूढात्मा	१९६
९७. अमोघ	२०१	१३८. कनकप्रभ	१९७	१७९. कृपालु	२१६	२२०. गोप्ता	१७८
९८. अमोघवाक्	१८४	१३९. कनत्कांचनसन्निभ	१९९	१८०. केवलज्ञानवीक्षण	२१५	२२१. गोप्य	१९६
९९. अमोघशासन	१८४	१४०. कर्त्ता	१४९	१८१. केवली	११२	२२२. ग्रामणी	११५
१००. अमोघाज्ञ	१८४	१४१. कर्मकाष्ठाशुशुक्षाण	२१४	१८२. क्षम	२०१	२२३. चतुरानन	१७४
१०१. अमोमुह	२०४	१४२. कर्मठ	२१४	१८३. क्षमो	१७३	२२४. चतुरास्य	१७४
१०२. अयोनिज	१०६	१४३. कर्मण्य	२१४	१८४. क्षान्त	१६१	२२५. चतुर्मुख	१७४
१०३. अरजा	११२	१४४. कर्मशत्रुघ्न	२०६	१८५. क्षान्तिपरायण	१८९	२२६. चतुर्वक्त्र	१७४
१०४. अरिंजय	१६७	१४५. कर्महा	१८३	१८६. क्षान्तिभाक्	१२६	२२७. चराचरगुरु	१९६
१०५. अर्हत्	११२	१४६. कलातीत	१९४	१८७. क्षेत्रज्ञ	१२१	२२८. चिन्तामणि	१६८
१०६. अलेप	१८५	१४७. कलाधर	१९४	१८८. क्षेमंकर	१७३	२२९. जगच्चूड़ामणि	२०६
१०७. अविज्ञेय	१८०	१४८. कलिघ्न	२०६	१८९. क्षेमकृत्	१६५	२३०. जगज्ज्येष्ठ	१०३
१०८. अव्यय	१०९	१४९. कलिलघ्न	१९४	१९०. क्षेमधर्मपति	१७३	२३१. जगज्योति	११४, २०७
१०९. अशोक	१३३	१५०. कल्पवृक्ष	२१३	१९१. क्षेमशासन	१६५	२३२. जगत्पति	१०४, ११८
११०. असंख्येय	१६३	१५१. कल्य	१९३	१९२. क्षेमी	१७३	२३३. जगत्पाल	२१७
१११. असंग	१२४	१५२. कल्याण	१९३	१९३. गणज्येष्ठ	१३५	२३४. जगदग्रज	१९५
११२. असंगात्मा	१२६	१५३. कल्याणप्रकृति	१९४	१९४. गणाग्रणी	१३५	२३५. जगदादिज	१४७
११३. असभूष्णु	११०	१५४. कल्याणलक्षण	१९३	१९५. गणाधिप	१३५	२३६. जगद्गर्भ	१८१
११४. असंस्कृत-सुसंस्कार	१६८	१५५. कल्याणवर्ण	१९३	१९६. गण्य	१३५	२३७. जगद्धित	१०८
११५. अहमिन्द्रार्च्य	१४८	१५६. कवि	१४३	१९७. गतस्पृह	१८५	२३८. जगद्धितैषी	१९५
११६. आत्मज्ञ	१६२	१५७. कान्त	१६८	१९८. गति	१४२	२३९. जगद्योनि	१३४
११७. आत्मभू	१००	१५८. कान्तगु	१६८	१९९. गम्भीरशासन	१८२	२४०. जगद्बन्धु	१९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं० नाम	श्लोक संख्या	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०
२४१. जगद्विभु	१९५	२८२. त्यागी	१८४	३२३. द्रढीयान्	१८२	३६४. निरम्बर	२०४
२४२. जगन्नाथ	१९५	२८३. त्राता	१४२	३२४. धर्मघोषण	१८३	३६५. निरस्तैना	१३९
२४३. जरन	१२४	२८४. त्रिकालदर्शी	१९१	३२५. धर्मचक्रायुध	१८३	३६६. निराबाध	११३
२४४. जागरूक	२०७	२८५. त्रिकालविषयार्थदृक्	१८८	३२६. धर्मचक्री	१०६	३६७. निराशंस	२०४
२४५. जातरूप	१४६	२८६. त्रिजगत्पतिपूज्यांघ्रि	१९०	३२७. धर्मतीर्थकृत्	११५	३६८. निरास्रव	१३९
२४६. जातरूपाभ	२००	फ्र८७. त्रिजगत्परमेश्वर	११०	३२८. धर्मदेशक	२१६	३६९. निराहार	१३९
२४७. जितकामारि	१६९	२८८. त्रिजगद्वल्लभ	१९०	३२९. धर्मनेमि	१८३	३७०. निरुक्तवाक्	२०९
२४८. जितक्रोध	१६९	२८९. त्रिजगन्मंगलोदय	१९०	३३०. धर्मपति	११५	३७१. निरुक्तोक्ति	११
२४९. जितक्लेश	१६९	२९०. त्रिदशाध्यक्ष	१८२	३३१. धर्मपाल	२१७	३७२. निरुत्तर	१७
२५०. जितजेय	१३४	२९१. त्रिनेत्र	२१५	३३२. धर्मयूप	१८३	३७३. निरुत्सुक	१७२
२५१. जितमन्मथ	२०८	२९२. त्रिपुरारि	२१५	३३३. धर्मराज	२०७	३७४. निरुद्भव	१८५
२५२. जिताक्ष	२०८	२९३. त्रिलोकाग्रशिखामणि	१९०	३३४. धर्मसाम्राज्यनायक	२१७	३७५. निरुपद्रव	१३८
२५३. जितानंग	२१६	२९४. त्रिलोचन	२१५	३३५. धर्माचार्य	२१६	३७६. निरुपल्लव	१३९
२५४. जितान्तक	१६९	२९५. त्र्यक्ष	२१५	३३६. धर्मात्मा	११५	३७७. निर्गुण	१३६
२५५. जितामित्र	१६९	२९६. त्र्यम्बक	२१५	३३७. धर्माध्यक्ष	१११	३७८. निर्ग्रन्थेश	२०४
२५६. जितेन्द्रिय	१८६	२९७. दक्ष	१६६	३३८. धर्माराम	१३७	३७९. निर्द्वन्द	१३८
२५७. जिन	१०४	२९८ दक्षिण	१६६	३३९. धर्म्य	११५	३८०. निर्धूतागस्	१३९
२५८. जिनेन्द्र	१७०	२९९. दमतीर्थेश	१६४	३४०. धाता	१०२	३८१. निर्निमेष	१३९
२५९. जिनेश्वर	१०३	३००. दमी	१८९	३४१. धातु	१७४	३८२. निर्मद	१३८
२६०. जिष्णु	१०४	३०१. दमीश्वर	१११, १७८	३४२. धिषण	१७९	३८३. निर्मल	१२८, १८४
२६१. जेता	१०६	३०२. दयागर्भ	१८१	३४३. धीन्द्र	१४८	३८४. निर्मोह	१३८
२६२. ज्ञानगर्भ	१८१	३०३. दयाध्वज	१०६	३४४. धीमान्	१७९	३८५. निर्लेप	१२८
२६३. ज्ञानचक्षु	२०४	३०४. दयानिधि	२१६	३४५. धीर	१८२	३८६. निर्विघ्न	२११
२६४. ज्ञानधर्मदमप्रभु	१३२	३०५. दयायाग	१८३	३४६. धीरधी	२१२	३८७. निश्चल	२११
२६५. ज्ञाननिग्राह्य	१७३	३०६. दवीयान	१७६	३४७. धीश	१४१	३८८. निष्कलंक	१३९
२६६. ज्ञानसर्वग	१६४	३०७. दान्त	१८९	३४८. धीश्वर	१०९	३८९. निष्कलंकात्मा	१८५
२६७. ज्ञानात्मा	११३	३०८. दान्तात्मा	१६४	३४९. धुर्य	१५९	३९०. निष्कल	११३
२६८. ज्ञानाब्धि	२०५	३०९. दिग्वासा	२०४	३५०. ध्यातमहाधर्म	१६२	३९१. निष्किंचन	२०४
२६९. ज्येष्ठ	१२२	३१०. दिव्य	१११	३५१. ध्यानगम्य	१७३	३९२. निष्क्रिय	१३९
२७०. ज्योतिर्मूर्ति	२०५	३११. दिव्यभाषापति	१११	३५२. ध्येय	१०८	३९३. निष्टप्तकनकच्छाय	१९९
२७१. ज्वलज्ज्वलनसप्रभ	१९६	३१२. दिष्टि	१८७	३५३. नन्द	१६७	३९४. निःसपत्न	१८६
२७२. तनुनिर्मुक्त	२१०	३१३. दीप्त	२०६	३५४. नन्दन	१६७	३९५. नीरजस्क	१८५
२७३. तन्त्रकृत्	१२९	३१४. दीप्तकल्याणात्मा	१९४	३५५. नयोतुंग	१८०	३९६. नेता	११५
२७४. तपनीयनिभ	१९८	३१५. दुन्दुभिस्वन	१७०	३५६. नानैकतत्त्वदृक	१८७	३९७. नेदीयान्	१७६
२७५. तप्तचामीकरच्छवि	१९८	३१६. दुराधर्ष	१७२	३५७. नाभिज	१७१	३९८. नैक	१८७
२७६. तप्तजाम्बूनदद्युति	२००	३१७. दूरदर्शन	१७६	३५८ नाभिनन्दन	१७०	३९९. नैकधर्मकृत्	१८०
२७७. तमोपह	२०५	३१८. दृढ़व्रत	१९१	३५९. नाभेय	१७१	४००. नैकरूप	१८०
२७८. तीर्थकृत्	११२	३१९. देव	१८३	३६०. नित्य	१३०	४०१. नैकात्मा	१८०
२७९. तुंग	१९८	३२०. देवदेव	१९५	३६१. नियमितेन्द्रिय	२१३	४०२. न्यायशास्त्रकृत्	११५
२८०. तेजोमय	२०५	३२१. दैव	१८७	३६२. निरंजन	११४	४०३. पंचब्रह्ममय	१०५
२८१. तेजोराशि	२०५	३२२. द्युम्नाभ	२००	३६३. निरक्ष	१४४	४०४. पति	१४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०
४०५. पद्मगर्भ	१८१	४४६. पुराणाद्य	१९२	४८७. प्रभूतविभव	११८	५२८. ब्रह्मोद्यावित	१०७
४०६. पद्मनाभि	१३३	४४७. पुरातन	११०	४८८. प्रभूतात्मा	११८	५२९. भगवान्	११२
४०७. पद्मयोनि	१३४	४४८. पुरु	१४३	४८९. प्रभुष्णु	१०९	५३०. भदन्त	२१३
४०८. पद्मविष्टर	१३३	४४९. पुरुदेव	१९२	४९०. प्रमाण	१६६	५३१. भद्र	२१३
४०९. पद्मसम्भूति	१३३	४५०. पुरुष	१९२	४९१. प्रमामय	२०७	५३२. भद्रकृत्	२१३
४१०. पद्मेश	१३३	४५१. पुष्करेक्षण	१४४	४९२. प्रवक्ता	२१०	५३३. भर्ता	११६
४११. परंज्योति	११०, १११	४५२. पुष्कल	१४४	४९३. प्रशमाकर	१६३	५३४. भर्माभ	१९७
४१२. परंब्रह्म	१३१	४५३. पुष्ट	२०१	४९४. प्रशमात्मा	१३२	५३५. भव	११७
४१३. पर	१०५	४५४. पुष्टिट्	२०१	४९५. प्रशान्त	१८६	५३६. भवतारक	१४९
४१४. परतर	१०५	४५५. पूजार्ह	११२	४९६. प्रशान्तरसशैलूष	२०८	५३७. भवान्तक	११७
४१५. परम	१४२, १६५	४५६. पूज्य	१९१	४९७. प्रशान्तात्मा	१३२	५३८. भवोद्भव	१०९
४१६. परमात्मा	११०	४५७. पूत	१३६	४९८. प्रशान्तारि	१०७	५३९. भव्यपेटकनायक	२०८
४१७. परमानन्द	१७०, १८९	४५८. पूतवाक्	१११	४९९. प्रशास्ता	२०१	५४०. भव्यबन्धु	१०४
४१८. परमेश्वर	१४९	४५९. पूतशासन	१११	५००. प्रष्ठ	१२२	५४१. भाव	११७
४१९. परमेष्ठी	१०५	४६०. पूतात्मा	१११	५०१. प्रसन्नात्मा	१३२	५४२. भास्वान्	११७
४२०. परमोदय	१६५	४६१. पूर्व	१९२	५०२. प्रांशु	२१४	५४३. भिषग्वर	१४२
४२१. परात्मज्ञ	१८९	४६२. पृथिवीमूर्ति	१२६	५०३. प्राकृत	१६८	५४४. भुवनेश्वर	११३
४२२. परापर	१८९	४६३. पृथु	२०३	५०४. प्राग्रहर	१५०	५४५. भुवनैकपितामह	१४३
४२३. परार्ध्य	१४९	४६४. प्रकाशात्मा	१९६	५०५. प्राग्य	१५०	५४६. भूतनाथ	११८
४२४. परिवृढ	१४१	४६५. प्रकृति	१६५	५०६. प्राज्ञ	२१३	५४७. भूतभव्यभवद्भर्ता	१२१
४२५. पवित्र	१४२	४६६. प्रक्षीणबन्ध	१६५	५०७. प्राण	१६६	५४८. भूतभावन	११७
४२६. पाता	१४२	४६७. प्रजापति	११३	५०८. प्राणतेश्वर	१६६	५४९. भूतभृत्	११७
४२७. पापापेत	१३८	४६८. प्रजाहित	२०१	५०९. प्राणद	१६६	५५०. भूतात्मा	११७
४२८. पारग	१४९	४६९. प्रज्ञापारमित	२१३	५१०. प्राप्तमहाकल्याणपंचक	१५५	५५१. भोक्ता	१००
४२९. पावन	१४२	४७०. प्रणत	१६६	५११. प्रेष्ठ	१२२	५५२. भ्राजिष्णु	१०९
४३०. पिता	१४२	४७१. प्रणव	१६६	५१२. बंहिष्ठ	१२२	५५३. मंगल	१८६
४३१. पितामह	१४२	४७२. प्रणिधि	१६६	५१३ बन्धमोक्षज्ञ	२०८	५५४. मनीषी	१७९
४३२. पुण्य	१३५	४७३. प्रणेता	११५	५१४. बहुश्रुत	१२०	५५५. मनु	१७१
४३३. पुण्यकृत्	१३७	४७४. प्रतिष्ठाप्रसव	१४३	५१५. बालाकाभ	१९८	५५६, मनोज्ञांग	१८२
४३४. पुण्यगी	१३६	४७५. प्रतिष्ठित	२०३	५१६. बुद्ध	१०८	५५७. मनोहर	१८२
४३५. पुण्यधी	१३७	४७६. प्रत्यग्र	१५०	५१७. बुद्धबोध्य	१४५	५५८. मन्ता	१५८
४३६. पुण्यनायक	१३६	४७७. प्रत्यय	१७२	५१८. बुद्धसन्मार्ग	२१२	५५९. मन्त्रकृत्	१२९
४३७. पुण्यराशि	२१७	४७८. प्रथित	२०३	५१९. बृहद्बृहस्पति	१७९	५६०. मन्त्रमूर्ति	१२९
४३८. पुण्यरीकाक्ष	१४४	४७९. प्रथीयान्	२०३	५२०. ब्रह्मतत्वज्ञ	१०७	५६१. मन्त्रवित्	१२९
४३९. पुण्यवाक्पूत	१३६	४८०. प्रदीप्त	२००	५२१. ब्रह्मनिष्ठ	१३१	५६२. मन्त्रो	१२९
४४०. पुण्यशासन	१३७	४८१. प्रधान	१६५	५२२ ब्रह्मयोनि	१०६	५६३. मलघ्न	२०९
४४१. पुण्यापुण्यनिरोधक	१३७	४८२. प्रबुद्धात्मा	१०८	५२३. ब्रह्मविद्	१०७	५६४. मलहा	१८६
४४२. पुमान्	१४२	४८३. प्रभव	११७	५२४. ब्रह्मसम्भव	१३१	५६५. महर्धिक	१४५
४४३. पुराण	१९२	४८४. प्रभविष्णु	१०९	५२५. ब्रह्मा	१०५	५६६. महर्षि	१५९
४४४. पुराणपुरुष	१४३	४८५. प्रभास्वर	१८१	५२६. ब्रह्मात्मा	१३१	५६७. महसांधाम	१५९
४४५. पुराणपुरुषोत्तम	१३२	४८६. प्रभु	१००	५२७. ब्रह्मेट	१३१	५६८. महसांपति	१५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०
५६९. महाकर्मारिहा	१६२	६१०. महाभवाब्धिसंतारी	१६१	६५१. मह्य	१५७	६९२. लोकधाता	१९१
५७०. महाकवि	१५३	६११. महाभाग	१५३	६५२. मारजित	२१०	६९३. लोकपति	२१२
५७१. महाकान्ति	१५४	६१२. महाभूतपति	१६०	६५३. मुक्त	११३	६९४. लोकवत्सल	२११
५७२. महाकान्तिधर	१५७	६१३. महाभूति	१५२	६५४. मुनि	१४१	६९५. लोकाध्यक्ष	१७८
५७३. महाकारुणिक	१५८	६१४. महामूर्ख	१५६	६५५. मुनिज्येष्ठ	२०२	६९६. लोकालोकप्रकाशक	२०६
५७४. महाकीर्ति	१५४	६१५. महामति	१५३	६५६. मुनीन्द्र	१७०	६९७. लोकेश	१९१
५७५. महाक्रोधरिपु	१६०	६१६. महामन्त्र	१५८	६५७. मुनीश्वर	१८३	६९८. लोकोत्तर	२१२
५७६. महाक्लेशांकुश	१६०	६१७. महामहपति	१५५	६५८. मुमुक्षु	२०८	६९९. वचसामीश	२१०
५७७. महाक्षम	१५६	६१८. महामहा	१५४	६५९. मूर्तिमान्	१८७	७००. वदतांवर	१४६
५७८. महाक्षान्ति	१५३	६१९. महामुनि	१५६	६६०. मूलकर्त्ता	२०९	७०१. वन्द्य	१६७
५७९. महागुण	१५४	६२०. महामैत्री	१५७	६६१. मूलकारण	२०९	७०२. वरद	१४२
५८०. महागुणाकर	१६१	६२१. महामोहाद्रिसूदन	१६१	६६२. मृत्युञ्जय	१३०	७०३. वरप्रद	२१३
५८१. महाघोष	१५८	६२२. महामौनी	१५६	६६३. मोक्षज्ञ	२०८	७०४. वरिष्ठधी	१२२
५८२. महाज्योति	१५२	६२३. महायज्ञ	१५६	६६४. मोहारिविजयी	१०६	७०५. वरेण्य	१३६
५८३. महाज्ञान	१५४	६२४. महायति	१५८	६६५. यजमानात्म	१२७	७०६. वर्धमान	१४५
५८४. महातपा	१५१	६२५ महायशा	१५१	६६६. यज्ञ	१२७	७०७. वर्य	१४२
५८५. महातेजा	१५१	६२६. महायोग	१५४	६६७. यज्ञपति	१२७	७०८. वर्षीयान	१४३
५८६. महात्मा	१५९	६२७. महायोगीश्वर	१६१	६६८. यज्ञांग	१२७	७०९. वशी	१६०
५८७. महादम	१५६	६२८. महावपु	१५४	६६९. यति	२१३	७१०. वश्येन्द्रिय	१८६
५८८. महादान	१५४	६२९. महावित्	१४१	६७०. यतीन्द्र	१७०	७११. वह्निमूर्ति	१२६
५८९. महादेव	१६२	६३०. महावीर्य	१५२	६७१. यतीश्वर	१०७	७१२. वागीश्वर	२०९
५९०. महाद्युति	१५२	६३१. महाव्रत	१६२	६७२. युगज्येष्ठ	१९३	७१३. वाग्मी	१७९
५९१. महाधामा	१५२	६३२. महाव्रतपति	१५७	६७३. युगमुख्य	१९३	७१४. वाचस्पति	१७९
५९२. महाधृति	१५१	६३३. महाशक्ति	१५२	६७४. युगादि	१४७	७१५. वातरशन	२०४
५९३. महाध्यानपति	१६२	६३४. महाशील	१५६	६७५. युगादिकृत्	१४७	७१६. वायुमूर्ति	१२६
५९४. महाध्यानी	१५६	६३५. महाशोकध्वज	१३३	६७६. युगादिपुरुष	१०५	७१७. विकलंक	१९४
५९५. महाध्वरधर	१५९	६३६. महासत्त्व	१५१	६७७. युगादिस्थितिदेशक	१९३	७१८. विकल्मष	१९४
५९६. महाधैर्य	१५२	६३७. महासम्पत्	१५२	६७८. युगाधार	१४७	७१९. विक्रमी	१७२
५९७. महान्	१४८	६३८. महितोदय	१५९	६७९. योगिवन्दित	१८८	७२०. विघ्नविनाशक	२०६
५९८. महानन्द	१५३	६३९. महिष्ठवाक्	१५९	६८०. योगविद्	१२५, १८८	७२१. विजर	१२४
५९९. महानाद	१५८	६४०. महेज्य	१५८	६८१. योगात्मा	१६४	७२२. विजितान्तक	१२३
६००. महानीति	१५३	६४१. महेन्द्र	१४८	६८२. योगी	१०७	७२३. विदांवर	१४६
६०१. महापराक्रम	१६०	६४२. महेन्द्रमहित	१४८	६८३. योगीन्द्र	१७०	७२४. विद्यानिधि	१४१
६०२. महाप्रभ	१२८	६४३. महेन्द्रवन्द्य	१७०	६८४. योगीश्वरार्चित	१०७	७२५. विद्वान्	१२५
६०३. महाप्रभु	१५५	६४४. महेशिता	१६२	६८५. रत्नगर्भ	१८१	७२६. विधाता	१२५
६०४. महाप्राज्ञ	१५३	६४५. महेश्वर	१५५	६८६. रुक्माभ	१९७	७२७. विधि	१०२
६०५. महाप्राणिहार्याधीश	१५५	६४६. महोदय	१५१, १५३	६८७. लक्ष्मण्य	१४४	७२८. विनेता	१४१
६०६. महाबल	१५२	६४७. महोदर्क	१५१	६८८. लक्ष्मीपति	२०७	७२९. विनेयजनताबन्धु	१२५
६०७. महाबोधि	१४५	६४८. महोपाय	१५७	६८९. लक्ष्मीवान्	१८२	७३०. विपापात्मा	१३८
६०८. महाब्रह्मपति	१३१	६४९. महोमय	१५७	६९०. लोकचक्षु	२१२	७३१. विपाप्मा	१३८
६०९. महाब्रह्मपदेश्वर	१३१	६५०. महौदार्य	१५९	६९१. लोकज्ञ	१९५	७३२. विपुलज्योति	१४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०
७३३. विभय	१२४	७७४. विश्वसृट्	१२३	८१५. शीतकुम्भनिभप्रभ	१९९	८५६. सत्यवाक्	१७५
७३४. विभव	११७, १२४	७७५. विश्वात्मा	१०१	८१६. शान्त	१३८	८५७. सत्यविज्ञान	१७५
७३५. विभावसु	११०	७७६. विश्वासी	१२३	८१७. शान्तारि	२१६	८५८. सत्यशासन	१७५
७३६. विभु	१०२	७७७. विश्वेट	१२३	८१८. शान्ति	२०२	८५९. सत्यसन्धान	१७५
७३७. विमुक्तात्मा	१८६	७७८. विश्वेश	१०२	८१९. शान्तिकृत्	२०२	८६०. सत्यात्मा	१७५
७३८. वियोग	१२५	७७९. विष्टरश्रवा	१६४	८२०. शान्तिद्	२०२	८६१. सत्याशी	१७५
७३९. विरजा	११२	७८०. विहितान्तक	१४१	८२१. शान्तिनिष्ठ	२०२	८६२. सदागति	१७७
७४०. विरत	१२४	७८१. वीतकल्मष	१३८	८२२. शान्तिभाक्	१२६	८६३. सदातृप्त	१७७
७४१. विराग	१२४	७८२. वीतभी	२११	८२३. शाश्वत्	१०२	८६४. सदाभावी	१८८
७४२. विलीनाशेषकल्मष	१२५	७८३. वीत्मत्सर	१२४	८२४. शासिता	२०१	८६५ सदाभोग	१७७
७४३. विविक्त	१२४	७८४. वीतराग	१८५	८२५. शास्ता	११५	८६६. सदायोग	१७७
७४४. विवेद	१४६	७८५. वीर	१२४	८२६. शिव	१०५	८६७. सदाविद्य	१७७
७४५. विशाल	१४०	७८६. वृष	११६	८२७. शिवताति	२०२	८६८. सदाशिव	१७७
७४६. विशिष्ट	१७२	७८७. वृषकेतु	११६	८२८. शिवप्रद	२०२	८६९. सदासौख्य	१७७
७४७. विशोक	१२४	७८८. वृषपति	११६	८२९. शिष्ट	१७२	८७०. सदोदय	१७७
७४८. विश्रुत	१२०	७८९. वृषभ	१००, १४३	८३०. शिष्टभुक्	१७२	८७१. सद्योजात	१९६
७४९. विश्वकर्मा	१०३	७९०. वृषभध्वज	११६	८३१. शिष्टेष्ट	२०१	८७२. सनातन	१०५
७५०. विश्वजित्	१२३	७९१. वृषभांक	११६	८३२. शीलसागर	२०५	८७३. सन्ध्याभ्रबभ्रु	१९८
७५१. विश्वज्योति	१०३	७९२. वृषाधीश	११६	८३३. शुचि	११२	८७४. समग्रधी	१५०
७५२. विश्वतश्चक्षु	१०१	७९३. वृषायुध	११६	८३४. शुचिश्रवा	१२०	८७५. समन्तभद्र	२१६
७५३. विश्वतःपाद	१२०	७९४. वृषोद्भव	११६	८३५. शुद्ध	१०८, २१२	८७६. समयज्ञ	१८४
७५४. विश्वतोमुख	१०२	७९५. वेदवित्	१४६	८३६. शुभंयु	२१७	८७७. समाहित	१८४
७५५. विश्वदृक्	१०३	७९६. वेदवेद्य	१४६	८३७. शुभलक्षण	१४४	८७८. समुन्मीलितकर्मारि	२१४
७५६. विश्वदृश्वा	१०२	७९७. वेदांग	१४६	८३८. शूर	१६०	८७९. सर्वक्लेशापह	१६३
७५७. विश्वनायक	१२३	७९८. वेद्य	१४६	८३९ शेमुषीश	१७९	८८०. सर्वग	१९५
७५८. विश्वभावित्	२१०	७९९. वेधा	१०२	८४०. श्रायसोक्ति	२०९	८८१. सर्वज्ञ	११९
७५९. विश्वभुक्	१२३	८००. वैकुतान्तकृत्	१६८	८४१. श्रीगर्भ	११८	८८१. सर्वत्रग	१८८
७६०. विश्वभू	१००	८०१. व्यक्त	१४७	८४२. श्रीनिवास	१७४	८८३. सर्वदर्शन	११९
७६१. विश्वभूतेश	१०३	८०२. व्यक्तवाक्	१४७	८४३. श्रीपति	११२	८८४. सर्वदिक्	११९
७६२. विश्वभुट	१२३	८०३. व्यक्तशासन	१४७	८४४. श्रीमान्	१००	८८५. सर्वदोषहर	१६३
७६३. विश्वमूर्ति	१०३	८०४. व्योममूर्ति	१२८	८४५. श्रीवृक्षलक्षण	१४४	८८६. सर्वयोगीश्वर	१६४
७६४. विश्वयोनि	१०१	८०५. शंकर	१८९	८४६. श्रीश	२११	८८७. सर्वलोकजित	११९
७६५. विश्वरीश	१०४	८०६. शंवद्	१८९	८४७. श्रीश्रितपादाब्ज	२११	८८८. सर्वलोकातिग	१९१
७६६. विश्वरूपात्मा	१२३	८०७. शंवान्	२०६	८४८. श्रुतात्मा	१६४	८८९ सर्वलोकेश	११९
७६७. विश्वलोकेश	१०१	८०८. शक्त	११३	८४९. श्रेयान्	२०९	८९०. सर्वलोकैकसारथि	१९१
७६८. विश्वलोचन	१०२	८०९. शत्रुघ्न	२०१	८५०. श्रेयोनिधि	२०३	८९१. सर्ववित्	११९
७६९. विश्वविद्	१०१	८१०. शमात्मा	१६३	८५१. श्रेष्ठ	१२२	८९२. सर्वात्मा	११९
७७०. विश्वविद्यामहेश्वर	१२१	८११. शमी	१६१	८५२. श्लक्ष्ण	१४४	८९३. सर्वादि	११९
७७१. विश्वविद्येश	१०१	८१२. शम्भव	१००	८५३. सत्य	१७५	८९४. सलिलात्मक	१२६
७७२. विश्वव्यापी	१०२	८१३. शम्भु	१००	८५४. सत्यकृत्य	१३०	८९५. सहस्रपात	१२१
७७३. विश्वशीर्ष	१२०	८१४. शरण्य	१३६	८५५. सत्यपरायण	१७५	८९६. सहस्रशीर्ष	१२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०	क्र० सं० नाम	श्लोक सं०
८९७. सहस्राक्ष	१२१	९२२. सुदर्शन	१८१	९४७. सूक्ष्म	१०५	९७२. स्वभू	२०१
८९८. सहिष्णु	१०९	९२३. सुधी	१२५, १७१	९४८. सूक्ष्मदर्शी	२१६	९७३. स्वयंज्योति	१०६
८९९. साक्षी	१४१	९२४. सुधौतकलधौतश्री	२००	९४९. सूनृतपूतवाक्	२१२	९७४. स्वयंप्रभ	१००, ११८
९००. साधु	१६३	९२५. सुनय	१७४	९५०. सूरि	१२०	९७५. स्वयंबुद्ध	११३
९०१. सार्व	११९	९२६. सुनयतत्त्वविद्	१४०	९५१. सूर्यकोटिसमप्रभ	१९७	९७६. स्वयंभू	१००
९०२ सिद्ध	१०८	९२७. सुप्रभ	१९७	९५२. सूर्यमूर्ति	१२८	९७७. स्वयंभूष्णु	११०
९०३. सिद्धशासन	१०८	९२८. सुप्रसन्न	१३२	९५३. सोममूर्ति	१२८	९७८. स्वर्णाभ	१९९
९०४. सिद्धसंकल्प	१४५	९२९. सुभग	१८४	९५४. सौम्य	१७८	९७९. स्वसंवेद्य	१४६
९०५. सिद्धसाधन	१४५	९३०. सुभुत	१४०	९५५ स्तवनार्ह	१३४	९८०. स्वस्थ	१८५
९०६. सिद्धसाध्य	१०८	९३१. सुमुख	१७८	९५६. स्तुतीश्वर	१३४	९८१. स्वामी	१७२
९०७. सिद्धात्मा	१४५	९३२. सुमेधा	१७२	९५७. स्तुत्य	१३४	९८२. स्वास्थ्यभाक	१८५
९०८. सिद्धान्तविद्	१०८	९३३. सुयज्वा	१२७	९५८. स्थविर	१२२	९८३. हतदुर्नय	२१०
९०९. सिद्धार्थ	१०८	९३४. सुरूप	१८४	९५९. स्थविष्ठ	१२२	९८४. हर	१६३
९१०. सिद्धि	१४५	९३५. सुवर्णवर्ण	१९७	५६०. स्थवीयान्	१७६	९८५. हवि	१२७
९११. सुकृती	१७४	९३६. सुवाक्	१२०	९६१. स्थाणु	११४	९८६. हाटकद्यु ति	२००
९१२. सुखद्	१७८	९३७. सुविधि	१२५	९६२. स्थावर	२०३	९८७. हिरण्यगर्भ	११८
९१३. सुखसादभूत	२१७	९३८. सुव्रत	१७१	९६३. स्थास्नु	२०३	९८८. हिरण्यनाभि	११७
९१४. सुगत	२१०	९३९. सुश्रुत	१२०	९६४. स्थेयान्	१७६	९८९. हिरण्यवर्ण	१९९
९१५. सुगति	१२०	९४०. सुश्रुत्	१२०	९६५. स्थेष्ठ	१२२	९९०. हृषीकेश	१३४
९१६. सुगुप्त	१७८	९४१. सुसंवृत	१४०	९६६. स्नातक	११२	९९१. हेतु	१४३
९१७. सुगुप्तात्मा	१४०	९४२. सुस्थित	१८५	९६७. स्पष्ट	२०१	९९२. हेमगर्भ	१८१
९१८. सुघोष	१७८	९४३. सुस्थिर	२०३	९६८. स्पष्टाक्षर	२०१	९९३. हेमाभ	१९८
९१९. सुतनु	२१०	९४४. सुसौम्यात्मा	१२८	९६९. स्रष्टा	१३३	९९४. हेयादेयविचक्षण	२१४
९२०. सुत्वा	१२७	९४५. सुहित	१७८	९७०. स्वतन्त्र	१२९		
९२१. सुत्रामपूजित	१२७	९४६. सुहृत	१७८	९७१. स्वन्त	१२९		

वे नाम जिनकी पुनरावृत्ति हुई है

क्रमांक	नाम	श्लोक सं
१.	अधिप	१५७, १८९
२.	अनर्घ	१७२, १८६
३.	अनन्त	१०९, १६०
४.	अनामय	११४, २१७
५.	जगज्जयोति	११४, २०७
६.	जगत्पति	१०४, ११८
७.	दमीश्वर	१११, १७८
८.	निर्मल	१२८, १८४
९.	परंज्योति	११०, १११
१०.	परम	१४२, १६५
११.	परमानन्द	१७०, १८९
१२.	महोदय	१५१, १५३
१३.	योगविद्	१२५, १८८
१४.	विभव	११७, ४२४
१५.	वृषभ	१००, १४३
१६.	शुद्ध	१०८, २१२
१७.	सुधी	१२५, १७१
१८.	स्वयंप्रभ	१००, ११८

महापुराण पर्व २५ (श्लोक ६६ से ९७ तक) में भी आचार्य जिनसेन ने तीर्थंकर वृषभदेव के अनेक नामों का उल्लेख किया है। इनमें कुछ नाम अर्हन्तों के गुणों पर आधारित हैं और कुछ नाम ऐसे हैं जिनका "सहस्रनाम" में भी उल्लेख हो चुका है। कुछ नाम दार्शनिक तत्त्वों पर आधारित हैं। इस अंश का गहराई से अध्ययन करने पर ऐसे भी नाम प्राप्त होते हैं जिनका सहस्रनाम-स्तोत्र में नामोल्लेख नहीं किया गया है तथा अर्हन्त-गुणों पर भी आधारित नहीं हैं। ऐसे नाम हैं—

क्रमांक	नाम	पर्व एवं श्लोक संख्या
१.	अकाय	२५.९१
२.	अन्धकान्तक	२५.७३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३.	अर्धनारीश्वर	२५.७३
४.	इक्ष्वाकुकुलनन्दन	२५.७५
५.	चतुरस्रध	२५.७७
६.	त्रिज्ञ	२५.७७
७.	त्रिधोत्थित	२५.७२
८.	परमतच्छिद	२५.८६
९.	परमतत्त्व	२५.८६
१०.	परमतेजस	२५.८७
११.	परमप्रशममीयुष	२५.७९
१२.	परमरूप	२५.८७
१३.	परमर्षि	२५.८५
१४.	पुरुषस्कन्ध	२५.७६

साधु-मूलगुण

निर्ग्रन्थ साधु के २८ मूलगुण बताये गये हैं। वे हैं—

महाव्रत	५
समिति	५
इन्द्रिय	५
निरोध	५
आवश्यक	६
केशलोंच	१
भू-शयन	१
अदन्त-धावन	१
अचेलता	१
अस्नान	१
स्थित भोजन	१
एकभुक्त	१
	२८

मपु० १८,७०-७२, ६१.११९-१२०

पंच महाव्रत

१. अहिंसा	२. सत्य	३. अचौर्य
४. ब्रह्मचर्य	५. अपरिग्रह	

हपु० २.११६-१२१, ५८.११६

पंच-समिति

१. ईर्या	२. भाषा	३. एषणा
४. आदाननिक्षेपण	५. प्रतिष्ठापना	

हपु० २.१२२-१२६

पंचेन्द्रिय-निरोध

१. स्पर्शन	२. रसना	३. घ्राण
४. चक्षु	५. श्रोत	

इन पाँच इन्द्रियों का निरोध। मपु० १८.७०-७२

षडावश्यक

१. सामायिक	२. स्तुति	३. वन्दना
४. प्रतिक्रमण	५. प्रत्याख्यान	६. कायोत्सर्ग

हपु० ३४.१४२-१४६

सिद्ध परमेष्ठी के आठ गुण

१. अनन्त सम्यक्त्व	२. अनन्त दर्शन	३. अनन्त ज्ञान
४. अनन्त और अद्भुत वीर्य	५. सूक्ष्मत्व	६. अवगाहनत्व
७. अव्याबाधत्व	८. अगुरुलघुत्व	

मपु० २०.२२३-२२४

हरिवंशपुराण में अव्याबाध गुण को अव्याबाध अनन्तसुख कहा गया है। हपु ३.७२-७४

पारिव्राज्यक्रिया के सूत्रपद

१. जाति	२. मूर्ति	३. उसमें रहनेवाले लक्षण	४. अंगसौन्दर्य
५. प्रभा	६. मण्डल	७. चक्र	८. अभिषेक
९. नाथता	१०. सिंहासन	११. उपधान	१२. छत्र
१३. चामर	१४. घोषणा	१५. अशोकवृक्ष	१६. निधि
१७. गृहशोभा	१८. अवगाहन	१९. क्षेत्रज्ञ	२०. आज्ञा
२१. सभा	२२. कीर्ति	२३. वन्दनीयता	२४. वाहन
२५. भाषा	२६. आहार	२७. सुख	

मपु० ३९.१६२-१६५

कुलाचल

१. हिमवान्	२. महाहिमवान्
३. निषध	४. नील
५. रुक्मी	६. शिखरी

महापुराण में 'महामेरु' को सातवाँ कुलाचल कहा है।

मपु० ६३.१९३, हपु० ५.१५

क्षेत्र

१. भरत	२. हैमवत	३. हरिवर्ष	४. विदेह
५. रम्यक	६. हैरण्यवत्	७. ऐरावत्	

मपु० ६३.१९१-१९२, हपु० ५.१३-१४

गजदन्त पर्वत

१. गन्धमादन	२. माल्यवान्
३. विद्युत्प्रभ	४. सौमनस्य

मपु० ६३.२०४-२०५, हपु० ५.२१०-२१२

ग्राम

अचल	मपु० ६२.३३५
अन्तिक	पपु० ५.२८७-२८८
अरुण	मपु० ३५.५-७
पलाल पर्वत	मपु० ६.१२६-१२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलाशकूट	मपु० ७०.२००
पाटलिग्राम	मपु० ६.१२७-१२८
मण्डूक	हपु० ६०.३३
मत्तकोकिल	पपु० १०६.१९०-१९७
मन्दिर	मपु० ७१.३२६
लक्ष्मीग्राम	मपु० ७१.३१७-३४१
वर्धकि	हपु० २७.६१-६४
वृत्ति	मपु० ७६.१५२
शकट	पपु० ५.३५-३६
शालिग्राम	मपु० ७१.४१६

देश

क्र० सं०	नाम देश	सन्दर्भ
१.	अंग	मपु० १६.१५२
२.	अंगारक	हपु० ११.६८
३.	अगर्त	हपु० ११.७१-७३
४.	अन्तरपाद्य	मपु० २९.८०
५.	अन्ध्र	पपु० १०१.८४-८६
६.	अपरान्तक	मपु० १६.१४१-१४८
७.	अभिसार	मपु० १६.१५२-१५५
८.	अमल	पपु० ६.६६-६८
९.	अमृतवती	मपु० ७२.५४
१०.	अर्धवर्वर	पपु० २७.५-६
११.	अलंघन	पपु० ६.६८
१२.	अलका	मपु० ५४.८६
१३.	अवन्ति	मपु० १६.१५२
१४.	अवष्ट	पपु० १०१.८२-८६
१५.	अश्मक	मपु० १६.१४३-१५२
१६.	अस्वष्ट	हपु० ३.३
१७.	आत्रेय	हपु० ११.६६-६७
१८.	आनर्त	मपु० १६.१५३
१९.	आन्ध्र	मपु० १६.१५४
२०.	आभार	मपु० १६.१४१-१४८
२१.	आरट्ट	मपु० १६.१४१-१४८
२२.	आरुल	पपु० १०१.७९-८६
२३.	आवर्त	हपु० ११.७३-७४
२४.	आवृष्ट	हपु० ११.६४-६५
२५.	आसिक	हपु० ११.७०
२६.	उग्र	मपु० १६.१५२
२७.	उत्तमवर्ण	हपु० ११.७४
२८.	उलूक	पपु० १०१.८३-८६
२९.	उशीनर	मपु० १६.१४१-१५३
३०.	उशीरवर्त	हपु० २१.७५
३१.	ओकिक	मपु० २९.८०
३२.	औण्ड्र	मपु० २९.४१, ९३
३३.	ककूश	मपु० २९.६७
३४.	ककोटक	हपु० २१.१२३
३५.	कक्ष	पपु० १०१.७९-८८
३६.	कच्छ	मपु० १६.१४१-१४३
३७.	कच्छकावती	मपु० ६३.२०४-२१३
३८.	कच्छा	हपु० ५.२४५-२४६
३९.	कनीयस	हपु० ३.४
४०.	कमेकुर	मपु० २९.८०
४१.	करहाट	मपु० १६.१४१-१४८
४२.	कर्णकौशल	पापु० १.१३३
४३.	कर्णाट	मपु० १६.१४१-१४८
४४.	कर्बुक	हपु० ११.७१
४५.	कर्मकुर	मपु० २९.८०
४६.	कलिंग	मपु० १६.१४१-१५६
४७.	कल्लीवनोपान्त	हपु० ११.७१
४८.	काक्षि	हपु० ११.७२-७३
४९.	कामरूप	मपु० २९.४२
५०.	कार्ण	हपु० ३.६-७
५१.	काल	पपु० १०१.८४-८६
५२.	कालकूट	मपु० २९.४८
५३.	कालाम्बु	पपु० १०१.७७-७८
५४.	कालिन्द	मपु० २९.४८
५५.	काशी	मपु० १६.१५१-१५२
५६.	काश्मीर	मपु० १६.१५३
५७.	किरात	मपु० २९.४८
५८.	कुटुम्ब	मपु० २९.८०
५९.	कुणाल	मपु० २९.७२
६०.	कुणीयान्	हपु० ११.६५
६१.	कुन्तल	हपु० ११.७०-७१
६२.	कुमुदा	मपु० ६३.२०८-२१६
६३.	कुरु	मपु० १६.१५२
६४.	कुरुजांगल	मपु० १६.१५३
६५.	कुश	हपु० ११.७५
६६.	कुशद्य	हपु० १८.९
६७.	कुशाग्र	हपु० ११.६५
६८.	कुशार्थ	मपु० ७०.९२-९३
६९.	कुसन्ध्य	हपु० ३.३
७०.	कूट	मपु० २९.८०
७१.	केकय	मपु० १६.१५६
७२.	केरल	मपु० १६.१५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम देश	सन्दर्भ
७३.	कैकय	हपु ११.६६
७४.	कोंकण	मपु० १६.१४१-१४८
७५.	कोसल	मपु० १६.१४१-१४८
७६.	कोहर	पपु० १०१.८४-८६
७७.	कोबेर	पपु० १०१.८४-८६
७८.	क्वाथतोय	हपु० ११.६६
७९.	क्षेम	मपु० ७५.४०२
८०.	खड्ग	मपु० ६३.२१३
८१.	खतिलक	पपु० ५५.२९
८२.	गन्धमालिनी	मपु० ५९.१०९
८३.	गन्धा	मपु० ६३.२०८-२१७
८४.	गन्धावत्सुगन्धा	मपु० ६३.२१२
८५.	गन्धिल	मपु० ५.२३०
८६.	गवोधुमत्	पपु० २८.२१९
८७.	गान्धार	पपु० ९४.७
८८.	गौड	मपु० २९.४१
८९.	गौरी	मपु० ४६.१४५
९०.	गौशील	पपु० १०१.८२-८६
९१.	चारु	पपु० १०१.८१
९२.	चिलात	मपु० ३२.४६-४७
९३.	चेदि	मपु० १६.१४१-१४८
९४.	चोल	मपु० १६ १५४
९५.	जालन्धर	पपु० १५.६३
९६.	टंकण	हपु० २१.१०३
९७.	तापस	हपु० ११.७१-७३
९८.	तार्न	हपु० ३.६
९९.	तीर्णकर्ण	हपु० ११.६७
१००.	तुरुष्क	मपु० १६.१५६
१०१.	तुलिंग	हपु० ११.६४
१०२.	तैतिल	मपु० २०.१०७
१०३.	तोयावली	पपु० ६.६६-६८
१०४.	त्रिकलिंग	मपु० २९.७९
१०५.	त्रिगर्त	हपु० ३.३
१०६.	त्रिजट	पपु० १०१.८१
१०७.	त्रिपुर	हपु० ११.७३
१०८.	त्रिशिरिस्	पपु० १०१.८२
१०९.	दशार्ण	मपु० १६.१५३
११०.	दशरुक	हपु० ११.६७
१११.	दाण्डीक	हपु० ११.७०
११२.	दारु	मपु० १६.१५५
११३.	दुर्ग	हपु० ११.७१
११४.	धवल	मपु० ६७.१५६-२५७
११५.	नन्दन	पपु० १०१.७७
११६.	नन्दि	पपु० १०१.७७
११७.	नर्मद	हपु० ११.७२
११८.	नवराष्ट्र	हपु० ११.७०
११९.	नासारिक	हपु० ११.७२
१२०.	नेपात	पपु० १०१.८१
१२१.	नैषध	हपु० ११.७३
१२२.	पंचाल	मपु० १६.१४८
१२३.	पल्लव	मपु० १६.१४१-१४८
१२४.	पाण्ड्य	मपु० २९.८०
१२५.	पारशैल	पपु० १०१.८२-८६
१२६.	पुण्डरीक	पपु० ६४.५०
१२७.	पुण्ड्र	मपु० १६.१४३-१५२
१२८.	पुरुष	हपु० ११.६९-७१
१२९.	प्रच्छाल	हपु० ३.६
१३०.	प्रातर	मपु० २९.७९
१३१.	प्रास्थाल	हपु० ११.६७
१३२.	बाणमुक्त	हपु० ११.६९
१३३.	बाल्हीक	मपु० १६.१४८-१५६
१३४.	बृषाण	पपु० १०१.७९-८६
१३५.	भंग	हपु० ११.७५
१३६.	भगलि	मपु० ४८.१२७
१३७.	भद्र	हपु० ११.७५
१३८.	भद्रकार	हपु० ३.३
१३९.	भरक्षम	पपु० ६.६६
१४०.	भरद्वाज	हपु० ३.६
१४१.	भरुकच्छ	हपु० ११.७२
१४२.	भारद्वाज	हपु० ११.६७
१४२.	भावकुन्तुले	पपु० १०१.७७-७८
१४३.	भीम	पपु० १०१.७७
१४४.	भीरू	पपु० १०१.८१
१४५.	भूतरव	पपु० १०१.७७
१४६.	मंगल	मपु० ७१.२७८
१४७.	मगध	मपु० ५७.७०
१४८.	मत्स्य	हपु० ३.४
१४९.	मद	मपु० २५.२८७
१५०.	मद्रक	हपु० ११.६६-७७
१५१.	मद्रकार	हपु० ११.६४-६५
१५२.	मलय	पपु० ५५.२८
१५३.	महाराष्ट्र	मपु० १६.१५४
१५४.	महिम	हपु० ११.७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम देश	सन्दर्भ
१५५.	महिष	मपु० २९.८०
१५६.	मागध	मपु० २९.३९
१५७.	माणव	मपु० ११.६९
१५८.	मानवार्तिक	हपु० ११.६८
१५९.	मालव	मपु० १६.१५३
१६०.	माल्य	हपु० ११.७१
१६१.	मार्हिषक	हपु० ११.७०
१६२.	माहेभ	हपु० ११.७२
१६३.	मूलक	हपु० ११.७०-७१
१६४.	मृगावती	मपु० ७१.२९१
१६५.	मेमला	पपु० १०१.८३
१६६.	मेघपाद	पापु० १.१३३
१६७.	मोक	हपु० ११.६५
१६८.	यमन	हपु० ५०.७३
१६९.	यवन	मपु० १६.१५५
१७०.	रम्यक	मपु० १६.१५२
१७१.	राष्ट्रवर्धन	हपु० ५०.७०
१७२.	रोधन	पपु० ६.६७-६८
१७२.	लम्पाक	पपु० १०१.७०-७५
१७४.	लाट	मपु० ३०.९७
१७५.	वंग	मपु० १६.१६२
१७६.	वज्रखंडिक	हपु० ११.७५
१७७.	वत्स	मपु० १६.१५३
१७८.	वनवास	मपु० १६.१५४
१७९.	वर्वर	पपु० १०१.८२-८६
१८०.	वाटवान्	हपु० ३.६
१८१.	वाण	मपु० ७०.१०७
१८२.	वानायुज	मपु० ३०.१०७
१८३.	वापि	मपु० ३०.१०७
१८४.	वाल्हीक	मपु० १६.१५६
१८५.	विदर्भ	मपु० १६.१५३
१८६.	विदेह	मपु० १६.१५५
१८७.	विनिहात्र	हपु० ११.७४-७६
१८८.	विन्ध्य	पपु० १०१.८३-८६
१८९.	विराट	पपु० १.१३४
१९०.	वृकार्थक	हपु० ३.४
१९१.	वैदर्भ	हपु० ११.६९
१९२.	वैदिश (विदिशा)	हपु० ११.७४
१९३.	वैद्य	पपु० १०१.८२
१९४.	शक	मपु० १६.१५६
१९५.	शकट	हपु० २७.२०
१९६.	शर्वर	पपु० १०१.८१
१९७.	शलभ	पपु० १०१-७७
१९८.	शिखापद	पपु० १०१-८३
१९९.	शूर	हपु० ११.६६-६७
२००.	शूरसेन	मपु० १६.१५५
२०१.	शौर्य	मपु० ७१.२०१-२०२
२०२.	सक्कापिर	हपु० ११.६९-७६
२०३.	सनर्त	पपु० १०१.८३
२०४.	समुद्रक	मपु० १६.१५२
२०५.	सारसमुच्चय	मपु० ६८.३-४
२०६.	सारस्वत	हपु० ११.७२
२०७.	साल्व	हपु० ११.६५
१०८.	सिन्धु	मपु० १६.१५५
२०९.	सुकोशल	मपु० १६.१५३
२१०.	सुभोटक	पापु० १.१३३-१३४
२११.	सुरम्य	मपु० ६२.८९
२१२.	सुराष्ट्र	मपु० १६.१५४
२१३.	सुवीर	पपु० ३७.८, २३-२५
२१४.	सुसीमा	मपु० ४७.६५-६७
२१५.	सुह्म	मपु० १६.१५२
२१६.	सुह्म	पपु० १०१.४३
२१७.	सूर	हपु० ३.५
२१८.	सूरसेन	हपु० ३.४
२१९.	सूर्पार	हपु० ११.७१, ७६
२२०.	सूर्यारक	पपु० १०१.८३
२२१.	सैतव	हपु० ११.७५
२२२.	सौराष्ट्र	मपु० ३०.९८
२२३.	सौवीर	मपु० १६.१५५
२२४.	हरिवर्ष	मपु० ७०.७४-७५
२२५.	हिण्डिव	पपु० १०१.८२
२२६.	हेमांगद	मपु० ७५.१८८

द्वीप और सागर

द्वीप	सन्दर्भ	सागर	सन्दर्भ
१. जम्बूद्वीप	हपु० ५.२-११	१. लवणसमुद्र	हपु०५.४३०-४८८
२. धातकीखण्ड	हपु० ५.४८९-५६१	२. कालोदधिसागर	हपु० ५.५६२-५७५
३. पुष्करवर	हपु० ५.५७६-५८९	३. पुष्करवर	हपु० ५.६१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वीप	सन्दर्भ	सागर	सन्दर्भ
४. वारुणीवर	हपु० ५.६१४	४. वारुणीवर	हपु० ५.६१४
५. क्षीरवर	हपु० ५.६१४	५. क्षीरोदसागर	हपु० ५.६१४
६. घृतवर	हपु० ५.६१५	६. घृतवर	हपु० ५.६१५
७. इक्षुवर	हपु० ५.६१५	७. इक्षुवर	हपु० ५.६१५
८. नन्दीश्वर	हपु० ५.६१६	८. नन्दीश्वर	हपु० ५.६१६
९. अरुणद्वीप	हपु० ५.६१७	९. अरुणसागर	हपु० ५.६१७
१०. अरुणोद्भास	हपु० ५.६१७	१०. अरुणोद्भास	हपु० ५.६१७
११. कुण्डलवर	हपु० ५.६१८	११. कुण्डलवर	हपु० ५.६१८
१२. शंखवर	हपु० ५.६१८	१२. शंखवर	हपु० ५.६१८
१३. रुचकवर	हपु० ५.६१९	१३. रुचकवर	हपु० ५.६१९
१४. भुजगवर	हपु० ५.६१९	१४. भुजगवर	हपु० ५.६१९
१५. कुशवर	हपु० ५.६२०	१५. कुशवर	हपु० ५.६२०
१६. क्रौंचवर	हपु० ५.६२०	१६. क्रौंचवर	हपु० ५.६२०

आरम्भिक इन सोलह द्वीप-सागरों के आगे असंख्यात द्वीप-सागरों के पश्चात् विद्यमान अन्तिम सोलह द्वीप-सागर

क्र०सं०	द्वीप	सन्दर्भ	क्र०सं०	सागर	सन्दर्भ
१.	मन:शिल	हपु० ५.६२२	१.	मन:शिल	हपु० ५.६२२
२.	हरिताल	हपु० ५.६२२	२.	हरिताल	हपु० ५.६२२
३.	सिन्दूर	हपु० ५.६२३	३.	सिन्दूर	हपु० ५.६२३
४.	श्यामक	हपु० ५.६२३	४.	श्यामक	हपु० ५.६२३
५.	अंजन	हपु० ५.६२३	५.	अंजन	हपु० ५.६२३
६.	हिंगुलक	हपु० ५.६२३	६.	हिंगुलक	हपु० ५.६२३
७.	रूपवर	हपु० ५.६२३	७.	रूपवर	हपु० ५.६२३
८.	सुवर्णवर	हपु० ५.६२४	८.	सुवर्णवर	हपु० ५.६२४
९.	वज्रवर	हपु० ५.६२४	९.	वज्रवर	हपु० ५.६२४
१०.	वैडूर्यवर	हपु० ५.६२४	१०.	वैडूर्यवर	हपु० ५.६२४
११.	नागवर	हपु० ५.६२४	११.	नागवर	हपु० ५.६२४
१३.	भूतवर	हपु० ५.६२५	१२.	भूतवर	हपु० ५.६२५
१३.	यक्षवर	हपु० ५.६२५	१३.	यक्षवर	हपु० ५.६२५
१४.	देववर	हपु० ५.६२५	१४.	देववर	हपु० ५.६२५
१५.	इन्द्रवर	हपु० ५.६२५	१५.	इन्दुवर	हपु० ५.६२५
१६.	स्वयंभूरमण	हपु० ५.६२६	१६.	स्वयंभूरमण	हपु० ५.६२६

कांचन	पपु० ४८.११५-११६	पुष्कर	पपु० ८५.९६
किन्नर	पपु० ३.४४	योधन	पपु० ४८.११५-११६
कुम्भकण्टक	हपु० २१.१२३	रक्षद्वीप	पपु० १.५४
गन्धर्व	पपु० ५.४५	लंका	मपु० ६८.२५६-२५७
गौतम	हपु० ५.४६९-४७०	वानर	पपु० ६.८५
दधिमुख	पपु० ५१.१	शाखामृग	पपु० ६.७०-७१
धरण	पपु० ३.४६	संध्याकार	पपु० ४८.११५-११६
पलाश	मपु० ७५.९७	सुवर्णद्वीप	हपु० २१.१०१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुवेल	पपु० ४८.११५-११६
स्वयंप्रभ	मपु० ७१.४५१-४५२
हंस	पपु० ४८.११५
हनुरुह	पपु० १७.३४४-३४६
हरिसागर	पपु० ४८.११५
ह्लादन	पपु० ४८.११५
अर्धस्वर्गोदय	पपु० ४८.११५-११६
रत्नद्वीप	मपु० ३.१५९
राक्षसद्वीप	पपु० ५.१५२-१५८
क्षीरसागर	हपु० २.४२, ५४
गंगासागर	हपु० ११.३
लौहित्यसागर	मपु० २९.५१

नगर

क्र० सं०	नाम	नगर सन्दर्भ
१.	अंकवती	हपु० ५.२५९
२.	अंगावर्त	मपु० १९.४५
३.	अक्षपुर	पपु० ७७.५७
४.	अक्षोभ्य	मपु० १९.८५-८७
५.	अग्नि ज्वाल	हपु० २२.९०
६.	अन्द्रकपुर	पपु० ३१.२६-२७
७	अमरकंका	हपु० ५४.८
८.	अमलकण्ठ	मपु० ७२.४०-४१
९.	अमृतध्वर	हपु० २२.१००
१०.	अमृतपुर	पपु० ५५.८४-८८
११.	अम्बरतिलक	मपु० १९.८२, ८७
१२.	अम्भोद	पपु० ५.३७३-५७४
१३.	अयोध्या	मपु० ७.४०-४१
१४.	अरजस्का	मपु० १९.४५, ५३
१५.	अरजा	मपु० ६३.२०८-२१६
१६.	अरिंजय	हपु० २२.८६, ९३
१७.	अरिष्टनगर	मपु० ७१.४००, ५६.४६
१८.	अरुण	पपु० १७.१५४
१९.	अरुणोद्भास	हपु० ५.६१७
२०.	अर्कमूल	हपु० २२.९९
२१.	अर्जुनी	मपु० ७८.८७
२२.	अर्धस्वर्गोत्कृष्ट	पपु० ५.३७१-३७२
२३.	अलंकारोदय	पपु० ५.१६३-१६६
२४.	अलकपुर	पपु० २०.२४२-२४४
२५.	अलका	मपु० १९.८२,८७
२६.	अवध्या	मपु० ६३.२०८-२१७
२७.	अशोक	हपु० २२.८९
२८.	अशोकपुर	मपु० ७१.४३२
२९.	अशोका	मपु० १९.८१, ८७
३०.	अश्वपुर	हपु० ५.२६१
३१.	असितपर्वत	हपु० २२.९६
३२.	असुर	पपु० ७.११७
३३.	असुरसंगीत	पपु० ८.१
३४.	असुरोद्गीत	मपु० ३.८-९
३५.	आकाशवल्लभ	पपु० ३.३१४
३६.	आदित्यनगर	हपु० २२.८५
३७.	आदित्याभ	मपु० ६२.३६१
३८.	आनन्द	हपु० २२.८९. ९३
३९.	आनन्दपुर	हपु० ५३.३०
४०.	आलोकनगर	पपु० ८५.१४१-१४३
४१.	आवर्त	पपु० ५.३७३-३७४
४२.	आवली	पपु० ५.३७३-३७४
४३.	आषाढ	हपु० २२.९५
४४.	इन्द्रनगर	मपु० ३६.१५-१७
४५.	इन्द्रपथ	पापु० १६.२-४
४६.	इभ्यपुर	हपु० ६०.९५
४७.	इलावर्द्धन	हपु० १७.१-४
४८.	ईहापुर	हपु० ४५.९३-९४
४९.	उज्जयिनी	हपु० २०.३-११
५०.	उत्कट	पपु० ५.३७३-३७४
५१.	उदयपर्वत	हपु० २२.९३-१०१
५२,	ऐशान	हपु० २२.८८
५३.	कंचनपुर	पपु० ५५.८४-८८
५४.	कनकपुर	मपु० ६३.१६४-१६५
५५.	कनकप्रभ	मपु० ७४.२२०-२२१
५६.	कनकाभ	पपु० ६.५६७
५७.	कमलसंकुल	पपु० २२.१७३
५८.	कम्बर	पपु० ४१.१२८
५९.	कर्णकुण्डल	पपु० १९.१०१-१०३
६०.	कल्पपुर	हपु० १७.२८-२९
६१,	कांचन	पपु० ५.३७१-३७२
६२.	कांचनतिलक	मपु० ६३.१०५
६३.	कांचनपुर	हपु० २४.११
६४.	कांचीपुर	मपु० ७०.१२७
६५.	काकन्दी	मपु० ५५.२३-२८
६६.	कान्तपुर	मपु० ४७.१८०
६७.	कामपुष्प	मपु० १९.४८
६८.	काम्पिल्या	मपु० ७२.१९८
६९.	कारकट	मपु० ६२.२०२-२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
७०.	कालकेशपुर	हपु० २२.९८
७१.	किन्नर	मपु० ७१.३७२
७२.	किन्नरोद्गीत	हपु० २२.९८
७३.	किन्नामित	मपु० १९.३१-३३
७४.	किलकिल	मपु० १९.७८
७५.	किष्किन्ध	मपु० ६८.४६६-४६७
७६.	किष्कुपुर	पपु० ६.१-५
७७.	कुंजरावर्त	मपु० १९.६८
७८.	कुण्ड	मपु० ७५.७
७९.	कुण्डलपुर	मपु० ६२.१७८
८०.	कुन्द	मपु० १९.८२, ८७
८१.	कुन्दनगर	पपु० ३३.१४३
८२.	कुमुद	मपु० १९.८२
८३.	कुम्भकारकट	मपु० ६२.२०७-२१२
८४.	कुम्भपुर	पपु० ८.१४२-१४५
८५.	कुशस्थलक	पपु० ५९.६
८६.	कुशाग्रनगर	पपु० २.२२४
८७.	कुसुमपुर	पपु० ४८.१५८
८८.	कूलग्राम	मपु० ७२.३१८-३२२
८९.	कूवर	पपु० ३३.१-५७
९०.	केतुमाल	मपु० १९.८०
९१.	कैलासवारुणी	मपु० १९.७८
९२.	कौतुममंगल	पपु० ७.१२६-१२७
९३.	कौमुदी	पपु० ३९.१८०
९४.	कौशाम्बी	पपु० ४.२०७-२०८
९५.	कौशिक	हपु० २२.८८
९६.	क्रौंचपुर	पपु० ४८.३६
९७.	क्षेमंकर	मपु० १९.५०
९८.	क्षेम	मपु० ७५.४०३
९९.	क्षेमपुर	मपु० ४९.२
१००.	क्षेमपुरी	मपु० १९.४८
१०१.	क्षेमांजलि	पपु० ३८.५६-५९
१०२.	खंगपुर	मपु० ६७.१४१-१४२
१०३.	खण्डिका	हपु० २२.८९
१०४.	गगनचरी	मपु० १९.४९
१०५.	गगननन्दन	मपु० ७१.२४९-२५२
१०६.	गगनमण्डल	हपु० २२.८५
१०७.	गजपुर	मपु० ४७.१२८
१०८.	गण्यपुर	हपु० ३४.१५
१०९.	गन्धमादन	हपु० २२.९०
११०.	गन्धमालिनी	हपु० २७.११५
१११.	गन्धर्वगीत	पपु० ५.३६७
११२.	गन्धर्वपुर	मपु० ७.२८-२९
११३.	गन्धसमृद्ध	हपु० २२.९४
११४.	गरुडध्वज	मपु० १९.३९
११५.	गान्धार	मपु० ६३.३८४
११६.	गिरितट	हपु० २३.२६-४५
११७.	गिरिनगर	मपु० ७१.२७०
११८.	गिरिशिखर	मपु० १९.८५
११९.	गुञ्जा	पपु० १०४.१०३
१२०.	गुल्मखेट	मपु० ७३.१३२-१३३
१२१.	गोक्षीर	मपु० १९.८५
१२२.	गोवर्द्धन	पपु० २०.१३७
१२३.	गौरिक	हपु० २२.८८
१२४.	गौरीकूट	हपु० २२.८७
१२५.	चक्रधर	पपु० ६४.५०
१२६.	चक्रपुर	हपु० २७.८९
१२७.	चक्रवाल	हपु० २२.९३
१२८.	चतुर्मुखी	मपु० १९.४४
१२९.	चन्दनपुर	हपु० ६०.८१
१३०.	चन्दनवन	हपु० २९.२४
१३१.	चन्द्रपर्वत	हपु० २२.९७
१३२.	चन्द्रपुर	मपु० १९.५२-५३
१३३.	चन्द्रादित्य	पपु० ८५.९६
१३४.	चन्द्राभ	मपु० १९.५०
१३५.	चन्द्रावर्तपुर	पपु० १३.७५-७८
१३६.	चमरचम्पा	मपु० १९.७९
१३७.	चम्पकपुर	हपु० ५.४२८
१३८.	चम्पा	हपु० १.८१
१३९.	चारणयुगल	मपु० ६७.२१३
१४०.	चित्रकारपुर	हपु० २७.९७
१४१.	चित्रकूट	मपु० १९.५१
१४२.	चित्रपुर	मपु० ६२.६६
१४३.	चूलिका	हपु० ४६.२६-२७
१४४.	छत्रपुर	मपु० ५९.२६४
१४५.	छत्रकारपुर	मपु० ७४.२४२
१४६	जयन्तपुर	मपु० ७१.४५२
१४७.	जयन्ती	हपु० १७.२७
१४८.	जयपुर	पपु० १२३.११२
१४९.	जलधिध्यान	पपु० ६.६६
१५०.	जनपथ	पापु० १६.७
१५१.	जलावर्त	हपु० २२.५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
१५२.	जीमूतशिखर	पपु० ९४.१-५
१५३.	ज्योतिप्रभ	मपु० ७२.२४१
१५४.	ज्योतिर्दण्डपुर	पपु० ५५.८७-८८
१५५.	तट	पपु० ५.३६७
१५६.	ताम्रलिप्त	हपु० २१.७६
१५७.	तिलक	मपु० ६३.१६८
१५८.	तिलपथ	पापु० १६.५
१५९.	तिलवस्तुक	हपु० २४.२
१६०.	तोयावली	पपु० ५.३७३-३७४
१६१.	त्रिपुर	मपु० ६२.६७
१६२.	त्रिलोकोत्तम	मपु० ७३.२५-२६
१६३.	त्रिशृंग	हपु० ४५.९५
१६४.	दधिमुख	पपु० ५१.२
१६५.	दन्तपुर	मपु० ७०.६५
१६६.	दशांगभोगनगर	पपु० ८०.१०९
१६७.	दशार्ण	मपु० ७१.२९१
१६८.	दिति	पपु० १०६.१८७
१६९.	दिवितिलक	मपु० ६२.३६
१७०.	दुन्दुभि	पपु० १९.२
१७१.	दुर्ग्रह	पपु० ५.३७३-३७४
१७२.	दोस्तटिका	हपु० ६६.५३
१७३.	द्वारवती	मपु० ७१.२४-२७
१७४.	धारणयुग्म	हपु० २३.४६-४९
१७५.	धान्यपुर	मपु० ८.३३०
१७६.	नन्दनपुर	मपु० ५९.४२-४३
१७७.	नन्दस्थली	पपु० १२०.२
१७८.	नन्दिवर्धन	मपु० ७२.३-१४
१७९.	नन्द्यावर्त	पपु० ३७.६
१८०.	नलिन	मपु० ५४.२१७-२१८
१८१.	नाग	पपु० ८५.४९-५१
१८२.	नागपुर	हपु० १७.१६२
१८३.	पद्ममक	पपु० ५.११४
१८४.	पद्मखण्डपुर	मपु० ५९.१४६-१४८
१८५.	पद्मिनीखेट	मपु० ६२.१९१
१८६.	पराजयपुर	पपु० ५५.८७-८८
१८७.	परिक्षोदपुर	पपु० ५५.८७-८८
१८८.	पाटलिपुत्र	मपु० ६१.४०
१८९.	पुन्नागपुर	मपु० २९.७९
१९०.	पुरातनमन्दिर	वीवच० २.१२५-१२६
१९१.	पुरिमताल	मपु० २०.२१८
१९२.	पुलोमपुर	हपु० १७.२४-२५
१९३.	पुष्पान्तक	पपु० १.६१
१९४.	पूर्वतालपुर	हपु० ९.२०५-२१०
१९५.	पृथिवी	मपु० ४८.५८-५९
१९६.	पोदनपुर	मपु० ५४.६८
१९७.	प्रतिष्ठनगर	पपु० १०६.२०५
१९८.	प्रभाकरपुरी	मपु० ७.३४
१९९.	प्रभापुर	पपु० ९२.१-७
२००.	भद्रपुर	मपु० ५६.२३-२४
२०१.	भद्रिलपुर	मपु० ५६.२४
२०२.	भद्रिलसा	हपु० ३३.१६७
२०३.	भुजंगशैल	मपु० ७२.२१५
२०४.	भूतिलक	मपु० ७६.२५२
२०५.	भोगपुर	मपु० ६७.६३
२०६.	भोगवर्द्धन	मपु० ५८.९०-९१
२०७.	मनोहर	पपु० ५.३७१
२०८.	मनोह्लाद	पपु० ५.३७१-३७२
२०९.	मन्दर	पपु० १७.१४१
२१०.	मन्दरकुंज	पपु० ६.३५७-३६३
२११.	मन्दरपुर	मपु० ६३.४७८-४७९
२१२.	मयूरमाल	पपु० २७.६७
२१३.	मत्यानुगीत	पपु० ९४.६
२१४.	मलयानन्द	पपु० ५५.८६
२१५.	महाकूट	मपु० १९.५१
२१६.	महानगर	मपु० ५८.४०-४१
२१७.	महारत्नपुर	मपु० ६२.६८
२१८.	महाशैलपुर	पपु० ५५.८६
२१९.	महीपालपुर	मपु० ७३.९६
२२०.	महीपुर	मपु० ७५.१३
२२१.	महेन्द्रनगर	पपु० १५.१३-१६
२२२.	माकन्दी	हपु० ४५.११९-१२१
२२३.	मागधेशपुर	हपु० १८.१७
२२४.	मार्तण्डाभपुर	पपु० ५५.८७-८८
२२५.	माहिष्मती	पपु० १०.६५
२२६.	मिथिला	मपु० ६६.२०-२१
२२७.	मृगांक	पपु० १७.१५०
२२८.	मृणालकुण्ड	पपु० १०६.१३३-१३४
२२९.	मृणालवती	मपु० ४६.१०३
२३०.	मृत्तिकावती	पपु० ४८.४३-५०
२३१.	मेघदल	हपु० ४६.१५-१६
२३२.	मेघपुर	मपु० ६२.२५-३०
२३३.	यक्षगीत	पपु० ७.११८
२३४.	यक्षपुर	पपु० ७.१२६-१२७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
२३५,	यक्षस्थान	पपु० ३९.१३७-१२९
२३६.	योध	पपु० ५.३७१-३७२
२३७.	रजोवली	पपु० ५.१२४
२३८.	रत्नद्वीप	पपु० ५.३७३
२३९.	रत्ननगर	पपु० १३.६०
२४०.	रत्नपुर	मपु० ५९.८८
२४१.	रत्नस्थलपुर	पपु० १२३.१२१-१२२
२४२.	रन्ध्रपुर	पपु० २८.२१९
२४३.	रमणीकमन्दिर	वीवच० २.१२१-१२२
२४४.	रमर्णय	यपु० ७५.३०१-३०३
२४५.	रविप्रभ	पपु० ९४.४-९
२४६.	रसातलपुर	पपु० १९.९
२४७.	राजगृह	मपु० ५७.७०-७२
२४८.	राजपुर	मपु० ७५.१८८-१८९
२४९.	रामपुरी	पपु० ३५.४३-४५
२५०.	रिपुंजयपुर	पपु० ५५.८७-८९
२५१.	रोरुका	मपु० ७५.११-१२
२५२.	लंका	मपु० ६८.२९५-२९८
२५३.	लक्ष्मीधर	पपु० ९४.५
२५४.	लोकाक्षनगर	पपु० १०१.७०-७३
२५५.	वंकापुर	हपु० प्रशस्ति ३२-३५
२५६.	वंशस्थलद्युति	पपु० ३९.९-११
२५७.	वज्र	हपु० १७.३३
२५८.	वज्रपंजर	पपु० ५.३५७-३५९
२५९.	वज्रपुर	हपु० १७.३३
२६०.	वटपुर	हपु० ४३.१६३
२६१.	वणिकपथपुर	पापु० १६.७
२६२.	वनत्रास्य	हपु० १७.२७
२६३.	वर्द्धमानपुर	मपु० ५२.५३-५४
२६४.	वसुन्धरपुर	हपु० ४५.७०
२६५.	वस्वालय	मपु० ७०.७४-७६
२६६.	वह्निप्रभ	पपु० ९४.४
२६७.	वहुरव	पपु० ९४.४
२६८.	वाराणसी	मपु० ४३.१२१-१२४
२६९.	विघट	पपु० ५.३७३-३७४
२७०.	विजय	मपु० ८.२२७
२७१.	विजयखेट	मपु० १९.५३-५८
२७२.	विजयनगर	पपु० ३७.९
२७३.	विजयपुर	हपु० ५.३९७-३९८
२७४.	विजयनगर	पपु० २६.१३-१५
२७५.	विदेह	मपु० ७५.६४३

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
२७६.	विन्ध्यपुर	मपु० ६३.९९
२७७.	विमलपुर	मपु० ४७.११८-११९
२७८.	विराट	मपु० ७२.२१६
२७९.	विशालपुर	मपु० ५५.८७-८८
२८०.	विहायस्तिलक	पपु० ५.७६-८३
२८१.	वीतभय	हपु० ४४.३३-३६
२८२.	वीतशोक	मपु० ६२.३६४-३६५
२८३.	वीतशोकपुर	मपु० ५९.१०९-११०
२८४.	वीरपुर	मपु० ६९.३०-३१
२८५.	वृन्दावन	हपु० ३५.२७-२९
२८६.	वेदसामपुर	हपु० २४.२५-२६
२८७.	वेलन्धर	पपु० ५४.६५
२८८.	वैजयन्त	पपु० ३६.९-११
२८९.	वैदिशपुर	हपु० ४५.१०७
२९०.	वैशाली	मपु० ७५.३
२९१.	व्याघ्रपुर	पपु० ८०.१७३
२९२.	व्रज	मपु० ७०.४५५
२९३.	शंख	मपु० ६२.४९४
२९४.	शकटामुख	हपु० २२.१४३
२९५.	शतद्वार	पपु० १२. २२-२३
२९६.	शशांक	पपु० ८५.१३३
२९७.	शशिच्छाय	पपु० ९४.७
२९८.	शशिपुर	पपु० ३१.३४-३५
२९९.	शशिस्थानपुर	पपु० ९५.८७-८८
३००.	शामली	पपु० १०८.३९-४०
३०१.	शालगुहा	हपु० २४.२९-३०
३०२.	शिखापद	पपु० १३.५५
३०३.	शिल्पुपुर	पपु० ४७.१४४-१४५
३०४.	शीरवती	पापु० ३.२१०-२११
३०५.	शीलनगर	पापु० ७.११८
३०६.	शुक्तिमती	हपु० १७.३६
३०७.	शुक्रप्रभ	मपु० ६३.९१
३०८.	शुभ्रपुर	हपु० १७.३२
३०९.	शैलनगर	पपु० २०-२०७-२०८
३१०.	शैलपुर	मपु० ५५-४८
३११.	शोभपुर	पपु० ८०.१९०-१९५
३१२.	शोभनगर	मपु० ४६.९५
३१३.	शोभापुर	पपु० ५५.८५
३१४.	शौरीपुर	पपु० २०.५८
३१५.	श्रावस्ती	मपु० ४९.१४
३१६.	श्रीगुहापुर	पपु० ५५.८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
३१७.	श्रीगृह	पपु० ९४.७
३१८.	श्रीपुर	मपु० ६९.७४
३१९.	श्रीमनोहरपुर	पपु० ५५.८६
३२०.	श्रीविजयपुर	पपु० ९४.८-९
३२१.	श्रुतपुर	पापु० १४.७९
३२२.	श्रुतशोणित	हपु० ५५.१६
३२३.	श्रेयस्पुर	मपु० ४७.१४२
३२४.	श्वेतिका	मपु० ७१.२८३
३२५.	संध्याकार	पपु० ६.६५-६६
३२६.	संध्याभ्र	पपु० ३.३१३
३२७	सुदृतु	पपु० ५.९६
३२८.	सद्भद्रिलपुर	हपु० १८.११२
३२९.	सप्तपर्णपुर	हपु० ५.४२७
३३०.	समुद्र	पपु० ५.३७१
३३१.	सर	पपु० ५.६७
३३२.	सर्वरमणीय	मपु० ७६.१८४
३३३.	सांकाश्पुर	पपु० २८.२१९
३३४.	साकेत	मपु० १२.८२
३३५.	सारसौख्य	मपु० ७४.३८९-४०१
३३६.	सिंहपुर	मपु० ५.२०३
३३७.	सिद्धार्थ	मपु० ५७.४९-५०
३३८.	सिन्धुनद	पपु० ८.३१९-३४०
३३९.	सुनपथ	पापु० १६.६
३४०.	सुप्रकारपुर	मपु० ७१.४०९-४१४
३४१.	सुप्रतिष्ठ	मपु० ७६.२१६
३४२.	सुभद्रिलपुर	हपु० ३५.४
३४३.	सुमाद्रिका	पपु० २०.१४
३४४.	सुरकान्तर	मपु० ६६.११४
३४५.	सुरनूपुर	पपु० ५५.८६-८७
३४६.	सुरेन्द्ररमण	पपु० ८१.२१-२७
३४७.	सुवेल	पपु० ५.३७१-३७२
३४८.	सूतिका	मपु० ७४.७४
३४९.	सूर्यप्रभ	मपु० ७०.२६-२९
३५०.	सूर्योदय	पपु० ८.३६२
३५१.	सोपारक	हपु० ६०.३६
३५२.	सोमखेट	मपु० ५३.४३
३५३.	सौमनस	मपु० ५१.७२
३५४.	स्थालक	मपु० ६८.१२-१९
३५५.	स्थूणागार	मपु० ७४.७०-७१
३५६.	स्फुट	हपु० ५.३७३
३५७.	स्वयंप्रभ	पपु० ७.३३७
३५८.	स्वर्णाभपुर	हपु० २४.६९
३५९.	स्वस्तिकावती	मपु० ६७.२५६-२५७
३५०.	हंसद्वीप	पपु० ५.३७१-३७२
३६१.	हंसपुर	पपु० ५४.७६-७७
३६२.	हयपुरी	हपु० ४४.४५-४८
३६३.	हरि	पपु० ६.६६-६८
३६४.	हरिपुर	पपु० २१.३-४
३६५.	हस्तवप्र	पपु० ६२.३-१२
३६६.	हस्तशीर्षपुर	मपु० ४१.४४४
३६७.	हस्तिनागपुर	पपु० २०.५२-५४
३६८.	हेमकच्छ	पपु० ७५.१०-११
३६९.	हेमपुर	पपु० ६.५६४
३६०.	हेमाभनगर	मपु० ७५.४२०-४२८
३७१.	हैहय	पपु० ५५.२९

विजयार्द्ध पर्वत की उत्तरश्रेणी के नगर

(महापुराण के अनुसार)

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
१.	अक्षोभ्य	मपु० १९.८५
२.	अग्निज्वाल	मपु० १९.८३
३.	अम्बरतिलक	मपु० १९.८२
४.	अर्जुनी	मपु० १९.७८
५.	अलका	मपु० १९.८२
६.	अशोका	मपु० १९.८१
७.	किलकिल	मपु० १९.७८
८.	कुन्द	मपु० १९.८२

विजयार्द्ध पर्वत की उत्तरश्रेणी के नगर

(हरिवंशपुराण के अनुसार)

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
१.	अग्निज्वाल	हपु० २२.९०
२.	अपराजित	हपु० २२.८७
३.	अरिंजय	हपु० २२.८६
४.	अशोक	हपु० २२.८९
५.	आदित्यनगर	हपु० २२.८५
६.	आनन्द	हपु० २२.८९
७.	ऐशान	हपु० २२.८८
८.	कांचन	हपु० २२.८८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ	क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
९.	कुमुद	मपु० १९.८२	९.	केतुमाल	हपु० २२.८६
१०.	केतुमाल	मपु० १९.८०	१०.	कौशिक	हपु० २२.८८
११.	कैलाशवारुणी	मपु० १९.७८	११.	खण्डिका	हपु० २२.८९
१२.	गगननन्दन	मपु० १९.८१	१२.	गगनमण्डल	हपु० २२.८५
१३.	गगनवल्लभ	मपु० १९.८२	१३.	गगनवल्लभ	हपु० २२.८५
१४.	गन्धर्वपुर	मपु० १९.८३	१४.	गन्धमादन	हपु० २२.९०
१५.	गिरिशिखर	मपु० १९.८५	१५.	गौरिक	हपु० २२.८८
१६.	गोक्षीर	मपु० १९.८५	१६.	चमरचम्पा	हपु० २२.८५
१७.	चमर	मपु० १९.७९	१७.	चम्पा	हपु० २२.८८
१८.	चारुणी	मपु० १९.७८	१८.	चूड़ामणि	हपु० २२.९१
१९.	चूड़ामणि	मपु० १९.७८	१९.	जयन्त	हपु० २२.८७
२०.	जय	मपु० १९.८४	२०.	जयावह	हपु० २२.८८
२१.	तिलका	मपु० १९.८२	२१.	धनंजय	हपु० २२.८६
२२.	दुर्ग	मपु० १९.८५	२२.	नन्दन	हपु० २२.८९
२३.	दुर्धर	मपु० १९.८५	२३.	नन्दिनी	हपु० २२.९०
२४.	द्युतिलक	मपु० १९.८३	२४.	नैमिष	हपु० २२.८९
२५.	धरणी	मपु० १९.८५	२५.	पद्माल	हपु० २२.८६
२६.	धारणी	मपु० १९.८५	२६.	पाण्डुक	हपु० २२.८८
२७.	निमिष	मपु० १९.८३	२७.	पुरु	हपु० २२.९०
२८.	पुष्पचूल	मपु० १९.७९	२८.	पुष्पचूड	हपु० २२.९१
२९.	फेन	मपु० १९.८५	२९.	पुष्पमाल	हपु० २२.९१
३०.	बलाहक	मपु० १९.७९	३०.	बलाहक	हपु० २२.९१
३१.	भद्राश्व	मपु० १९.८४	३१.	मणिकांचन	हपु० २२.८९
३२.	भूमितिलक	मपु० १९.८३	३२.	मणिवज्र	हपु० २२.८८
३३.	मणिवज्र	मपु० १९.८४	३३.	मनु	हपु० २२.८८
३४.	मन्दिर	मपु० १९.८२	३४.	महाज्वाल	हपु० २२.९०
३५.	महाज्वाल	मपु० १९.८४	३५.	महापुर	हपु० २२.९१
३६.	महेन्द्रपुर	मपु० १९.८६-८७	३६.	महेन्द्र	हपु० २२.९०
३७.	मुक्ताहार	मपु० १९.८३	३७.	मानव	हपु० २२.८८
३८.	रत्नपुर	मपु० १९.८७	३८.	माल्य	हपु० २२.९०
३९.	रत्नाकर	मपु० १९.८६-८७	३९.	माल	हपु० २२.९१
४०.	वंशाल	मपु० १९.७९	४०.	रुद्राश्व	हपु० २२.८६
४१.	वज्रपुर	मपु० १९.८६-८७	४१.	वंशालय	हपु० २२.९२
४२.	वसुमती	मपु० १९.८०	४२.	वराह	हपु० २२.८७
४३.	वसुमत्क	मपु० १९.८०	४३.	वस्वौक	हपु० २२.८७
४४.	विजयपुर	मपु० १९.८६-८७	४४.	विजय	हपु० २२.८६
४५.	विद्युत्प्रभ	मपु० १९.७८	४५.	विद्युत्प्रभ	हपु० २२.९०
४६.	विशोका	मपु० १९.८१	४६.	विमल	हपु० २२.९०
४७.	वीतशोका	मपु० १९.८१	४७.	वीर	हपु० २२.८८
४८.	शत्रुंजय	मपु० १९.८०	४८.	वेणु	हपु० २२.८९
४९.	शशिप्रभा	मपु० १९.७८	४९.	वैजयन्त	हपु० २२.८६
५०.	शिवंकर	मपु० १९.७९	५०.	शत्रुंजय	हपु० २२.८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
५१.	शिवमन्दिर	मपु० १९.७९
५२.	श्रीनिकेत	मपु० १९.८४
५३.	श्रीवास	मपु० १९.८४
५४.	श्रीहर्म्य	मपु० १९.७९
५५.	सधनंजय	मपु० १९.८४
५६.	सिद्धार्थक	मपु० १९.८०
५७.	सुगन्धिनी	मपु० १९.८६-८७
५८.	सुदर्शन	मपु० १९.८५-८७
५९.	सुरेन्द्रकान्त	मपु० १९.८१
६०.	हसगर्भ	मपु० १९.७९

विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी के नगर

(महापुराण के अनुसार)

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
१.	अपराजित	मपु० १९.४८
२.	अरजस्का	मपु० १९.४५
३.	अरिंजय	मपु० १९.४१
४.	कामपुष्पनगर	मपु० १९.४८
५.	किंनामित	मपु० १९.३२
६.	किन्नरगीत	मपु० १९.३३
७.	क्षेमंकर	मपु० १९.५०
८.	क्षेमपुरी	मपु० १९.४८
९.	गगनचरी	मपु० १९.४८-४९
१०.	गरुडध्वज	मपु० १९.३९
११.	चतुर्मुखी	मपु० १९.४४
१२.	चन्द्रपुर	मपु० १९.५२
१३.	चन्द्राभ	मपु० १९.५०
१४.	चित्रकूट	मपु० १९.५१
१५.	जयन्ती	मपु० १९.५०
१६.	नरगीत	मपु० १९.३४
१७.	नित्यवाहिनी	मपु० १९.५२
१८.	नित्योद्योतिनी	मपु० १९.५२
१९.	पश्चिमा	मपु० १९.५२
२०.	पुण्डरीक	मपु० १९.३६
२१.	पुरंजय	मपु० १९.४३
२२.	बहुकेतुक	मपु० १९.३५
२३.	बहुमुखी	मपु० १९.४५
२४.	महाकूट	मपु० १९.५१
२५.	मेखलाग्रनगर	मपु० १९.४८
२६.	मेघकूट	मपु० १९.५१

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
५१.	शशिप्रभ	हपु० २२.९१
५२.	श्रीनिकेतन	हपु० २२.८९
५३.	सारनिवह	हपु० २२.८७
५४.	सिंह	हपु० २२.८७
५५.	सौकर	हपु० २२.८७
५६.	सौमनस	हपु० २२.९२
५७.	हंसगर्भ	हपु० २२.९१
५८.	हस्तिन	हपु० २२.८७
५९.	हस्तिनायक	हपु० २२.८७
६०.	हास्तिविजय	हपु० २२.८९

विजयार्ध पर्वत के दक्षिण श्रेणी के नगर

(हरिवंशपुराण के अनुसार)

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
१.	अंगावर्त	हपु० २२.९५
२.	अमृतधार	हपु० २२.१००
३.	अरिंजय	हपु० २२.९३
४.	अर्कमूल	हपु० २२.९९
५.	असितपर्वत	हपु० २२.९६
६.	आनन्द	हपु० २२.९३
७.	आवर्त्तपुर	हपु० २२.९६
८.	आषाढ	हपु० २२.९५
९.	उदयपर्वत	हपु० २२.९३
१०.	कालकेशपुर	हपु० २२.९८
११.	किन्नरोद्गीतनगर	हपु० २२.९८
१२.	कुञ्जरावर्त	हपु० २२.९६
१३.	गन्धसमृद्ध	हपु० २२.९४
१४.	गौरिकूट	हपु० २२.९७
१५.	चक्रवाल	हपु० २२.९३
१६.	चन्द्रपर्वत	हपु० २२.९७
१७.	जम्बुशंकुपुर	हपु० २२.१००
१८.	जलावर्त	हपु० २२.९५
१९.	दिव्यौषध	हपु० २२.९९
२०.	धराधर	हपु० २२.९७
२१.	नभस्तिलक	हपु० २२.९८
२२.	नाभान्त	हपु० २२.९६
२३.	पांशुमूल	हपु० २२.९९
२४.	बहुकेतु	हपु० २२.९३
२५.	भूमिकुण्डल	हपु० २२.१००
२६.	मगधसारनलक	हपु० २२.९९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नगर	सन्दर्भ
२७.	रतिकूट	मपु० १९.५१
२८.	रथनूपुर-चक्रवाल	मपु० १९.४६-४७
२९.	लोहार्गल	मपु० १९.४१
३०.	वज्राढ्य	मपु० १९.४२
३१.	वज्रार्गल	मपु० १९.४२
३२.	विचित्रकूट	मपु० १९.५१
३३.	विजया	मपु० १९.५०
३४.	विनयचरी	मपु० १९.४९
३५.	विमुखी	मपु० १९.५२-५३
३६.	विमोच	मपु० १९.४३
३७.	विरजस्का	मपु० १९.४५
३८.	वैजयन्ती	मपु० १९.५०
३९.	वैश्रवणकूट	मपु० १९.५१
४०.	शकटमुखी	मपु० १९.४४
४१.	शुक्रपुर	मपु० १९.४९
४२.	श्रीधर	मपु० १९.४०
४३.	श्रीप्रभ	मपु० १९.४०
४४.	श्वेतकेतु	मपु० १९.३८
४५.	संजयन्ती	मपु० १९.५०
४६.	सिंहध्वज	मपु० १९.३७
४७.	सुमुखी	मपु० १९.५२-५३
४८.	सूर्यपुर	मपु० १९.५२-५३
४९.	सूर्याभ	मपु० १९.५०
५०.	हेमकूट	मपु० १९.५१-५३

क्र० सं०	नाय नगर	सन्दर्भ
२७.	मण्डित	हपु० २२.९३
२८.	मणिप्रभ	हपु० २२.९६
२९.	महाकक्ष	हपु० २२.९७
३०.	मातंगपुर	हपु० २२.१००
३१.	मानव	हपु० २२.९५
३२.	मेघकूट	हपु० २२.९६
३३.	रत्नसंचय	हपु० २२.९४
३४.	रथनूपुर	हपु० २२.९३
३५.	रथपुर	हपु० २२.९४
३६.	रम्यपुर	हपु० २२.९८
३७.	लक्ष्मीकूट	हपु० २२.९७
३८.	बृहद्गृह	हपु० २२.९५
३९.	वैजयन्त	हपु० २२.९४
४०.	शंखवज्र	हपु० २२.९६
४१.	शकटामुख	हपु० २२.९३
४२.	शतह्रद	हपु० २२.९५
४३.	शिवमन्दिर	हपु० २२.९४
४४.	श्रीकूट	हपु० २२.९७
४५.	श्रीपुर	हपु० २२.९४
४६.	सिन्धुवृक्ष	हपु० २२.९७
४७.	सुकक्ष	हपु० २२.९७
४८.	सूर्यपुर	हपु० २२.९५
४९.	स्वर्णनाभ	हपु० २२.९५
५०.	हिमपुर	हपु० २२.९८

नदियाँ

क्र० सं०	नाम नदी	सन्दर्भ
१.	अम्बषेणा	मपु० २९.८७
२.	अरुणा	मपु० २९.५०
३.	अवन्तिकामा	मपु० २९.६४
४.	इक्षुमती	मपु० २९.८३
५.	उदुम्बरी	मपु० २९.५४
६.	उन्मग्नजला	मपु० ३२.२१
७.	उशीरवती	मपु० ४६.१४५-१४६
८.	ऊर्मिमालिनी	हपु० ५.२४१-२४२
९.	ऊहा	मपु० २९.६२
१०.	ऋजुकूला	मपु० २४.३४८-३५४
११.	ऐरावती	मपु० ६२.३७९-३८०
१२.	औदुम्बरी	मपु० २९.५४
१३.	कंजा	मपु० २९.६२
१४.	कपीवती	मपु० २९.४९, ६२

क्र० सं०	नाम देश	सन्दर्भ
१५.	करभवेगिनी	मपु० २९.६५
१६.	करीरी	मपु० ३०.३७
१७.	कर्णकुण्डला	पपु० ५३.१६१-१६३
१८.	कर्णरवा	पपु० ४०.४०
१९.	कलिंदकन्या	मपु० ७०.३४६
२०.	कांचना	मपु० ६३.१५८
२१.	कागन्धु	मपु० २९.६४
२२.	कालतोया	मपु० २९.५०
२३.	कालमही	मपु० २९.५०
२४.	कुञ्जा	मपु० २८.८७
२५.	कुसुमवती	मपु० ५९.११७-११९
२६.	कुहा	मपु० २९.६२
२७.	कृतमाला	मपु० २९.६३
२८.	कृष्णवेणा	मपु० २९.८६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नदी	संदर्भ
२९.	केतम्बा	मपु० ३०.६७
३०	कौशिकी	मपु० २९.५०
३१.	क्रौंचरवा	पपु० ४२.६१
३२.	क्षीरोदा	मपु० ६३.२०७
३३.	गजवती	हपु० २७.१२-१४
३४.	गन्धमादिनी	हपु० ५.२४२-२४३
३५.	गन्धावती	मपु० ७०.३२२
३६.	गम्भीरा	मपु० २९.५०
३७.	गोदावरी	मपु० २९.६०
३८.	गोमती	मपु० २९.४९
३९.	चण्डवेगा	मपु० ५९.११८-११९
४०.	चर्मण्वती	मपु० २९.६४
४१.	चित्रवती	मपु० २९.५८
४२.	चुल्लितापी	मपु० २९.६५
४३.	चूर्णी	मपु० २९.८७
४४.	जम्बूमती	मपु० २९.६२
४५	तमसा	मपु० २९.५४
४६,	तरंगिणी	हपु० ४६.४९
४७.	तापी	मपु० ३०.६१
४८.	ताम्रा	मपु० २९.५०
४९.	तेला	मपु० २९.८३
५०.	दमना	मपु० ३०.५९
५१.	दशार्णा	मपु० २९.६०
५२.	दारुवेणा	मपु० ३०.५५
५३.	धैर्या	मपु० २९.८७
५४.	नक्रवा	मपु० २९.८३
५५.	नन्दा	मपु० २९.६५
५६.	नालिका	मपु० २९.६१
५७.	निःकुन्दरी	मपु० २९.६१
५८.	निचुरा	मपु० २९.५०
५९.	निमग्नजला	मपु० ३२.२१
६०.	निर्विन्ध्या	मपु० २९.६२
६१.	निष्कुन्दरी	मपु० २९.६१
६२.	नीरा	मपु० ३०.५६
६३.	पनसा	मपु० २९.५४
६४.	पारा	मपु० २९.६१
६५.	पारिजा	मपु० २९.६९
६६.	प्रमृशा	मपु० २९.५४
६७.	प्रवेसो	मपु० २९.८६
६८.	प्रहरा	मपु० ३०.५४
६९.	बहुवक्त्रा	मपु० २९.६१

क्र० सं०	नाम नदी	सन्दर्भ
७०.	बाणा	मपु० ३०.५४
७१.	बीजा	मपु० २९.५२
७२.	भीमरथी	मपु० ३०-३५
७३.	मदना	मपु० ३०.५९
७४.	महागन्धवती	मपु० ७१.३०९
७५.	महेन्द्रका	मपु० २९.८४
७६.	माल्यवती	मपु० २९.५९
७७.	माषवती	मपु० २९.८४
७८.	मुररा	मपु० ३०.५८
७९.	मूला	मपु० ३०.५६
८०.	मेखला	मपु० २९.५२
८१.	यमुना	मपु० ७०.३४६-३४७
८२.	यूपकेसरिणी	मपु० ५९.२१२-२१८
८३.	रजतमालिका	मपु० ५८.५०-५३
८४.	रत्नमालिनी	मपु० २१.६-१४
८५.	रथास्फा	मपु० २९.४९
८६.	रम्या	मपु० २९.६१
८७.	रेवा	मपु० २९.६५
७८.	लांगलखातिका	मपु० ३०.६२
८९.	वंगा	मपु० २९.८३
९०.	वरदा	मपु० १७.२३
९१.	वसुमती	मपु० २९.६३
९२.	विततता	हपु० ११.७९
९३.	विशाला	मपु० २९.६१
९४.	वृत्रवती	मपु० २९.५८
९५.	वेगवती	मपु० ७३.२२-२४
९६.	वेणा	मपु० २९.८७
९७.	वेणुमती	मपु० २९.६०
९८.	वैतरणी	मपु० २९.८४
९९.	व्याघ्री	मपु० २९.६४
१००.	शतभोगा	मपु० २९.६५
१०१.	शर्करावती	मपु० २९.६३
१०२.	शर्वरी	मपु० ३२.२८-२९
१०३.	शुक्तिमती	मपु० २९.५४
१०४.	शुष्कनदी	मपु० २९.८४
१०५.	शोणनद	मपु० २९.५२
१०६.	श्वसना	मपु० २९.८३
१०७.	सन्नीरा	मपु० २९.८६
१०८.	सप्तपारा	मपु० २९.६५
१०९.	समतोया	मपु० २९.६२
११०.	सरयू	मपु० १४.६९, १६.२२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नदियाँ	संदर्भ
१११.	सिकतिनी	मपु० २९.६१
११२.	सिन्धु	मपु० १६.२०९
११३.	सुप्रयोगा	मपु० २९.८६
११४.	सुमागधी	मपु० २९.४९
११५.	सुवर्णवती	मपु० ५९.११८-११९
११६.	सूकरिका	मपु० २९.८७
११७.	हंसावली	पपु० १३.८२
११८.	हरवती	मपु० ५९.११८-११९
११९.	हरिद्वती	हपु० २७.१२-१३
१२०.	हस्तिपानी	मपु० २९.६४-६६

पर्वत

क्र० सं०	नाम पर्वत	सन्दर्भ
१.	अंगिरेयिक	मपु० २९.७०
२.	अंजनगिरि	पपु० ८.३२४
३.	अम्बरतिलक	मपु० ६.१३१
४.	अम्बुदावर्त	हपु० ६०.१९-२१
५.	अष्टापद	पपु० १५.७६
६.	असुरधूपन	मपु० २९.७०
७.	आनंग	मपु० २९.७०
८.	आपाण्डर	मपु० २९.४६
९.	इष्वाकार	मपु० ५४.८६
१०.	उदक	हपु० ५.४६१
११.	उपवास	हपु० ५.४६१
१२.	ऊर्जयन्त	पपु० २०.३६,५८
१३.	ऋक्षवत	मपु० २९.६९
१४.	ऋषिगिरि	हपु० ३.५१-५३
१५.	ऋष्यमूक	मपु० २९.५६
१६.	कम्बल	मपु० २९.६९
१७.	कर्कोटक	हपु० २१.१२३
१८.	कर्ण	पपु० ६.५२९
१९.	कवाटक	मपु० २९.८९
२०.	कांचनकूट	हपु० ५.२००-२०१
२१.	किष्किन्ध	मपु० २९.९०
२२.	किष्कु	पपु० ६.८२
२३.	कुण्डलगिरि	मपु० ५.२९१
२४.	कुब्जक	मपु० ७३.१२
५५.	कूटाद्रि	मपु० २९.६७
२६.	कृष्णगिरि	मपु० ३०.५०
२७.	कोलाहल	मपु० २९.५६
२८.	कौस्तुभ	हपु० ५.४६०
२९.	गदागिरि	मपु० २९.६८
३०.	गन्धमादन	मपु० ७१.३०९
३१.	गिरिकूट	हपु० २१.१०३
३२.	गुंज	पपु० ८.२०१
३३.	गोरथ	मपु० २९.४६
३४.	गोवर्द्धन	मपु० ७०.४३८
३५.	गोशीर्ष	मपु० २९.८९
३६.	चन्द्रोदय	मपु० ७५.३५९-३६५
३७.	चित्रकूट	मपु० ६८.१२६
३८.	चेदि	मपु० २९.५५
३९.	जगत्पादगिरि	मपु० ६८.४६८
४०.	जाम्बव	हपु० ४४.७
४१.	तुंगवरक	मपु० ३०.४९
४२.	तुंगीगिरि	हपु० ६३.७२-७४
४३.	तैराश्चिक	मपु० २९.६७
४४.	दण्डक	पपु० ४२.८७-८८
४५.	दर्दुराद्रि	मपु० २९.६९
४६.	दिशागिरि	मपु० ७५.४७९
४७.	दुर्गगिरि	पपु० ८५.१३९
४८.	दुर्दर	मपु० २९.८८-८९
४९.	धरणीमौलि	पपु० ६.५१०-५११
५०.	नन्दन	मपु० ६३.३३
५१.	नभस्तिलक	मपु० ५४.१२५-१२६
५२.	नाग	मपु० २९.८८
९३.	नागप्रिय	मपु० २९.५७-५८
५४.	नाभि	मपु० ४५.५८
५५.	निकुंज	पपु० ८५.६३
५६.	पंचगिरि	पपु० ५.२५.२९
५७.	पाण्ड्य	मपु० २९.८९
५८.	वारियात्र	मपु० २९.६७
५९.	पुष्पगिरि	मपु० २९.६८
६०.	पुष्पप्रकीर्णक	पपु० ७९.२७-२८
६१.	भीमकूट	मपु० ७५.४५-४८
६२.	मणिकान्त	पपु० ९.४०-४२
६३.	मदेभ	मपु० २९.७०
६४.	मधु	मपु० १.५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम पर्वत	सन्दर्भ
६५.	मनुजोदय	मपु० ७५.३०१-३०३
६६.	मलय	मपु० २९.८८
६७.	मलयगिरि	मपु० ३०.२६-२७
६८.	महेन्द्र	मपु० २९.८८
६९.	मानुषोत्तर	मपु० ५.२९१
७०.	माल्यगिरि	मपु० ३०.२६-२७
७१.	मुकुन्द	मपु० ३०.५०
७२.	मुनिसागर	मपु० ६३.९१-९५
७३.	मेघरव	पपु० ८.९०-९५
७४.	मेरु	मपु० ४.४७-४८
७५.	रतिकर	हपु० ५.६७३-६७६
७६.	रतिशैल	पपु० ५३.१५८-१६०
७७.	रत्नावर्त	मपु० ४७.२१-२२
७८.	रथावर्त	मपु० ६२.१२६
७९.	रामगिरि	हपु० ४६.१७-२३
८०.	रुचकवर	हपु० ५.६९९-७२८
८१.	रैवतक	मपु० ७१.१७९-१८१
८२.	वंशधर	पपु० १.८४
८३.	वनगिरि	मपु० ६७.९०-१२१
८४.	वनसिंह	वीवच० ४.२
८५.	वराह	मपु० ७२.१०८-११०
८६.	वरुण	हपु० २७.११-१४
८७.	वलाहक	पपु० ८.२४
८८.	वसन्त	पपु० २१-२३-१२७
८९.	वासवन्त	मपु० २९.७०
९०.	विजयार्ध	मपु० १८.१७०-१७६
९१.	विद्युत्प्रभ	हपु० ५.२१२
९२.	विपुलाचल	मपु० १.१९६
९३.	विमलकान्तार	मपु० ५९.१८८
९४.	वेलन्धर	पपु० ५४.६४
९५.	वैडूर्य	मपु० २९.६७
९६.	वैताढ्य	हपु० ४२.१४-१९
९७.	वैभार	मपु० २९.४६
९८.	शंखशैल	मपु० ६३.२४६-२४८
९९.	शत्रुंजय	मपु० ७२.२६७-२७०
१००.	शिखिभूधर	मपु० ७६.३२३-३२४
१०१.	शीतगुह	मपु० २९.८९
१०२.	श्री	मपु० २९.९०
१०३.	श्रीकटन	मपु० २९.८९
१०४.	श्रीनाग	मपु० ६६.२, १३-१४
१०५.	श्रीप्रभ	मपु० १०.१-३
१०६.	श्रीशैल	पपु० १९.१०६
१०७.	सन्ध्यावर्त	पपु० ८.२४-२८
१०८.	सर्वशैल	मपु० ६२.४९६
१०९.	सितगिरि	मपु० २९.६८
११०.	सिद्धिगिरि	मपु० ६३.३७-३९
१११.	सीमन्त	मपु० ६७.६१
११२.	सुमन्दर	मपु० ३०.५०
११३.	सुवेलगिरि	पपु० ५४.६२-७१
११४.	सौम्य	हपु० ७०.२७९
११५.	स्फुरत्पीठ	मपु० ६८.६४३-६४६
११६.	ह्रीमन्त	मपु० ६२.२७४

महानदियाँ

१. गंगा	२. सिन्धु	३. रोह्या/रोहित
४. रोहितास्या	५. हरित्	६. हरिकान्ता
७. सीता	८. सीतोदा	९. नारी
१०. नरकान्ता	११. सुवर्णकूला	१२. रूप्यकूला
१३. रक्ता	१४. रक्तोदा	

मपु० ६३.१९५-१९६, हपु० ५.१२३-१२४

जम्बूद्वीप के विदेहक्षेत्र में स्थित सोलह वक्षारगिरि

१. चित्रकूट २. पद्मकूट ३. नलिनकूट ४. एकशैल
५. त्रिकूट ६. वैश्रवणकूट ७. अंजनात्म ८. आत्मांजन/अंजन
९. श्रद्धावान् १०. विजयवान्/विजयावती ११. आशीर्विष १२. सुखावह
१३. चन्द्रमाल १४. सूर्यमाल १५. नागमाल १६. मेघमाल/देवमाल

मपु० ६३.२०२-२०४, हपु० ५.२२८-२३५

बत्तीस विदेह (देश) एवं उनकी राजधानियाँ

देश का नाम	राजधानी
१. कच्छा	क्षेमा
२. सुकच्छा	क्षेमपुरी
३. महाकच्छा	अरिष्टा/रिष्टा
४. कच्छकावती	अरिष्टपुरी/रिष्टपुरी
५. आवर्ता	खड्गा/खंगा
६. लांगला	मंजूषा
७. पुष्कला	औषधी
८. पुष्कलावती	पुण्डरीकिणी
९. वत्सा	सुसीमा
१०. सुवत्सा	कुण्डला
११. महावत्सा	अपराजिता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देश का नाम	राजधानी
१२. वत्सकावती	प्रभंकरा
१३. रम्या	अंकावती
१४. रम्यका	पद्मावती
१५. रमणीया	शुभा
१६. मंगलावती	रत्नसंचया
१७. पद्मा	अश्वपुरी
१८. सुपद्मा	सिंहपुरी
१९. महापद्मा	महापुरी
२०. पद्मावती/पद्मकावती	विजयापुरी
२१. शंखा	अरजा
२२. नलिना/नलिनी	विरजा
२३. कुमुदा	अशोका
२४. सरिता	वीतशोका
२५. वप्रा	विजया
२६. सुवप्रा	वैजयन्ती
२७. महावप्रा	जयन्ती
२८. वप्रकावती	अपराजिता
२९. गन्धा	चक्रा
३०. सुगन्धा	खड्गा/खंगा
३१. गन्धावत्सुगन्धा/गन्धिका	अयोध्या
३२. गन्धमालिनी	अवध्या

मपु० ६३.२०८-२१८, हपु० ५.२४४-२५२, २५७-२६६

वन

क्र० सं०	नाम वन	सन्दर्भ
१.	अक्षयवन	पपु० ५४.७२
२.	अशोक	मपु० ७५.६७६-६७७, २२.१८०
३.	आम्र	मपु० २२.१६३, १८३
४.	उपपाण्डुक	हपु० ५.३०९
५.	उपसौमनस	हपु० ५.३०८
६.	उल्कामुख	मपु० ७०.१५६
७.	कपित्थ	मपु० ७५.४७९
८.	कालंजर	पपु० ५९.१२
९.	कालक	मपु० ५९.१९६
१०.	कालिंगक	मपु० २९.८२
११.	कुटज	मपु० ७४.३८९-३९०
१२.	कौशाम्ब	हपु० ६२.१५-६१
१३.	क्षीरवन	मपु० ७२.१२०
१४.	खण्डवन	मपु० ७४.३०२-३०४
१५.	खदिर	मपु० १२.५१-५३
१६.	गोधा	मपु० ७०.४३१
१७.	चन्दन	मपु० ६२.४०९
१८.	चम्पक	मपु० २२.१६३
१९.	चारणचरित	पपु० ६.१२६-१३१
२०.	चारणप्रिय	पपु० ४६.१४१-१४३
२१.	चैत्रवन	मपु० ६९.५४
२२.	ज्योतिर्वन	मपु० ६२.२२८
२३.	दण्डकारण्य	मपु० ७५.५५४
२४.	दशार्णक	मपु० २९.४४
२५.	दुर्जय	हपु० ४७.४३
२६.	देवरमण	हपु० ५.३६०
२७.	धान्यकमाल	मपु० ४६.९४
२८.	नन्दन	मपु० ५.१४४
२९.	नन्दिघोष	मपु० ७२.३-१४
३०.	नागरमण	हपु० ५.३०७
३१.	नारिकेलवन	मपु० ३०.१३-१४
३२.	निकुंज	पपु० ८५.६३
३३.	नील	मपु० ६७.४१
३४.	पाण्डुक	हपु० ५.३०८-३०९
३५.	पुष्पवन	पपु० ७.१४६
३६.	प्रकीर्णक	पपु० ४६.१४३-१४६
३७.	प्रियंखुखण्ड	मपु० ५९.२७४
३८.	प्रीतिंकर	मपु० ५९.२-७
३९.	भद्रशाल	मपु० ५.१८२
४०.	भीमवन	मपु० ५९.११६
४१.	भूतरमण	हपु० ८५-३०७
४२.	भूतवन	मपु० ४७.६५-६७
४३.	मधुक	मपु० ६२.८६-८७
४४.	मनोहर	मपु० ५२.५१
४५.	मन्दारुणारण्य	पपु० ८.२४
४६.	महाकाल	हपु० ३३.१०२
४७.	मेखला	पपु० ८.४५२-४५३
४८.	विजय	हपु० ६२.१३-१५
४९.	वेत्रवन	हपु० २१.१०२-१०३
५०.	शल्लकी	पपु० ८५.१४७-१६३
५१.	शिवंकर	मपु० ४६.१९-२०
५२.	श्लेषमान्तक	हपु० ४५.६९
५३.	श्वेतवन	मपु० ६६.४७
५४.	संभूतरमण	मपु० ६२.३७९-३८०
५५.	सप्तपर्ण	हपु० ५.३९७-४२२
५६.	समुच्चय	पपु० ४६.१४१
५७.	सर्वतुंक	मपु० ५४.२१६-२१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाग बन	सन्दर्भ
५८.	सल्लकी	मपु० ५९.१९७
५९.	सहस्राम्र	हपु० ४३.२००-२०२
६०.	सहायवन	पापु० १७.७३-७४
६१.	सहेतुक	मपु० ४८.३८-३९
६२.	सह्य	मपु० ३०.२७
६३.	सालकानन	मपु० १२.२२१
६४.	सिंहगिरि	मपु० ७४.१६९
६५.	सिद्धार्थ	मपु० १७.४१७
६६.	सिद्धि	मपु० ४८.७९
६७.	सुरनिपात	मपु० ६३.१२७-१२९

बारह विभंग नदियाँ

१. ह्रदा/ग्राहवती २. ह्रदवती ३. पंकवती
४. तप्तजला ५. मत्तजला ६. उन्मत्तजला
७. क्षीरोदा ८. शीतोदा ९. स्रोतोऽन्तर्वाहिनी
१०. गन्धमालिनी/गन्धमादिनी ११. फेनमालिनी १२. ऊर्मिमालिनी

मपु० ६३.२०६-२०७, हपु० ५.२३९-२४३

सोलह सरोवर

१. पद्म २. महापद्म ३. तिगिच्छ ४. केसरी
५. महापुण्डरीक ६. पुण्डरीक ७. निषध ८. देवकुरु
९. सूर्य १०. सुलस ११. विद्युत्प्रभ १२. नीलवान
१३. उत्तरकुरु १४. चन्द्र १५. ऐरावत १५. माल्यवान

मपु० ६३.१९७-१९९, हपु० ५.१२१

अस्त्र-शस्त्र

क्र० सं०	नाम अस्त्र-शस्त्र	संदर्भ
१.	अंह्रिप	पपु० १२.२५७
२.	आग्नेयास्त्र	पपु० १२.३२२-३२४
३.	आर्ष्टि	पपु० ६२.४५
४.	इन्धन	पपु० ७४.१०५
५.	ऐशान	हपु० २५.४८
६.	कनक	पपु० १२.२११
७.	क्रकच	मपु० १०.५९
८.	गरुडास्त्र	पपु० १२.३३२-३३६
९.	घन	पपु० १२.२५८
१०.	चण्डरवा	पपु० ६४.२७
११.	जृम्भण	हपु० २५.४८
१२.	दन्दशूक	पपु० ७४.१०८-१०९
१३.	नागास्त्र	पपु० १२.३३२
१४.	नारायण	हपु० ५२.५४

क्र० सं०	नाम अस्त्र-शस्त्र	सन्दर्भ
१५.	पाप	पपु० ७४.१०४
१६.	बन्धन	हपु० २५.४८
१७.	बर्हणास्त्र	पपु० ७४.११०-१११
१८.	ब्रह्मशिरस्	मपु० ५२.५५
१९.	भास्करास्त्र	हपु० ५२.५५
२०.	भिण्डिमाल	पपु० ७.९५-९६
२१.	भृकुण्डी	पपु० १२.२५८
२२.	भूतमुखखेट	मपु० ३७.१६८
२३.	मनोवेग	मपु० ३७.१६६
२४.	महाश्वसन	हपु० ५२.५०
२५.	माहेन्द्र	पपु० ७४.१००-१०१
२६.	मुद्गर	मपु० ४४.१४३
२७.	मुसेल	पपु० १२.२५७
२८.	मोक्षण	हपु० २५.४८
२९.	मोहन	हपु० २५.४८
३०.	यमदण्ड	हपु० २५.४८
३१.	राक्षस	हपु० ५२.५४
३२.	रौद्रास्त्र	हपु० ३१.१२२-१२३
३३.	लकुट	मपु० ३.१०५
३४.	लांगल	पपु० १२.२५८
३५.	लांगूल	पपु० ५४.३७
३६.	लोकोत्सादन	हपु० २५.४७-५०
३७.	वज्र	मपु० १.४३
३८.	वज्रदण्ड	मपु० ८.२३८
३९.	वातपृष्ठ	मपु० २९.६९
४०.	वारुण	पपु० ६०.१३८
४१.	विघ्नविनायक	पपु० ७४.१११
४२.	विशल्यकरण	हपु० २५.४९
४३.	वृत्तवैताढ्य	हपु० ५.५८८
४४.	वैरोचन	हपु० ५२.५३
४५.	व्यस्त्र	मपु० ३१.७२
४६.	व्रतसंरोहण	हपु० २५.४९-५०
४७.	शक्ति	मपु० ४४.२२७
४८.	शतघ्नी	पपु० १९.४२-४३
४९.	शिलीमुख	पपु० ५८.३४
५०.	शूल	पपु० १२.२५८
५१.	संवर्तक	हपु० ५२.५०
५२.	सर्वास्त्रच्छादन	हपु० २५.४६-४९
५३.	सहस्रकिरण	पपु० ७४.१०८
५४.	सिद्धार्थ	पपु० ७५.१८-१९
५५.	हल	पपु० ६०.१४०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभूषण

क्र० सं०	नाम आभूषण	संदर्भ
१.	अंगद	मपु० ३.२७, ७.२३५
२.	अपवर्तिका	मपु० १६.४९-५१
३.	अवतंश	हपु० ४३.२४
४.	अवतंशिका	मपु० ३७.१५३
५.	कटक	मपु० ३.२७, पपु० ३.१९३
६.	कटिसूत्र	पपु० ३.१९४
७.	कण्ठक	हपु० ६२.८
८.	कण्ठमालिका	मपु० ६.८
९.	कण्ठाभरण	मपु १५.१९३
१०.	किरीट	मपु० ११.१३३
११.	कुण्डल	मपु० ३.२७
१२.	कुण्डली	मपु० ३.७८
१३.	केयूर	मपु० ३.२७
१४.	ग्रैवेयक	मपु० २९.१६७
१२,	चूड़ामणि	मपु० ४.९४
१६.	नूपुर	मपु० ६.६३
१७.	पट्टबन्ध	मपु० १६.२३३
१८.	मणिकुण्डल	मपु० ९.१९०
१९.	मणिमाध्यमा	मपु० १६.५०
२०.	गणितोपान	मपु० १६.६५-६६
२१.	मुकुट	मपु० ३.९१
२२.	मुक्ताहार	मपु० १५.८१
२३.	मुद्रिका	मपु० ७.२३५
२४.	मेखला	मपु० ३.२७
२५.	यष्टि	मपु० १६.४६-४७
२६.	रत्नावली	मपु० १६.४६
२७	रश्मिकलाप	मपु० १६.५९
२८.	विजयच्छन्द	मपु० १६.५७
२९.	शीर्षकयष्टि	मपु० १६.५२
३०.	हारयष्टि	मपु० ७.२३१
३१.	हारलता	मपु० १५.१९३-१९४
३२.	हारवल्लरी	मपु० १५.१९४
३३.	हेमजाल	मपु० ३०.१२७

इक्ष्वाकुवंश

अकारादि क्रम में इस वंश के निम्न नृप हुए हैं—

क्र० सं०	नाम नृप	सन्दर्भ
१.	अनन्तरथ	पपु० २२.१६२
२.	अनरण्य	पपु० २२.१६०
३.	अर्ककीर्ति	पपु० २१.५६
४.	इन्द्ररथ	पपु० २२.१५४-१५९
५.	ऋषभदेव	पपु० २१.५६
६.	ककुत्थ	पपु० २२.१५८
७.	कमलबन्धु	पपु० २२.१५५-१५९
८.	कीर्तिधर	पपु० २१.१४०
९.	कुन्थुभक्ति	पपु० २२.१५७
१०.	कुबेरदत्त	पपु० २२.१५६-१५९
११.	कृतवीर	मपु० ६५.५६-५८
१२.	चतुर्वक्त्र	पपु० २२.१५३, १५९
१३.	जितशत्रु	हपु० २८.१४-२७
१४.	दशरथ	पपु० २२.१६२
१५.	दिननाथरथ	पपु० २२.१५४-१५९
१६.	द्विरदरथ	पपु० २२.१५७
१७.	धरणीधर	पपु० ५.५९-६०
१८.	नघुष	पपु० २२.११३
१९.	पद्मनाभ	मपु० ५४.१३०-१७३
२०.	पुंजस्थल	पपु० २२.१५८
२१.	पुरन्दर	पपु० २१.७७
२२.	पृथु	पपु० २२.१५४-१५९
२३.	प्रतिमन्यु	पपु० २२.१५५
२४.	प्रियमित्र	मपु० ६१.८८
२५.	ब्रह्मरथ	पपु० २२.१५४
२६.	भरत	पपु० २१.५६
२७.	मान्धाता	पपु० २२.१५४-१५५
२८.	मृगेशदमन	पपु० २२.१५७-१५८
२९.	मेरु	हपु० ५०.७०
३०.	रघु	पपु० २२.१५८
३१.	रविमन्यु	पपु० २२.१५५-१५९
३२.	वज्रबाहु	पपु० २१.७७
३३.	वसन्ततिलक	पपु० २२.१५६-१५९
३४.	विजय	पपु० २१.७४
३५.	वीरसेन	पपु० २२.१५५
३६.	शतरथ	पपु० २२.१५३-१५४
३७.	शरभरथ	पपु० २२.१५७
३८.	समुद्रविजय	मपु० ४८.७१-७२
३९.	सिंहरथ	पपु० २२.१४५
४०.	सिंहसेन	मपु० ६०.१६-२२
४१.	सुकोशल	पपु० २१.१६४
४२.	सुरेन्द्रमन्यु	पपु० २१.७५
४३.	सोमदेव	पपु० २१.५६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम नृप	सन्दर्भ
४४.	सौदास	पपु० २२.१३१
४५.	हिरण्यकशिपु	पपु० २२.१५८-१५९
४६.	हिरण्यगर्भ	पपु० २२.१०२
४७.	हेमरथ	पपु० २०.१५३

नोट:—सूर्यवंश और चन्द्रवंश इसी वंश की दो शाखाएँ हैं।

कौरव वंश

अकारादि क्रम में इस वंश में निम्न राजा हुए हैं—

क्र० सं०	नाम राजा	सन्दर्भ
१.	अरहनाथ	हपु० ४५.२१
२.	अर्जुन	हपु० ४५.३७
३.	इन्द्रवीर्य	हपु० ४५.२७
४.	इभवाहन	हपु० ४५.१४
५.	कर्ण	हपु० ४५.३७
६.	कीर्ति	हपु० ४५ २५
७.	कुन्थुनाथ	हपु० ४५.२०
८.	कुरु	हपु० ४५.९
९.	कुरू	हपु० ४५.१९
१०.	कुरुचन्द्र	हपु० ४५.९
११.	कुलकीर्ति	हपु० ४५.२५
१२.	गंगदेव	हपु० ४५.११
१३.	चन्द्रचिह्न	पापु० ६.३
१४.	चारु	हपु० ४५.२३
१५.	चारुपद्म	हपु० ४५.२३
१६.	चारुरूप	हपु० ४५.२३
१७.	चित्र	हपु० ४५.२७
१८.	चित्ररथ	हपु० ४५.२८
१९.	जयकुमार	हपु० ४५.८
२०.	जयराज	हपु० ४५.१५
२१.	द्वीप	हपु० ४५.३०
२२.	द्वीपायन	हपु० ४५.३०
२३.	दुर्योधन	हपु० ४५.३६
२४.	धाराग	हपु० ४५.२९
२५.	धृत	हपु० ४५.२९
२६.	धृत	हपु० ४५.३२
२७.	धृततेज	हपु० ४५.३२
२८.	धृतधर्मा	हपु० ४५.३२
२९.	धृतपद्म	हपु० ४५.१२
३०.	धृतमान	हपु० ४५.३२
३१.	धृतयश	हपु० ४५.३२
३२.	धृतराज	हपु० ४५.३३
३३.	धृतराष्ट्र	हपु० ४५.३४
३४.	धृतवीर्य	हपु० ४५.१२
३५.	धृतव्यास	हपु० ४५.३१
३६.	धृतिकर	हपु० ४५.९
३७.	धृतिकर	हपु० ४५.११
३८.	धृतिकर	हपु० ४.५१३
३९.	धृतिक्षेम	हपु० ४५.११
४०.	धृतिदेव	हपु० ४५.११
४१.	धृतिदृष्पिट	हपु० ४५.१३
४२.	धृतिद्युति	हपु० ४५.१३
४३.	धृतिमित्र	हपु० ४५.११
४४.	धृतेन्द्र	हपु० ४५.१२
४५.	धृतोदय	हपु० ४५.३२
४६.	नकुल	हपु० ४५.३८
४७.	नरहरि	हपु० ४५.१९
४८.	नारायण	हपु० ४५.१९
४९-	पद्म	हपु० ४५.२४
५०.	पद्मदेव	हपु० ४५.२५
५१.	पद्ममाल	हपु० ४५.२४
५२.	पद्मरथ	हपु० ४५.२४
५३.	पाण्डु	हपु० ४५.३४
५४.	पारशर	हपु० ४५.२९
५५.	पृथु	हपु० ४५.१४
५६.	प्रतिष्ठित	हपु० ४५.१२
५७.	प्रतिसर	हपु० ४५.२९
५८.	प्रशान्ति	हपु० ४५.१९
५९.	प्रीतिकर	हपु० ४५.१३
६०.	बलि	हपु० ४८.४८
६१.	बृहध्वज	हपु० ४५.१७
६२.	भोम	हपु० ४५.३७
६३.	भीष्म	हपु० ४५.३५
६४.	भ्रमरघोष	हपु० ४५.१४
६५.	मन्दर	हपु० ४५.११
६६.	महापद्म	हपु० ४५.२४
६७.	महारथ	हपु० ४५.२८
६८.	महाराज	हपु० ४५.१५
६९.	महासर	हपु० ४५.२९
७०.	युधिष्ठिर	हपु० ४५.३७
७१.	वरकुमार	हपु० ४५.१७
७२.	वसु	हपु० ४५.२६
७३.	वसुकीर्ति	हपु० ४५.२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम राजा	सन्दर्भ
७४.	वसुन्धर	हपु० ४५.२६
७५.	वसुरथ	हपु० ४५.२७
७६.	वासव	हपु० ४५ २६
७७.	वासुकि	हपु० ४५.२६
७८.	विचित्र	हपु० ४५.२७
७९.	विचित्र	हपु० ४५.२७
८०.	विचित्रवीर्य	हपु० ४५.२७
८१.	विजय	हपु० ४५.१५
८२.	विदुर	हपु० ४५.३४
८३.	विश्व	हपु० ४५.१७
८४.	विश्वकेतु	हपु० ४५.१७
८५.	विश्वसेन	हपु० ४५.१८
८६.	विष्णु	हपु० ४५.२४
८७.	वीर्य	हपु० ४५.२७
८८.	वृतरथ	हपु० ४५.२८
८९.	वृषध्वज	हपु० ४५.२८
९०.	वृषानन्त	हपु० ४५.२८
९१.	वैश्वानर	हपु० ४५.१७
९२.	व्रतधर्मा	हपु० ४५.२९
९३.	व्रात	हपु० ४५.११
९४.	शन्तनु	हपु० ४५.३१
९५.	शर	हपु० ४५.२९
९६.	शरद्वीप	हपु० ४५.३०
९७.	शशांकांक	हपु० ४५.१९
९८.	शान्तिचन्द्र	हपु० ४५.१९
९९.	शान्तिनाथ	हपु० ४५.१८
१००.	शान्तिभद्र	हपु० ४५.३०
१०१.	शान्तिवर्धन	हपु० ४५.१९
१०२.	शान्तिषेण	हपु० ४५.३०
१०३.	शुभंकर	हपु० ४५.९
१०४.	श्रीचन्द्र	हपु० ४५.१२
१०५.	श्रीवसु	हपु० ४५.२६
१०६.	श्रीव्रत	हपु० ४५.२९
१०७.	श्रेयान्	हपु० ४५.९
१०८.	सनत्कुमार	हपु० ४५.१६
१०९.	सहदेव	हपु० ४५.३८
११०.	सुकुमार	हपु० ४५.१७
१११.	सुकीर्ति	हपु० ४५.२५
११२.	सुचारु	हपु० ४५.२३
११३.	सुतेजस	हपु० ४५.१४
११४.	सुदर्शन	हपु० ४५.२१
११५.	सुपद्म	हपु० ४५.२५
११६.	सुप्रतिष्ठ	हपु० ४५.१२
११७.	सुभौम	हपु० ४५.२४
११८.	सुमित्र	हपु० १८.१९
११९.	सुवसु	हपु० ४५.२६
१२०.	सुव्रत	हपु० ४५.११
१२१.	सुशान्ति	हपु० ४५.३०
१२२.	सूर्य	हपु० ४५.२०
१२३.	सूर्यघोष	हपु० ४५.१४
१२४.	सोमप्रभ	हपु० ४५.७
१२५.	हरिघोष	हपु० ४५.१४
१२६.	हरिध्वज	हपु० ४५.१४

गान्धर्व-भेद-प्रभेद

१. स्वरगत-गान्धर्व-भेद

वैणस्वर भेद

१. श्रुति	२. वृत्ति	३. स्वर	
४. ग्राम	५. वर्ण	६. अलंकार	
७. मूर्च्छना	८. धातु	९. साधारण	

हपु० १९.१४७

शरीर स्वर-भेद

१. जाति	२. वर्ण	३. स्वर	४. ग्राम
५. स्थान	६. साधारणक्रिया	७. अलंकारविधि	

हपु० १९.१४८

२. पदगत-गान्धर्व-भेद

१. जाति	२. तद्धित	३. छन्द	४. सन्धि	
५. स्वर	६. विभक्ति	७. सुबन्त	८. तिङन्त	
९. उपसर्ग	१०. वर्ण			

हपु० १९.१४९

३. तालगत-गान्धर्व-भेद

१. आवाप	२. निष्काम	३. विक्षेप	४. प्रवेशन
५. शम्यातात	६. परावर्त	७. सन्नितपात	८. सवस्तुक
९. मात्रा	१०. अविदार्य	११. अंग	१२. लय
१३. गति	१४. प्रकरण	१५. यति	
१६. गीति (दो प्रकार की)		१७. मार्ग	१८. अवयव
१९. पादभाग		२०. सपाणि	

हपु० १९.१५०-१५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वर भेद

१. षड्ज २. ऋषभ ३. गान्धार ४. मध्यम
५. पंचम ६. धैवत ७. निषाद

पपु० १७.२७७ हपु० १९.१५३

षड्जग्राम की जातियाँ

१. षाड्जी २. आर्षभी ३. धैवती ४. निषादजा
५. सुषड्जा ६. उदीच्यवा ७. षड्जकैशिकी ८. षड्जमध्या

हपु० १९.१७४-१७५

षड्जग्राम की मूर्च्छनाएँ

१. उत्तरमन्द्रा २. रजनी ३. उत्तरायता
४. शुद्धिषड्जा ५. मत्सरीकृता ६. अश्वक्रान्ता
७. आभिरुद्गता

हपु १९.१६१-१६२

मध्यमाश्रित जातियाँ

१. गान्धारी २. मध्यमा ३. गान्धारोदीच्यवा
४. पंचमी ५. रक्तगान्धारी ६. रक्तपंचमी
७. मध्यमोदीच्यमा ८. नन्दयन्ती ९. कर्मारवी
१०. आन्ध्री ११. कैशिकी

हपु० १९.१७५-१७७

मध्यम ग्राम की मूर्च्छनाएँ

१. सौवीरी २. हरिणाश्वा ३. कलोपनता ४. शुद्धमध्यमा
५. मार्गवी ६. पौरवी ७. हृष्यका

हपु० १९.१६३-१६४

राजा धृतराष्ट्र और रानी गान्धारी के सौ पुत्र

क्रमांक	नाम	नाम पुराण	सन्दर्भ पर्व	श्लोक
१.	दुर्योधन	पाण्डव पु०	८	१८७-१९१
२.	दुःशासन	,,	,,	१९२
४.	दुर्धर्षण	,,	,,	१९३
५.	रणश्रान्त	,,	,,	,,
६.	समाध	,,	,,	,,
७.	विद	,,	,,	,,
८.	सर्वसह	,,	,,	,,
९.	अनुविन्द	,,	,,	१९४
१०.	सुभीम	,,	,,	,,
११.	सुबाहु	,,	,,	,,
१२.	दुःसह	,,	,,	,,
१३.	दुःशल	,,	,,	,,
१४.	सुगात्र	,,	,,	,,
१५.	दुःकर्ण	पाण्डव पु०	८	१९४
१६.	दुःश्रव	,,	,,	,,
१७.	वरवंश	,,	,,	१९५
१८.	अवकीर्ण	,,	,,	,,
१९.	दीर्घदर्शी	,,	,,	,,
२०.	सुलोचन	,,	,,	,,
२१.	उपचित्र	,,	,,	,,
२२.	विचित्र	,,	,,	,,
२३.	चारुचित्र	,,	,,	,,
२४.	शरासन	,,	,,	,,
२५.	दुर्मद	,,	,,	१९६
२६.	दुःप्रगाह	,,	,,	,,
२७.	युयुत्सु	,,	,,	,,
२८.	विकट	,,	,,	,,
२९.	ऊर्णनाभ	,,	,,	,,
३०.	सुनाभ	,,	,,	,,
३१.	नन्द	,,	,,	,,
३२.	उपनन्दक	पाण्डव पु०	८	१९६
३३.	चित्रवाणि	,,	,,	१९७
३४.	चित्रवर्मा	,,	,,	,,
३५.	सुवर्मा	,,	,,	,,
३६.	दुर्विमोचन	,,	,,	,,
३७.	अयोबाहु	,,	,,	,,
३८.	महाबाहु	,,	,,	,,
३९.	श्रुतवान्	,,	,,	,,
४०.	पद्मलोचन	,,	,,	,,
४१.	भीमबाहु	,,	,,	१९८
४२.	भीमबल	,,	,,	,,
४३.	सुसेन	,,	,,	,,
४४.	पण्डित	,,	,,	,,
४५.	श्रुतायुध	,,	,,	,,
४६.	सुवीर्य	,,	,,	,,
४७.	दण्डधार	,,	,,	,,
४८.	महोदर	,,	,,	,,
४९.	चित्रायुध	,,	,,	१९९
५०.	निषंगी	,,	,,	,,
५१.	पाश	,,	,,	,,
५२.	वृन्दारक	,,	,,	,,
५३.	शत्रुंजय	,,	,,	,,
५४.	शत्रुसह	,,	,,	,,
५५.	सत्यसन्ध	,,	,,	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	नाम	नाम पुराण	सन्दर्भ पर्व	श्लोक संख्या
५६.	सुदुःसह	पाण्डव पु०	८	१९९
५७.	सुदर्शन	,,	,,	२००
५८.	चित्रसेन	,,	,,	,,
५९.	सेनानी	,,	,,	,,
६०.	दुःपराजय	,,	,,	,,
६१.	पराजित	,,	,,	,,
६२.	कुण्डशायी	,,	,,	,,
६३.	विशालाक्ष	,,	,,	,,
६४.	जय	,,	,,	,,
६५.	दृढहस्त	,,	,,	२०१
६६.	सुहस्त	,,	,,	,,
६७.	वातवेग	,,	,,	,,
६८.	सुवर्चस्	,,	,,	,,
६९.	आदित्यकेतु	,,	,,	,,
७०.	बह्वाशी	,,	,,	,,
७१.	निबन्ध	,,	,,	,,
७२.	विप्रियोदि	,,	,,	,,
७३.	कवची	,,	,,	२०२
७४.	रणशौण्ड	,,	,,	,,
७५.	कुण्डधार	,,	,,	,,
७६.	धनुर्धर	,,	,,	,,
७७.	उग्ररथ	,,	,,	,,
७८.	भीमरथ	,,	,,	,,
७९.	शूरबाहु	,,	,,	,,
८०.	अलोलुप	,,	,,	,,
८१.	अभय	,,	,,	२०३
८२.	रौद्रकर्मा	,,	,,	,,
८३.	दृढरथ	,,	,,	,,
८४.	अनादृष्ट	,,	,,	,,
८५.	कुण्डभेदी	,,	,,	,,
८६.	विराजी	,,	,,	,,
८७.	दीर्घलोचन	,,	,,	,,
८८.	प्रथम	,,	,,	२०४
८९.	प्रमाथी	,,	,,	,,
९०.	दीर्घालाप	,,	,,	,,
९१.	वीर्यवान्	,,	,,	,,
९२.	दीर्घबाहु	,,	,,	,,
९३.	महावक्ष	,,	,,	,,
९४.	दृढवक्ष	,,	,,	,,
९५.	सुलक्षण	,,	,,	,,
९६.	कनक	,,	,,	२०५
९७.	कांचन	पाण्डव पु०	८	२०५
९८.	सुध्वज	,,	,,	,,
९९.	सुभुज	,,	,,	,,
१००.	अरज	,,	,,	,,

राक्षस वंश

इस वंश में अकारादि क्रम में निम्न राजा हुए हैं—

क्र० सं०	नाम राजा	सन्दर्भ
१.	अनिल	पपु० ५.३९७
२.	अनुत्तर	पपु० ५.३९६
३.	अमृतवेग	पपु० ५.३९३
४.	अरिमर्दन	पपु० ५.३९६
५.	अरिसंत्रास	पपु० ५.३९८
६.	अर्हद्भक्ति	पपु० ५.३९६
७.	आदित्यगति	पपु० ५.३८
८.	इन्द्र	पपु० ५.३९४
९.	इन्द्रजित्	पपु० ५.३९४
१०.	इन्द्रप्रभ	पपु० ५.३९४
११.	उग्रश्री	पपु० ५.३९६
१२.	उद्धारक	पपु० ५.३९५
१३.	कीर्तिधवल	पपु० ५.४०३
१४.	गतप्रभ	पपु० ५.३९७
१५.	गृहक्षोभ	पपु० ५.३९८
१६.	घनप्रभ	पपु० ५.४०३
१७.	चकार	पपु० ५.३९५
१८.	चण्ड	पपु० ५.३९७
१९.	चन्द्रावर्त	पपु० ५.३९८
२०.	चामुण्ड	पपु० ५.३९६
२१.	चिन्तागति	पपु० ५.३९३
२२.	जितभास्कर	पपु० ५.३९८
२३.	त्रिजट	पपु० ५.३९५
२४.	द्विपवाह	पपु० ५.३९६
२५.	नक्षत्रदमन	पपु० ५.३९८
२६.	निर्वाणभक्ति	पपु० ५.३९६
२७.	पवि	पपु० ५.३९४
२८.	पूजार्ह	पपु० ५.३८८
२९.	प्रमोद	पपु० ५.३९५
३०.	बृहत्कांत	पपु० ५.३९८
३१.	बृहद्गति	पपु० ५.३९७
३२.	भानु	पपु० ५.३९४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम राजा	सन्दर्भ
३३.	भानुगति	पपु० ५.३९३
३४.	भानुप्रभ	पपु० ५.३९४
३५.	भानुवर्मा	पपु० ५.३९४
३६.	भास्कराभ	पपु० ५.३९७
३७.	भीम	पपु० ५.३९५
३८.	भीमप्रभ	पपु० ५.३८२
३९.	भीष्म	पपु० ५.३९६
४०.	मनोरम्य	पपु० ५.३९७
४१.	मनोवेग	पपु० ५.३७८
४२.	मयूरवान्	पपु० ५.३९७
४३.	मरीच	पपु० १२.१९६
४४.	महाबाहु	पपु० ५.३९७
४५.	महारथ	पपु० ५.३९८
४६.	मारण	पपु० ५.३९६
४७.	माली	प्रपु० ६.५३०-५६५
४८.	मृगारिदमन	पपु० ५.३९४
४९.	मेघ	पपु० ५ ३९४
५०.	मेघध्वन	पपु० ५.३९८
५१.	मोहन	पपु० ५.३९५
५२.	रवि	पपु० ५.३९५
५३.	राक्षस	पपु० ५.३७८
५४.	लंकाशोक	पपु० ५.३९७
५५.	वज्रमध्य	पपु० ५.३९५
५६.	श्रीग्रीव	पपु० ५१.३९१
५७.	श्रीमाली	पपु० १२.२१२
५८.	संध्याभ्र	पपु० १२.१९७
५९.	संपरिकीर्ति	पपु० ५.३८९
६०.	सिंहजघान	पपु० ६०.२
६१.	सिंहविक्रम	पपु० ५.३९५
६२.	सुग्रीव	पपु० ५.३८९
६३.	सुभौम	पपु० ५.१४९
६४.	सुमुख	पपु० ५.३९२
६५.	सुरारि	पपु० ५.३९५
६६.	सुव्यक्त	पपु० ५.३९२
६७.	हरिग्रीव	पपु० ५.३९०

वाद्य

क्रमांक	नाम वाद्य	सन्दभ
१.	अम्लातक	पपु० ५८.२७-२८
२.	अलाबु	मपु० १२.२०३
३.	अवनद्ध	पपु० २४.२०-२१
४.	आनक	मपु० ७.२४२
५.	आनन्द भेरी	मपु० १६.१९७
६.	आनन्दपहट	मपु० २४.१२
७.	कम्ला	पपु० ८४.१२
८.	काहल	मपु० १७.११३
९.	घण्टा	मपु० १३.१३
१०.	तूर्य	मपु० १२.२०९
११.	दुन्दुभि	मपु० १३.१७७
१२.	पटह	मपु० २३.६३
१३.	पणव	मपु० २३.६२
१४.	भम्भा	पपु० ५८.२७
१५.	भेरी	मपु० १३.१३
१६.	मंडुक	पपु० ५८.२७
१७.	मर्दक	पपु० ६.३७९
१८.	मुरज	मपु० १२.२०७
१९.	मृदंग	मपु० ३.१७४
२०.	मेघघोषा	मपु० ४४.९३
२१.	लम्पाक	पपु० ५८.२७
२२.	वीणा	मपु० १२.१९९-२००
२३.	शंख	मपु० १३.१३
२४.	हक्का	पपु० ५८.२७
२५.	हुँकार	पपु० ५८.२७
२६.	हेतुगुंजा	पपु० ५८.२८

वानर वंश

अकारादि क्रम में इस वंश में निम्न राजा हुए हैं—

क्र० सं०	नाम राजा	सन्दर्भ
१.	अंकुर	पपु० ६०.५-६
२.	अंग	पपु० १०.१२
३.	अंगद	पपु० १०.१२
४.	अतीन्द्र	पपु० ६.२-५
५.	अनघ	पपु० ६०.५-६
६.	अन्ध्रकरूढ़ि	पपु० ६.३५२
७.	अमरप्रभ	पपु० ६.१६०-२००
८.	इन्द्रमत	पपु० ६.१६१
९.	ऋक्षरज	पपु० ७.७७
१०.	कपिकेतु	पपु० ६.१९८-२००
११.	किष्किन्ध	पपु० ६.३५२-३५८
१२.	खेचरानन्द	पपु० ६.२०५-२०६
१३.	गगनानन्द	पपु० ६.२०५
१४.	गिरिनन्दन	पपु० ६.२०५-२०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र० सं०	नाम राजा	संदर्भ
१५.	जाम्बव	पपु० ५४.५८
१६.	नन्दन	पपु० ६०.५-६
१७.	नल	पपु० ९.१३
१८.	नील	पपु० ९.१३
१९.	प्रतिचन्द्र	पपु० ६.३४९
२०.	प्रतिबल	पपु० ६.१९८-२००
२१.	प्रसन्नकीर्ति	पपु० १२.२०५-२१०
२२.	प्रीतिंकर	पपु० ६०.५-६
२३.	बाली	पपु० ९.१-२०
२४.	भूतस्वन	पपु० ७४.६१-६२
२५.	मन्दर	पपु० ६.१६१
२६.	महेन्द्रसेन	पपु० १२.२०५-२०६
२७.	महोदधि	पपु० ६.२१८-२२५
२८.	मेरु	पपु० ६.१६१
२९.	रविप्रभ	पपु० ६.१६१-१६२
३०,	वज्रकंठ	पपु० ६.१५०-१६०
३१.	वज्रप्रभ	पपु० ६.१६०-१६१
३२.	विशालद्युति	पपु० ६०.१४
३३.	श्रीकंठ	पपु० ६.३-१५१
३४.	सन्ताप	पपु० ६०.६-८
३५.	समीरणगति	पपु० ६.१६१
३६.	सुग्रीव	पपु० ८.४८७
३७.	सूर्यरज	पपु० ६.५२०-५२४

विद्या

अंगारिणी	हपु० २२.६१-६२
अग्निगति	हपु० २२.६८
अग्निस्तम्भिनी	मपु० ६२.३९१
अच्युता	हपु० २२.६१-६५
अजरा	पपु० ७.३२८-३३२
अणिमा	मपु० ५.२७९
अदर्शनी	पपु० ७.३२८-३३२
अनलस्तम्भिनी	पपु० ७.३२८-३३२
अन्तर्विचारिणी	हपु० २२.६७-६९
अप्रतिघातकामिनी	मपु० ६२.३९१-४००
अभोगिनी	मपु० ६२.४००
अमरा	पपु० ७.३२८-३३२
अमोघविजया	पपु० ९.२०९-२१४
अरिध्वंसी	पपु० ७.३२९-३३२
अवध्या	पपु० ७.३२९-३३२
अवलोकिनी	पपु० ७.३२९-३३२
अशव्याराधिनी	हपु० २२.७०-७३
आकाशगामिनी	मपु० ६२.३९२, ४००
आर्यकूष्माण्डदेवी	हपु० २२.६४
आलोकिनी	मपु० ७५.४२-४३
आवर्तनी	मपु० ६२.३९४
आवेशिनी	मपु० ६२.३९३
आशालिका	पपु० १२.१३७-१४५
इतिसंवृद्धि	पपु० ७.३३३
उत्पातिनी	हपु० २२.६९
उदकस्तम्भिनी	मपु० ६२.३९१-४००
उष्णदा	मपु० ६२.३९८
ऐशानी	पपु० ७.३३०-३३२
कामगामिनी	पपु० ७.३२५, ३३२
कामदायिनी	पपु० ७.३२५
कामधेनु	मपु० ६५.९८
कामरूपिणी	मपु० ६२.३९१
कालमुखी	हपु० २२.६६
काली	हपु० २२.६६
कुटिलावृत्ति	पपु० ७.३३०-३३२
कुभाण्डी	मपु० ६२.३९६
कूष्माण्डगणमाता	हपु० २२.६४
कौमारी	पपु० ७.३२६
कौवेरी	पपु० ७.३३१-३३२
क्षौम्या	पपु० ७.३२६
खगामिनी	पपु० ७.३३४
गदाविद्या	पापु० १५.१०
गरुडवाहिनी	मपु० ६२.१११-११२
गान्धारी	हपु० २२.६५
गान्धारपदा	मपु० १९.१८५
गिरिदारिणी	पपु० ७.३२८
गौरी	मपु० ६२.३९६
घोरा	पपु० ७.३२९
चपलवेगा	मपु० ६२.३९७
चाण्डाली	मपु० ६२.३९५
चित्तोद्भवकरी	पपु० ७.३३१-३३२
जयन्ती	हपु० २२.७०-७३
जया	पपु० ७०.३३०-३३२
जलगति	हपु० २२.६८
जृम्भिणी	पपु० ७.३३३
तपोरूपा	पपु० ७.३२७
तिरस्करिणी	हपु० २२.६३
तयोस्तम्भिनी	पपु० ७.३२८
त्रिपर्वा	हपु० २२.६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिपातिनी	हपु० २२.६८
दण्डभूतसहस्रक	हपु० २२.६५
दण्डाध्यक्षगण	हपु० २२.६५
दशपर्विका	हपु० २२.६७
द्विपर्वा	हपु० २२.६७
धारिणी	हपु० २२.६८-७३
नागवाहिनी	पापु० ४.५४
निर्वंज्ञशाड्वला	हपु० २२.६३
निर्वृत्ति	हपु० २२.६५
पटविद्या	मपु० २४.१
पर्णलघ्वी	मपु० ४७.२१-२२
पाण्डुकी	हपु० २२.८०
प्रज्ञप्ति	मपु० ६२.३९१
प्रतिबोधिनी	पपु० ६०.६०-६२
प्रभावती	मपु० ६२.३९५
प्रस्तर	मपु० ७२.११४-११५
प्रहारसंक्रामिणी	हपु० २२.७०
प्लवग	मपु० ६८.३६३-३६४
बहुरूपिणी	मपु० १४.१४१
भगवती	पपु० ७५.२२-२५
भद्रकाली	हपु० २२.६६
भयसंभूति	पपु० ७.३३०
भानुमालिनी	पपु० ७.३२५
भास्करी	पपु० ७.३३०
भीति	पपु० ७.३३१
भुजंगिनी	पपु० ७.३२९
भुवना	पपु० ७.३२४
भोगिनी	मपु० ७५.४३२-४३६
भ्रामरी	मपु० ६२.२३०
मंगला	हपु० २२.७०
मदनाशिनी	पपु० ७.३२९
मनस्तम्भनकारिणी	पपु० ७.३२६
मनोनुगामिनी	पपु० ५१.२५-४०
मनोवेगा	मपु० ६२.३९७
महाकाली	हपु० २२.६६
महागौरी	हपु० २२.६२
महाज्वाला	मपु० ६२.२७३
महाप्रज्ञप्ति	मपु० १९.१२
महावेगा	मपु० ६२.३९७
महाश्वेता	हपु० २२.६३
माक्षिकलक्षिता	मपु० ७१.३६६-३७२
मातंगी	मपु० ६२.३९५
मानस्तम्भिनी	पपु० ७.१६३
मान्याप्रस्थापिनी	मपु० ६२.३९३
मायूरी	हपु० २२.६३
माहेश्वरी	पापु० २०.३०८
मृतसंजीवनी	हपु० २२.७१
मोचिनी	पपु० ७.३३०
युद्धवीर्य	मपु० ६७.२७१
योगेश्वरी	पपु० ७.३३१-३३२
योधिनी	पपु० १९.६१
रजोख्या	पपु० ७.३२७
राक्षस	मपु० ७५.११६
राजविद्या	मपु० ४.१३६
रूपरावर्तन	मपु० ६८.१५२
रोहिणी	मपु० ६२.३९७
लक्षपर्वा	हपु० २२.६७
लघिमा	पपु० ७.३२६
लघुकरी	मपु० ६२.३९७
वज्रोदरी	पपु० ७.३२८
वधकारिणी	पपु० ७.३२६
वधमोचन	मपु० ६२.२४२-२४६
वशकारिणी	पपु० ७.३३१
वानर	मपु० ६८.५०८-५०९
वाराही	पपु० ७.३३०-३३२
वारुणी	पपु० ७.३२९-३३२
वास्तुविद्या	मपु० १६.१२२
विच्छेदिनी	पापु० ४.१४९-१५०
विजया	पपु० ७.३३०-३३२
विद्याविच्छेदिनी	मपु० ६२.२३४-२३९
विपलोदरी	पपु० ७.३२७
विपाटिनी	मपु० ६२.३९४
विरलवेगिका	मपु० ६२.३९६
विशल्यकारिणी	हपु० २२.७१
विश्वप्रवेशिनी	मपु० ६२.३८७-३९१
वेगावती	मपु० ६२.३९८
वैताली	मपु० ६२.३९८
व्योमगामिनी	मपु० ५.१००
व्रणसंरोहिणी	हपु० २२.७१
शतपर्वा	हपु० २२.६७
शतसंकुला	मपु० ६२.३९६
शत्रुदमनी	पपु० ७.३३४
शर्वरी	मपु० ६२.३९५
शान्ति	पपु० ७.३३१-३३२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शावर	हपु० ४६.९
शीतदा	मपु० ६२.३९८
शीतवेताली	मपु० ४७.५२-५४
शुभप्रदा	मपु० ७.३२७
शेमुषी	पपु १०.१७
श्रीमत्कन्या	मपु० ६२.३९६
षडंगिका	मपु० ६२.३८६
संग्रहणी	मपु० ६२.३९४
संग्रामणी	मपु० ६२.३९३
संवाहिनी	पपु० ७.३२६-३३२
समाकृष्टि	पपु० ७.३२८
सर्वकामानन्दा	पपु० ७.२६४-२६५
सर्वविद्याप्रकर्षिणी	हपु० २२.६२
सर्वविद्याविराजिता	हपु० २२.६४
सर्वार्थसिद्धा	हपु० २२.७०-७३
सर्वाहा	पपु० ७.३३३
सवर्णकारिणी	हपु० २२.७१-७२
सहस्रपर्वा	हपु० २२.६७-६९
सिंहवाहिनी	मपु० ६२.२५-३०
सिद्धार्था	पपु० ७.३३४
सुरध्वंसी	पपु० ७.३२६
सुरेन्द्रजाल	मपु० ७२.११२-११५
सुविधाना	पपु० ७.३२७
स्तम्भिनी	पपु० ५२.६९-७०
हारी	हपु० २२.६३

विद्याधर-जाति-भेद

विद्याधर जातियाँ	सन्दर्भ
गौरिक	हपु० २२.७७
मनु	,, ,,
गान्धार	,, ,,
मानव	,, ,,
कौशिक	हपु० २२.७८
भूमितुण्ड	,, ,,
मूलवीर्यक	हपु० २२.७९
शंकुल	,, ,,
पाण्डुकेय	हपु० २२.८०
काल	,, ,,
श्वपाकज	,, ,,
मातंग	हपु० २२.८१
पार्वतेय	,, ,,
वंशलालय गण	हपु० २२.८२
पांशुमूलिक	हपु० २२.८२
वार्क्षमूल	हपु० २२.८३
आर्य विद्याधर जातियाँ—	
गौरिक	हपु २६.६
गान्धार	हपु० २६.७
मानवपुत्रक	हपु० २६.८
मनुपुत्रक	हपु० २६.९
मूलवीर्य	हपु० २६.१०
अन्तर्भूमिचर	हपु० २६.११
शंकुक	हपु० २६.१२
कौशिक	हपु० २६.१३
मातंग विद्याधर जातियाँ—	
मातंग	हपु० २६.१५
श्मशाननिलय	हपु० २६.१६
पाण्डुक	हपु० २६.१७
कालश्वपाकी	हपु० २६.१८
श्वपाकी	हपु० २६.१९
पार्वतेय	हपु० २६.२०
वंशालय	हपु० २६.२१
वार्क्षमूलिक	हपु० २६.२२

विद्याध : वंश

अकारादि क्रम में इस वंश के निम्न राजाओं के नामोल्लेख मिलते हैं—

क्र० सं०	नाम राजा	सन्दर्भ
१.	अंशुमान्	हपु० २२.१०७-१०८
२.	अंशुमाल	मपु० ५९.२८८-२९१
३.	अर्कचूड	पपु० ५.५३
४.	अर्कतेज	मपु० ६२.४०८
५.	अश्वधर्मा	पपु० ५.४८
६.	अश्वायु	पपु० ५.४८
७.	अश्वध्वज	पपु० ५.४८
८.	आदित्यगति	मपु० ४६.१४५-१४६
९.	इन्दुगति	पपु० २६.१३०, १४९
१०.	इन्द्र	पपु० ५.५०
११.	उडुपालन	पपु० ५.५२
१२.	एकचूड	पपु० ५.५३
१३.	कनकपुंख	मपु० ७४.२२२
१४.	कनकोज्ज्वल	मपु० ७४.२२१-२३२
१५.	कालसंवर	मपु० ७२.४८-६०
१६.	कुरुविन्द	मपु० ५.८९-९५
१७.	चन्द्र	पपु० ५.५०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	नाम राजा	सन्दर्भ
१८.	चन्द्रगति	पपु० २६.१३०-१४९
१९.	चन्द्रचूड	पपु० ५.३२
२०.	चन्द्र ज्योति	पपु० ५४.३४-३५
२१.	चन्द्ररथ	पपु० ५.१७
२२.	चन्द्ररथे	पपु० ५.५०
२३.	चन्द्रवर्धन	पपु० २८.२४७-२५०
२४.	चन्द्रशेखर	पपु० ५.५०
२५.	चन्द्राभ	मपु० ६२.३६-३७
२६.	चन्द्रोदर	पपु० १.६७
२७.	चित्तवेग	हपु० २४.६९-७१
२८.	चित्रचूल	हपु० ३३.१३१-१३३
२९.	जाम्बव	हपु० ४४.४-१७
३०.	त्रिचूड	पपु० ५.५३
३१.	त्रिशिखर	हपु० २५.४१
३२.	दृढ़रथ	पपु० ५.४७
३३.	द्विचूड	पपु० ५.५३
३४.	नमि	पपु० ५.१६
३५.	नील	मपु० ६८.६२१-६२२
३६.	नीलकण्ठ	हपु० २३.७
३७.	नीलवान्	हपु० २३.३-४
३८.	पंचशतग्रीव	हपु० २५.२६
३९.	पद्मनिभ	पपु० ५.४८
४०.	पद्ममाली	पपु० ५.४९
४१.	पद्मरथ	पपु० ५.४९
४२.	पुष्पोत्तर	पपु० ६.७-५२
४३.	पूर्णचन्द्र	पपु० ५.५२
४४.	पूश्चन्द्र	पपु० ५.५२
४५.	प्रभंजन	मपु० ६८.२७५-२७६
४६.	प्रहसित	हपु० २२.१११-११२
४७.	बलीन्द्र	मपु० ६६.१०९-१२५
४८.	बालेन्दु	पपु० ५.५२
४९.	निम्बोष्ठ	पपु० ५.५१
५०.	भूरिचूड	पपु० ५.५३
५१.	मणिग्रीव	पपु० ५.५१
५२.	मणिभासुर	पपु० ५.५१
५३.	मणिस्यन्दन	पपु० ५.५१
५४.	मण्यंक	पपु० ५.५१
५५.	मण्यास्य	पपु० ५.५१
५६.	मन्दरमाली	मपु० ८.९२-९३
५७.	मयूरग्रीव	मपु० ५७.८७-८८
५८.	महेन्द्रविक्रम	मपु० ७१.४१९-४२३
५९.	मृगोद्घर्मा	पपु० ५.४९
६०.	मेघवाहन	मपु० ६३.२९-३०
६१.	मेरु	पपु० ६.१६१
६२.	रक्तोष्ठ	पपु० ५.५२
६३.	रत्नचित्र	पपु० ५.१७
६४.	रत्नमाली	पपु० ५.१६
६५.	रत्नरथ	पपु० ५.१६
६६.	रत्नवज्र	पपु० ५.१६
६७.	लम्बिताधर	पपु० ५.५१
६८.	वज्र	पपु० ५.१८
६९.	वज्रचूड	पपु० ५.५३
७०.	वज्रजंघ	पपु० ५.१७
७१.	वज्रजातु	पपु० ५.१९
७२.	वज्रदंष्ट्र	पपु० ५.१८
७३.	वज्रध्वज	पपु० ५.१८
७४.	वज्रपाणि	पपु० ५.१९
७५.	वज्रबाहु	पपु० ५.१९
७६.	वज्रभृत्	पपु० ५.१८
७७.	वज्रवान्	पपु० ५.१९
७८.	वज्रसंज्ञ	पपु० ५.१९
७९.	वज्रसेन	पपु० ५.१७
८०.	वज्रांक	पपु० ५.१९
८१.	वज्रांगद	मपु० ६३.१४-१५
८२.	वज्राभ	पपु० ५.१९
८३.	वज्रायुध	पपु० ५.१८
८४.	वज्रास्य	पपु० ५.१९
८५.	वह्निजटी	पपु० ५.५४
८६.	वह्नितेज	पपु० ५.५४
८७.	वायुरथ	मपु० ४६.१४७-१४८
८८.	वासव	मपु० ७.२८-३१
८९.	विद्यामन्दिर	पपु० ६.३५७-३५८
९०.	विद्युत्प्रभ	पापु० १७.४३-४५
९१.	विद्युत्वान्	पपु० ५.२०
९२.	विद्युद्दंष्ट्र	पपु० ५.२०
९३.	विद्युद्दृढ	पपु० ५.२५
९४.	विद्युदाभ	पपु० ५.२०
९५.	विद्युद्वेग	पपु० ५.२०
९६.	विद्युन्मुख	पपु० ५.२०
९७.	विराधित	पपु० ९.३७-४४
९८.	वैद्युत	पपु० ५.२०
९९.	व्योमेन्दु	पपु० ५.५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रमांक	नाम राजा	सन्दर्भ
१००.	शशांकास्य	पपु० ५.५०
१०१.	संभिन्न	मपु० ६२.२४१-२६४
१०२.	सहस्रग्रीव	मपु० ६८.७-१२
१०३.	सहस्रार	पपु० ७.१-२
१०४.	सिंहकेतु	पपु० ५.५०
१०५.	सिंहयान	पपु० ५.४९
१०६.	सिंहसप्रभु	पपु० ५.४९
१०७.	सुकुण्डली	मपु० ६२.३६१-३६२
१०८.	सुवक्त्र	पपु० ५.२०
१०९.	सुव्रज	पपु० ५.१८
११०.	हरिचंद	पपु० ५.५२
१११.	हरिवाहन	मपु० ७१.२५२-२५७
११२.	हरिवेग	पपु० ९३.१-५७
११३.	हिरण्याभ	पपु० १५.३७-३८
११४.	हेम	पपु० ६.५६४-५६५

समवसरण-तृतीय कोट-द्वार-नाम

पूर्वी द्वार के आठ नाम

१. विजय	२. विश्रुत	३. कीर्ति	४. विमल
५. उदय	६. विश्वधुक	७. वासवीर्य	८. वर

हपु० ५७.५७

दक्षिण द्वार के आठ नाम

१. वैजयन्त	२. शिव	३. ज्येष्ठ	४. वरिष्ठ
५. अनघ	६. धारण	७. याम्य	८. अप्रतिघ

हपु० ५७.५८

उत्तरी द्वार के आठ नाम

१. अपराजित	२. अर्चाख्य	३. अतुलार्थ	४. अमोघक
५. उदय	६. अक्षय	७. उदक	८. पूर्णकामक

हपु० ५७.६०

पश्चिम द्वार के आठ नाम

१. जयन्त	२. अमितसागर	३. सार	४. सुधाम
५. अक्षोभ्य	६. सुप्रभ	७. वरुण	८. वरद

हपु० ५७.५९

सूर्यवंश / आदित्यवंश

अकारादि क्रम में इस वंश में निम्न राजा हुए हैं—

क्र० सं०	नाम नृप	सन्दर्भ
१.	अतिबल	पपु० ५.५, हपु० १३.८
२.	अतिवीर्य	पपु० ५.७, हपु० १३.१०
३.	अमृतबल	पपु० ५.५, हपु० १३.८
४.	अर्ककीर्ति	पपु० ५.४, हपु० १३.७
५.	अविध्वंस	पपु० ५.८, हपु० १३.११
६.	इन्द्रद्युम्न	पपु० ५.७, हपु० १३.१०
७.	उदितपराक्रम	पपु० ५.७, हपु० १३.१०
८.	गरुडांक	पपु० ५.८, हपु० १३.११
९.	तपन	पपु० ५.६, हपु० १३.९
१०.	तेजस्वी	पपु० ५.६, हपु० १३.९
११.	प्रभु	पपु० ५.८, हपु० १३.११
१२.	प्रभूततेज	पपु० ५.६, हपु० १३.९
१३.	बल	पपु० ५.४, हपु० १३.८
१४.	भद्र	पपु० ५.६, हपु० १३.९
१५.	महाबल	पपु० ५.५, हपु० १३.८
१६.	मृगांक	पपु० ५.८, हपु० १३.११
१७.	महेन्द्रजित्	पपु० ५.७, हपु० १३.१०
१८.	महेन्द्रविक्रम	पपु० ५.७, हपु० १३.१०
१९.	रवितेज	पपु० ५.६, हपु० १३.९
२०.	विभु	पपु० ५.६, हपु० १३.११
२१.	वीतभी	पपु० ५.८, हपु० १३.११
२२.	वृषभध्वज	पपु० ५.८, हपु० १३.११
२३.	शशी	पपु० ५.६, हपु० १३.९
२४.	सागर	पपु० ५.६, हपु० १३.९
२५.	सितयस	पपु० ५.४, हपु० १३.७
२६.	सुबल	पपु० ५.५, हपु० १३.८
२७.	सुभद्र	पपु० ५.६, हपु० १३.९
२८.	सुवीर्य	पपु० ५.७, हपु० १३.१०
२९.	सूर्य	पपु० ५.७, हपु० १३.१०

इन राजाओं के नाम पद्मपुराण और हरिवंशपुराण में समान क्रम में आये हैं। हरिवंशपुराण में बलांक को बल, सितयश को स्मितयस और उदितपराक्रम को उदितप्रभ कहा गया है।

सोमवंश

इसे चन्द्रवंश और ऋषिवंश भी कहा गया है—

इस वंश में चार राजाओं का नामोल्लेख हुआ है। आचार्य रविषेण और आचार्य जिनसेन ने चारों राजाओं के नाम तथा उनका क्रम समान दर्शाया है। राजाओं के नाम अकारादि क्रम में निम्न प्रकार हैं—

क्रमांक	नाम राजा	सन्दर्भ
१.	भुजबली	पपु० ५.१२, हपु० १३.१७
२.	महाबल	पपु० ५.१२, हपु० १३.१६
३.	सुबल	पपु० ५.१२, हपु० १३.१७
४.	सोमयश	पपु० ५.११, हपु० १३.१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरिवंश

इस वंश में अकारादि क्रम में निम्न राजा हुए हैं—

क्र० सं०	नाम राजा	सन्दर्भ
१.	अन्धकवृष्णि	हपु० १८.१०
२.	अपराजित	हपु० १८.२५
३.	अमर	हपु० १७.३३
४.	अभिचन्द्र	हपु० १७.३५
५.	अयोधन	हपु० १७.३१
६.	अरिष्टनेमि	हपु० १७.२९-३१
७.	इन्द्रगिरि	पपु० २१.८
८.	इलावर्धन	पपु० २१.४९
९.	उग्रसेन	हपु० १८.१६
१०.	ऐलेय	हपु० १७.३
११.	कालयवन	हपु० १८.२४
१२.	कुणिम	हपु० १७.२२
१३.	गिरि	हपु० १५.५९
१४.	चरम	हपु० १७.२५-२६
१५.	जनक	पपु० २१.५४
१६.	जरासन्ध	हपु० १८.२२
१७.	दक्ष	पपु० २१.४८, हपु० १७.२
१८.	दीपन	हपु० १८.१९
१९.	दीर्घबाहु	हपु० १८.२
२०.	दृढ़रथ	हपु० १८.१८
२१.	देवगर्भ	हपु० १८.२०
२२.	देवदत्त	हपु० १७.३५
२३.	देवसेन	हपु० १८.१६
२४.	नभसेन	हपु० १७.३४
२५.	नरपति	हपु० १८.७
२६.	नरवर	हपु० १८.१८
२७.	निहतशत्रु	हपु० १८.२१
२८.	पुलोम	पपु० २१.५०, हपु० १७.२४-२५
२९.	बिन्दुसार	हपु० १८.२०
३०.	बृहद्ध्वज	हपु० १७.५९
३१.	बृहद्रथ	हपु० १८.१७
३२.	भद्र	हपु० १७.३५
३३.	भानु	हपु० १८.३
३४.	भीम	हपु० १८.३
३५.	भूतदेव	पपु० २१.९, हपु० १५.५९
३६.	भोजकवृष्णि	हपु० १८.१०
३७.	मत्स्य	हपु० १७.२९
३८.	महागिरि	मपु० ६७.४२०, पपु० २१.८
३९.	महारथ	पपु० २१.५०
४०.	महासेन	हपु० १८.१६
४१.	महीदत्त	हपु० १७.२८
४२.	मुनिसुव्रत	पपु० २१.२४, हपु० १६.१७
४३.	मूल	हपु० १७.३२
४४.	यदु	हपु० १८.६
४५.	यदु	हपु० १८.३
४६.	रत्नमाल	पपु० २१.९
४७.	लब्धाभिमान	हपु० १८.३
४८.	वज्रबाहु	हपु० १८.२
४९.	वप्रभु	हपु० १८.१९
५०.	वसु	हपु० १७.३७
५१.	वसुगिरि	पपु० २१.८, हपु० १५.५९
५२.	वसुदेव	हपु० १८.१४
५३.	वासवकेतु	पपु० २१.५२
५४.	विन्दुसार	हपु० १८.१९-२०
५५.	वीर	हपु० १८.८
५६.	शंख	हपु० १७.३५
५७.	शतधनु	हपु० १८.२०
५८.	शतपति	हपु० १८.२१
५९.	शाल	हपु० १७.३२
६०.	शूर	हपु० १८.८
६१.	श्रीवर्धन	पपु० २१.४९
६२.	श्रीवृक्ष	पपु० २१.४९
६३.	संजय	हपु० १७.२८
६४.	संजयन्त	पपु० २१.५०
६५.	संभूत	पपु० २१.९
६६.	सागरसेन	हपु० १८.१९
६७.	सुखरथ	हपु० १८.१९
६८.	सुबाहु	हपु० १८.२
६९.	सुभानु	हपु० १८.३
७०.	सुमित्र	मपु० ६७.२०-२१, पपु० २१.१०, हपु० १५.६१-६२, १८.१९
७१.	सुवसु	हपु० १८.१७
७२.	सुव्रत	पपु० २१.३, हपु० १६-५५
७३.	सुवीर	हपु० १८.९
७४.	सूर	पापु० ७.१३०-१३१
७५.	सूरसेन	मपु० ७०.९२-९४
७६.	सूर्य	हपु० १७.३२-३३
७७.	हरि	पपु० २१.२-७, हपु० १५.५७-५८
७८.	हरिगिरि	मपु० ७०.७४-७७, पपु० १५.५९
७९.	हरिषेण	हपु० १७.३४
८०.	हिमगिरि	मपु० ६७.४२०, पपु० २१.८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org